CBSE Class 12

Hindi (Core)

Previous Year Question Paper 2020

Series: HMJ/C **Set- 1**

Code no. 2/C/1

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्नपत्र में मुद्रित पृष्ठ **8** हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **12** प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, उत्तर-पुस्तिका में प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.5 बजे किया जाएगा 10.5 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे

हिन्दी (आधार)

HINDI (CORE)

निर्धारित ययय: **3** घण्टे अधिकतम अंक: **80**

सामान्य **निर्देश**

निलनलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका सख्ती से अनुपालन कीजिए

Series : SKS/1

कोड नं.
Code No. 2/1/1

रोल नं.
Roll No. | | | | | | | |

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **8** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **14** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जायेगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

हिन्दी (केन्द्रिक)
HINDI (Core)

निर्धारित समय : 3 घंटे] *[अधिकतम अंक : 100*

Time allowed : 3 hours] *[Maximum marks : 100*

खंड – 'क'

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $1 \times 5 = 5$

खुल कर चलते डर लगता है
बातें करते डर लगता है
        क्योंकि शहर बेहद छोटा है ।
ऊँचे हैं, लेकिन खजूर से
मुँह है इसीलिए कहते हैं,
जहाँ बुराई फूले-पनपे-
वहाँ तटस्थ बने रहते हैं,

नियम और सिद्धान्त बहुत
दंगों से परिभाषित होते हैं –
जो कहने की बात नहीं है,
वही यहाँ दुहराई जाती,
जिनके उजले हाथ नहीं हैं,
उनकी महिमा गाई जाती
यहाँ ज्ञान पर, प्रतिभा पर,
अवसर का अंकुश बहुत कड़ा है –
सब अपने धन्धे में रत हैं
यहाँ न्याय की बात गलत है
क्योंकि शहर बेहद छोटा है ।

बुद्धि यहाँ पानी भरती है,
सीधापन भूखों मरता है –
उसकी बड़ी प्रतिष्ठा है,
जो सारे काम गलत करता है ।
यहाँ मान के नाप-तौल की,
इकाई कंचन है, धन है –
कोई सच के नहीं साथ है
यहाँ भलाई बुरी बात है
क्योंकि शहर बेहद छोटा है ।

(क) कवि शहर को छोटा कहकर किस 'छोटेपन' को अभिव्यक्त करना चाहता है ?

(ख) इस शहर के लोगों की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं ?

(ग) आशय समझाइए :

बुद्धि यहाँ पानी भरती है,
सीधापन भूखों मरता है –

(घ) इस शहर में असामाजिक तत्त्व और धनिक क्या-क्या प्राप्त करते हैं ?

(ङ) 'जिनके उजले हाथ नहीं हैं' – कथन में हाथ उजले न होना से कवि का क्या आशय है ?

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मृत्युंजय और संघमित्र की मित्रता पाटलिपुत्र के जन-जन की जानी बात थी । मृत्युंजय जन-जन द्वारा 'धन्वन्तरि' की उपाधि से विभूषित वैद्य थे और संघमित्र समस्त उपाधियों से विमुक्त 'भिक्षु' । मृत्युंजय चरक और सुश्रुत को समर्पित थे तो संघमित्र बुद्ध के संघ और धर्म को । प्रथम का जीवन की सम्पन्नता और दीर्घायुष्य में विश्वास था तो द्वितीय का जीवन के निराकरण और निर्वाण में । दोनों ही दो विपरीत तटों के समान थे, फिर भी उनके मध्य बहने वाली स्नेह-सरिता उन्हें अभिन्न बनाए रखती थी । यह आश्चर्य है, जीवन के उपासक वैद्यराज को उस निर्वाण के लोभी के बिना चैन ही नहीं था, पर यह परम आश्चर्य था कि समस्त रोगों को मलों की तरह त्यागने में विश्वास रखने वाला भिक्षु भी वैद्यराज के मोह में फँस अपने निर्वाण को कठिन से कठिनतर बना रहा था ।

वैद्यराज अपनी वार्ता में संघमित्र से कहते – निर्वाण (मोक्ष) का अर्थ है आत्मा की मृत्यु पर विजय । संघमित्र हँसकर कहते – देह द्वारा मृत्यु पर विजय मोक्ष नहीं है । देह तो अपने आप में व्याधि है । तुम देह की व्याधियों को दूर करके कष्टों से छुटकारा नहीं दिलाते, बल्कि कष्टों के लिए अधिक सुयोग जुटाते हो । देह व्याधि से मुक्ति तो भगवान की शरण में है । वैद्यराज ने कहा – मैं तो देह को भगवान के समीप जीते जी बने रहने का माध्यम मानता हूँ । पर दृष्टियों का यह विरोध उनकी मित्रता के मार्ग में कभी बाधक नहीं हुआ । दोनों अपने कोमल हास और मोहक स्वर से अपने-अपने विचारों को प्रस्तुत करते रहते ।

(क) मृत्युंजय कौन थे ? उनकी विचारधारा क्या थी ? 2

(ख) जीवन के प्रति संघमित्र की दृष्टि को समझाइए । 2

(ग) लक्ष्य-भिन्नता होते हुए भी दोनों की गहन निकटता का क्या कारण था ? 1

(घ) दोनों को दो विपरीत तट क्यों कहा है ? 2

(ङ) देह के विषय में संघमित्र ने किस बात पर बल दिया है ? 1

(च) देह-व्याधि के निराकरण के बारे में संघमित्र की अवधारणा के विषय में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए । 2

(छ) विचारों की भिन्नता/विपरीतता के होते हुए भी दोनों के संबन्धों की मोहकता और मधुरता क्या संदेश देती है ? 2

(ज) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक सुझाइए । 1

(झ) उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए –
समर्पित **अथवा** विभूषित 1

(ञ) रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए : 1

'प्रथम का जीवन की सम्पन्नता और दीर्घायुष्य में विश्वास था तो द्वितीय का जीवन के निराकरण और निर्वाण में ।'

खंड – 'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए : **5**

(क) मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

(ख) भारत में लोकतंत्र का स्वरूप

(ग) मोबाइल की अपरिहार्यता

(घ) आतंकवाद के बढ़ते चरण

4. दूरदर्शन पर 'वयस्क फिल्में' दिखाने के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रकट करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखिए । **5**

अथवा

सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध नियम के उल्लंघन को लेकर अपने राज्य के पर्यावरण मंत्री को पत्र लिखिए ।

5. (क) निम्नलिखित के उत्तर संक्षेप में दीजिए : **1 × 5 = 5**

(i) खोजपरक पत्रकारिता किसे कहा जाता है ?

(ii) प्रमुख जनसंचार माध्यम कौन से हैं ?

(iii) एंकर-बाइट किसे कहते हैं ?

(iv) समाचार लेखन के छह ककारों के नाम लिखिए ।

(v) विशेष लेखन क्या है ?

(ख) 'प्रान्तीयता का फैलता हुआ विष' **अथवा** 'बड़े शहरों में जीवन की चुनौतियाँ' विषय पर एक आलेख लिखिए । **5**

6. 'भ्रष्टाचार की बढ़ती हुई घटनाएँ' **अथवा** 'कन्या-भ्रूण हत्या की समस्या' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । **5**

खंड – 'ग'

7. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **2 × 4 = 8**

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ ।

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ,
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ ।

(क) कवि ने स्नेह को सुरा क्यों कहा है ? संसार के प्रति उसके नकारात्मक दृष्टिकोण का क्या कारण है ?

(ख) संसार किनको महत्त्व देता है ? कवि को वह महत्त्व क्यों नहीं दिया जाता ?

(ग) 'उद्गार' और 'उपहार' कवि को क्यों प्रिय हैं ?

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए :
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ ।

अथवा

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों में झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी

नहला के छलके-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े ।

(क) 'चाँद का टुकड़ा' कौन है ? इस बिम्ब के प्रयोगगत भावों में क्या विशेषता है ?

(ख) बच्चे को लेकर माँ के किन क्रियाकलापों का चित्रण किया गया है ? उनसे उसके किस भाव की अभिव्यक्ति हो रही है ?

(ग) 'किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को' में अभिव्यक्त बच्चे के चेष्टाजन्य सौन्दर्य की विशेषता को स्पष्ट कीजिए ।

(घ) माँ और बच्चे के स्नेह संबंधों पर टिप्पणी कीजिए ।

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $2 \times 3 = 6$

भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार ।

मन महुँ जात सराहत पुनि-पुनि पवनकुमार ।।

(क) अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण चुनकर लिखिए ।

(ख) कविता के भाषिक सौन्दर्य पर टिप्पणी कीजिए ।

(ग) काव्यांश के भाव-वैशिष्ट्य को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

सबसे तेज बौछारें गईं भादों गया

सवेरा हुआ

खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा

शरद आया पुलों को पार करते हुए

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए

घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से

चमकीले इशारों से बुलाते हुए

पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुण्ड को

(क) शरत्कालीन सुबह की उपमा किससे दी गई है ? क्यों ?

(ख) मानवीकरण अलंकार किस पंक्ति में प्रयुक्त हुआ है ? उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए ।

(ग) शरद ऋतु के आगमन वाले बिम्ब का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए ।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $3 + 3 = 6$

(क) 'कविता के बहाने' के आधार पर कविता के असीमित अस्तित्व को स्पष्ट कीजिए ।

(ख) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के प्रतिपाद्य के विषय में अपनी प्रतिक्रिया प्रस्तुत कीजिए ।

(ग) 'धूत कहौ ________' छंद के आधार पर तुलसीदास के भक्त हृदय की विशेषता पर टिप्पणी कीजिए ।

10. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **2 × 4 = 8**

सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है – नाम है लछिमन अर्थात लक्ष्मी । पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी । वैसे तो जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धिसूचक नाम किसी को बताती नहीं ।

(क) भक्तिन के संदर्भ में हनुमान जी का उल्लेख क्यों हुआ है ?

(ख) भक्तिन के नाम और उसके जीवन में क्या विरोधाभास था ?

(ग) 'जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है' – अपने आस-पास के जगत से उदाहरण देकर प्रस्तुत कथन की पुष्टि कीजिए ।

(घ) लेखिका ने भक्तिन को समझदार क्यों माना है ?

अथवा

उस बल को नाम जो दो; पर वह निश्चय उस तल की वस्तु नहीं है जहाँ पर संसारी वैभव फलता-फूलता है । वह कुछ अपर जाति का तत्व है । लोग स्पिरिचुअल कहते हैं; आत्मिक, धार्मिक, नैतिक कहते हैं । मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों में अंतर देखूँ और प्रतिपादन करूँ । मुझे शब्द से सरोकार नहीं । मैं विद्वान नहीं कि शब्दों पर अटकूँ । लेकिन इतना तो है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है । बल्कि यदि उस बल को सच्चा बल मानकर बात की जाए तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रभावित होती है । निर्बल ही धन की ओर झुकता है । वह अबलता है ।

(क) लेखक किस बल की बात कर रहा है ? वह बल कहाँ फलता-फूलता है ?

(ख) क्या उस बल को आप नैतिक बल कह सकते हैं ? तर्क के आधार पर अपने मत की पुष्टि कीजिए ।

(ग) 'बटोर रखने की स्पृहा' से आप क्या समझते हैं ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ।

(घ) 'निर्बल ही धन की ओर झुकता है' – आशय समझाइए ।

11. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **3 × 4 = 12**

(क) 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण विज्ञान के सत्य पर सहज प्रेम की विजय का चित्र प्रस्तुत करता है – स्पष्ट कीजिए ।

(ख) पहलवान की ढोलक की उठती-गिरती आवाज़ बीमारी से दम तोड़ रहे ग्रामवासियों में संजीवनी का संचार कैसे करती है ? उत्तर दीजिए ।

(ग) 'चार्ली की फिल्में भावनाओं पर टिकी हुई हैं, बुद्धि पर नहीं' – 'चार्ली चैप्लिन यानी हम सब' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

(घ) भीमराव आंबेडकर के मत में दासता की व्यापक परिभाषा क्या है ? समझाइए ।

(ङ) नमक की पुड़िया को लेकर सफिया के मन में क्या द्वन्द्व था ? सफिया के भाई ने नमक ले जाने के लिए मना क्यों कर दिया था ?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) यशोधर बाबू ऐसा क्यों सोचते हैं कि वे भी किशनदा की तरह घर-गृहस्थी का बवाल न पालते तो अच्छा था ? 2

(ख) कैसे कहा जा सकता है कि मुअनजो-दड़ो शहर ताम्रकाल के शहरों में सबसे बड़ा और उत्कृष्ट है ? 3

13. 'मैं जिस चीज़ की भर्त्सना करती हूँ वह है हमारे मूल्यों की प्रथा और ऐसे व्यक्तियों की मैं भर्त्सना करती हूँ जो यह मानने को तैयार ही नहीं होते कि समाज में औरतों का योगदान कितना महान है ।'

ऐन फ्रेंक के उक्त कथन के आलोक में उत्तर दीजिए :

(क) भारतीय नारी-जीवन के संदर्भ में उन जीवन-मूल्यों का उल्लेख कीजिए जो हमें सहज ही प्राप्त होते हैं । 3

(ख) पुरुष समाज नारी के योगदान को महत्त्व क्यों नहीं देता ? अपने विचार लिखिए । 2

14. सिन्धु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व अधिक था – उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए । 5

अथवा

'जूझ' के कथानायक का मन पाठशाला जाने के लिए क्यों तड़पता था ? उसे खेती का काम अच्छा क्यों नहीं लगता था ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए ।

---

1. प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित किया गया है __**क**, **ख** एवं **ग**। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. **खण्ड क** में प्रश्न संख्या **1** और **2** अपठित गद्यांश एवं काव्यांश पर आधारित हैं।
3. **खण्ड ख** में प्रश्न संख्या **3** से **6** तक प्रश्न कार्यालयी हिन्दी और रचनात्यक लेखन पर आधारित हैं।
4. **खण्ड ग** में प्रश्न सख्या **7** से **9** तक प्रश्न पाठ्य पुस्तकों से हैं।
5. यथासंभव प्रत्येक खण्ड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
6. उत्तर संक्षिप्त तथा क्रामिक होने चाहिए और साथ ह्ली दी गई शब्द सीमा का यथासंभव अनुपालन कीजिए।
7. प्रश्न पत्र में समग्र पर कोई विकल्प नहीं है। तथापि, कुछ प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं। ऐसे प्रश्नों में से **केवल एक ही विकल्प** का उत्तर लिखिए।
8. इनके आतिरिक्त, आवश्यकतानुसार, प्रत्येक खण्ड और प्रश्न के साथ यथोचित निर्देश दिए गए हैं।

खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

राष्ट्रीय चेतना की सृजनात्मक अभिव्यक्ति ही उस राष्ट्र की समग्र सांस्कृतिक चेतना कही जाती है। काल के मानदंड पर राष्ट्र-चेतना की सृजनात्मक अभिव्यक्ति से शाश्वत, युगीन और क्षणिक तीन संस्कृति-श्रेणियाँ निर्मित होती हैं। ये संस्कृति-भेद व्यक्तिगत भिन्नता अर्थात् रुचि भिन्नता के कारण बनते हैं पर इनका मूल उद्गम एकात्म है। जीव का आश्रय प्राण है, प्राण का आश्रय देह और देह आवश्यकताओं के अधीन है। दैनिक आवश्यकताओं पर वाणिज्य तंत्र का अधिकार हो जाने से हम शासित और शोषित होने लगते हैं| इसलिए स्वतंत्रता और स्वराज के चितकों ने राज्य और वाणिज्य की व्यवस्था पर गहराई से विचार किया। इसके समानांतर हमें राज्य और बाणिज्य की शक्तियों से होने वाली युगीन और क्षणिक संस्कृति-भेदों पर शाश्वत संस्कृति के आलोक में विचार करना आवश्यक है। संस्कृति की शाश्वत धारा का निर्माण वाल्मीकि, व्यास, नानक, कबीर, सूर, तुलसी, निराला, रवींद्र, भारती, कुरुप्पु,

जैसे महाकवियों एवं मनीषी चिंतकों - आध्यात्मिक पुरुषों से होता है। यह सत्वगुणी भाव धारा है। इन व्यक्तियों की प्राणशक्ति सांसारिक सुख-सुविधाओं के अधीन होकर व्यय नहीं होती, अपितु ये सत्वधर्मी स्थिर स्मृति में रहते हुए अत्यल्प साधनो से राष्ट्र की चेतना को पोषित करते हैं। इनके संकल्प और सृजन से लोक में उच्चतम जीवन आदर्शों की स्थापना होती है और इन पर बाह्य जगत का शासन नहीं चल सकता, किसी राजनीति या आर्थिक व्यवस्था को इनकी अनुरूपता स्वीकार करनी पड़ती है। सर्वोच्च राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाएँ जब शाश्वतता का अनुपालन करती हैं तभी सार्थक हो पाती हैं। अतः समकालीन संस्कृति और क्षणिक संस्कृति (उपभोक्ता या अपसंस्कृति) को भी आत्मघात से बचने के लिए शाश्वत संस्कृति का अनुसरण अपने स्तर में रहते हुए करना उचित होता है। तभी वह राष्ट्र की अभिव्यक्ति बन कर लोक ग्राह्म हो सकती है और मंगलकारी कही जा सकती है।

(क) गयद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1 अंक

उत्तर: अभिव्यक्ति एवं संस्कृति : राष्ट्र के पहलु

(ख) संस्कृति की शाश्वत धारा' से क्या आशय है? वह किसे पोषित करती है? 2 अंक

उत्तर: संस्कृति की शाश्वत धारा से यह आशय है कि राष्ट्र में संस्कृति का निर्माण और उच्चारण कुछ महापुरुषों ने किया था जैसे कि वाल्मीकि, नानक, कबीर इत्यादि।। यह धरा राष्ट्र की चेतना को पोषित करती है।

(ग) संस्कृति भेदों की रचना कैसे होती है ? वे भेद क्या-क्या हैं ? 2 अंक

उत्तर: संस्कृति भेदों की रचना व्यक्तिगत भिन्नता एवं रूचि भिन्नता के कारण होती है। वे भेद दैनिक आवश्यकताओं पर वाणिज्य तंत्र हैं।

(घ) राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं को सार्थकता कैसे मिलती है ? 2 अंक

उत्तर: राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं को सार्थकता, शाश्वतता का अनुपालन करने से मिलती है।

(ड.) युगीन और क्षणिक संस्कृतियों को किससे बचना होता है और कैसे ? 2 अंक

उत्तर: युगीन और क्षणिक संस्कृतियों को आत्मघात से बचना होता है। शाश्वत संस्कृति का अनुसरण अपने स्तर में रहते हुए करने से वह इससे बच सकते हैं।

(च) लेखक ने मनीषी चिंतकों के प्राणशक्ति की क्या विशेषता बताई है ? लोक में इनका प्रभाव कैसे पड़ता है ? 2 अंक

उत्तर: लेखक के अनुसार मनीषी चिंतकों की प्राणशक्ति सांसारिक सुख-सुविधाओं के आधीन होकर व्यय नहीं होती। इनके संकल्प और सृजन से लोक में उच्चतम जीवन आदर्शों की स्थापना होती है और इनपर बाह्य जगत का शासन नहीं चल सकता।

(छ) आध्यात्मिक शब्द में निहित उपसर्ग और प्रत्यय को छाँटकर लिखिए। 1अंक

उत्तर: आध्यात्मिक शब्द का उपसर्ग है अधि और प्रत्यय है इक।

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए
1 X 4 = 4 अंक

सतपुड़ा के घने जंगल

नींद में डूबे हुए-से

ऊँघते अनमने जंगल

धँसो इनमें डर नहीं है,

मौत का यह घर नहीं है,

उतर कर बहते अनेकों,

कल-कथा कहते अनेकों,

नदी निर्झर और नाले,

इन वनों ने गोद पाले,

लाख पंछी सौ हिसन-दल,

चाँद के कितने किरण-दल,

झूमते बन-फूल फलियाँ,

खिल रही अज्ञात कलियाँ,

हरित दूर्वा, रक्त किसलय,

पूत, पावन, पूर्ण रसमय।

(क) "पूत! और पावन विशेषणों का प्रयोग किसके लिए किया गया है ? 1अंक

उत्तर: "पूत" और "पावन" विशेषणों का प्रयोग सतपुड़ा के घने जंगल के लिए किआ गया है।

(ख) कवि को सतपुड़ा के घने जंगल ऊँघते हुए से क्यों लगते हैं ? 1अंक

उत्तर: कवी को सतपुड़ा के जंगल ऊँघते लगते हैक्युकी वह शांत एवं घने हैं।

(ग) "कल-कथा कहते अनेकों? पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। 1अंक

उत्तर: कल-कथा कहते अनेकों के माध्यम से कवी ने जंगल में बहने वाले जल एवं झरनों की प्रतिष्ठा की है।

(घ) इन वनों ने किन्हें पाल रखा है ? 1 अंक

उत्तर: इन वनों ने नदी, निर्झर और नालो को पाला है।

अथवा

बुनी हुई रस्सी को घुमाएँ उल्टा

तो खुल जाती है

और अलग-अलग देखे जा सकते हैं उसके सारे रेशे

मगर कविता को कोई

खोले ऐसा उल्टा

तो साफ नहीं होंगे हमारे अनुभव

इस तरह

क्योंकि अनुभव तो हमें

जितने इसके माध्यम से हुए हैं

उससे ज्यादा हुए हैं दूसरे माध्यमों से

व्यक्त वे जरूर हुए हैं यहाँ

कविता को

बिखरा कर देखने से

सिवा रेशों के क्या दिखता है !

लिखने वाला तो

हर बिखरे अनुभव के रेशे को

समेटकर लिखता है।

क) कविता को रस्सी की तरह उल्टा घुमाना उचित क्यों नहीं है ? **1अंक**

उत्तर: कविता को रस्सी की तरह उल्टा घुमानेसे कवी अपने अनुभव साफ़ तरीके से व्यक्त नहीं कर पाएंगे इसलिए यह उचित नहीं है।

ख) कवि अनुभव के रेशों का क्या करता है ? **1 अंक**

उत्तर: कवी अनुभव के रेशों को कविता के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

(ग) बुनी हुई रस्सी के साथ क्या कर सकते हैं जो कविता के साथ संभव नहीं है ?

1 अंक

उत्तर: बानी हुई रस्सी को उलझने से वह खुल जाट है परन्तु कविता को उलझने से वह व्यक्त नहीं हो पाती।

घ) व्यक्त वे जरूर हुए हैं यहाँ पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। **1 अंक**

उत्तर: व्यक्त वे ज़रूर करते हैं का भाव है कि कवि अपने जीवन के अनुभव कोकविता के द्वारा व्यक्त ज़रूर करते है।

खण्ड ख

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए। **5 अंक**

(क) विद्यालय जाने से पहले का एक घंटा

उत्तर: विद्यालय को हमारे जीवन में दूसरे घर का दर्ज़ा दिए जाता है। विद्यालय बहुत ही एहम किरदार निभाता है मनुष्य के जीवन मे। हर एक बच्चे को विद्यालय जाने के नाम से आलास आती है परन्तु वह एक ऐसी जगह है जहाँ पर हम अपनी ज़िन्दगी के सबसे ज़्यादा अनमोल पल बिताते है। इनमे से सबसे ज़्यादा यादगार पल होता है स्कूल जाने से पहले का समय। विद्यालय जाने से पहले हर बच्चा आलास करता है परन्तु मन में एक उल्लास होता है अपने दोस्तों से मिलनेका एवं शरारते करने का। हर सुबह उठने की आलास माँ की डांट से होती है कभी नहाने के लिए तो कभी खाने के डब्बे किए लिए परन्तु वह एक प्रकार का प्रेम एवं लगाव होता है ताकि हम भूखे ना रह। इसके अलावा हर रोज़ सुबह विद्यालय जाने का समय भी बहुत ही यादगार होता हैकभी साइकिल तो कभी बस, कभी ऑटो तो कभी पैदल सभी दोस्तों के साथ ये कुछ हसीं पल होते है जो हम विद्यालय इ सीखी हुई चीज़ों के अलावा हमेशा अपनी ज़िंदगी में याद रखते हैं।

(ख) घट रही है परिश्रम की आदत

उत्तर: परिश्रम का मनुष्य के लिए वही महत्व है जो उसके लिए खाने और सोने का है। बिना परिश्रम का जीवन व्यर्थ होता है क्योंकि प्रकृति द्वारा दिए गए संसाधनों का उपयोग वही कर सकता है जो परिश्रम पर विश्वास करता है। आज के इस कलयुग में मनुष्य विभिन्न प्रकार के आधुनिक अविष्कारों पर निर्भर हो चूका है जिसकी वजह से वह अपना परिश्रम करने में आलस करता है। जिस मनुष्य को अपने भविष्य को उज्जवल बनाना हो उसे परिश्रम करना अनिवार्य है। आज की महामारी में हर एक व्यक्ति आधुनिक तंत्र पर अपना दिन बीतता है बल्कि छोटे से छोटे बच्चे को भी मोबाइल फ़ोन कि आदत लग चुकी है। कुछ साल पहले भारत अपने परिश्रम और म्हणत के लिए जाना जाता था जहा लोग अपना स्वस्थ और मन दोनों शुद्ध रखने के लिए अनेक परिश्रम करते थे परन्तु अब सब अपने आप को नए से नए आधुनिक तंत्रो में व्यस्त रखते है एवं रूचि रखते है।परिश्रम व्यर्थ हो सकता है पर उससे मिला हुआ सबक़ कभी व्यर्थ और अर्थहीन नहीं हो सकता।

(ग) फिल्मों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं

उत्तर: पुरे विश्व में हिंदी चलचित्र प्रख्यात है अपनी विभिन्न प्रस्तुति के कारण। फिल्मों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं होता हम फिल्मों से बहुत कुछ सीखते है। कुछ फिल्में हमारे जीवन पर बहुत ही प्रभावशाली होती है जिससे हमे जीवन कि सीख मिलती है, दोस्ती का महत्त्व जान्ने मिलता है पारिवारिक रिश्तों का महत्त्व समाज में अत है। कुछ लोगो के जीवन में सिर्फ फिल्में नहीं पर उनके किरदार भी एक बहुत ही एहम भूमिका निभाते हैं। फिल्में

मनोरंजन के लिए बनती ज़रूर है परन्तु जीवन के बहुत सारे पहलू दर्शाती है। हिंदी सिनेमा कि फिल्में विभिन्न लोगों को प्रेरित करती है अपने जीवन में कुछ हासिल करने के लिए एवं उनके जीवन में एक खुशहाली लाती है। सदियों से बनती फिल्में अपना स्तर दिन भर दिन बढ़ा रही है और इस महामारी में भी हमारा मनोरंजन कर रही है और बहुत साड़ी सीख दे रही है।

4. स्वच्छताकर्मियों के प्रति सामाजिक सोच में बदलाव की ज़रूरत को रेखांकित करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को लगभग 80 - 100 शब्दों में पत्र लिखिए। 5 अंक

उत्तर:

सेवा में,

अध्यक्ष,

स्वच्छता विभाग,

पश्चिमी क्षेत्र, नगर निगम,

नई दिल्ली - ००१।

महोदय,

आपसे यह निवेदन है कि स्वच्छताकर्मचारियों के प्रति सामाजिक सोच में बदलाव लाना ज़रूरी हो चूका है। आज के इस आधुनिक एवं बदलते युग में हर क्षेत्र के कर्मचारियों को समानता मिलना बहुत ही ज़रूरी है , ख़ास स्वच्छताकराचारी क्योंकि इस वैश्विक महामारी में भी वह अपने परिवार एवं अपनी जान जोखिम में डाल कर पुरे शहर को स्वच्छ रखते है क्यूंकि स्वच्छता से ही स्वास्थ एवं सेहत अच्छे रहते है। कही बार कुछ व्यक्ति उनको समानता ईवा सन्मान नहीं देती जिससे उनके दिलों को ठेस भी पहुँचती है परन्तु हमे उनकी पीड़ा को समझते हुए उनका आदर एवं सन्मान करना चाहिए।

इस महामारी में यदि हम बाकी लोगों को उनकी मदत करने में शामिल कर सके तो यह बोहोत बड़ी बात होगी। हम उन्हें खाने पिने कि व्यवस्था एवं दवाइयों कि व्यवस्था करने कि कोशिश कर सकते है। इससे देश में स्वच्छताकर्मचारियो के प्रति सामाजिक सोच में बदलाव आएगा।

भवदीय,

दिनांक - १२-०१- २०२१

राम वर्मा,

नगर निवास,

पुरानी दिल्ली - ०३

अथवा

सड़क दुर्घटनाओं में हो रही बढ़ोतरी पर चिता जताते हुए यातायात के नियमों को कठोरता से लागू करने हेतु, नगर के पुलिस अधीक्षक को लगभग 80 - 100 शब्दों में पत्र लिखिए। 5 अंक

उत्तर:

अध्यक्ष,

पुलिस विभाग,

पश्चिमी क्षेत्र, नगर निगम,

मुंबई - ००५।

महोदय,

आज की इस भाग-दौड़ भरी ज़िन्दगी में हर आदमी अपना काम एक झटके में करना चाहता है इसी वजह से लोग आजकल सड़क पर भी बिना देखे उतावलेपन में गाडी एवं साइकिल चलते है। पुछले एक हफ्ते में हमारे इलाके में तक़रीबन १० लोगों की जान खतरे में जा चुकी है, और २ बच्चो की मौत भी हो चुकी है इसी कारणवश।

मेरी आपसे यह विनंती है कि आप सड़क के नियमों को कठोर करें जिससे दुर्घटनाएं कम् हो और लोगों का चलना और गाडी चलना सुरक्षित हो जाये।

भवदीय,

दिनांक - १२-०१- २०२१

भवन वर्मा,

नगर निवास,

मुंबई - ०३

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्त अधिकतम 15 -20 शब्दों में लिखिए: 1X 5 = 5 अंक

(क) 'खोजपरक पत्रकारिता किसे कहते हैं ? 1 अंक

उत्तर: खोजपरक पत्रकारिता का मतलब है गहराई से छान-बीन करना और ऐसे तथ्यों और सूचनाओं को सामने लाने की कोशिश करना जिन्हे छुपाने का प्रयास किया गया हो।

(ख) रेडियो की भाषा कैसी होनी चाहिए ? 1 अंक

उत्तर: रेडियो की भाषा अति सरल एवं स्पष्ट होनी चाहिए।

(ग) पीत पत्रकारिता किसे कहते हैं ? 1 अंक

उत्तर: पीत पत्रकारिता में सनसनी फैलाई जाती है जिससे लोग उस समाचार को पढ़ने के लिए आकर्षित हो।

(घ) संपादकीय की दो विशेषताएँ लिखिए। 1 अंक

उत्तर: संपादक की प्रत्येक बात बेबाकिय होती है और संपादकीय लेख की शैली सजीव होती है।

(ड) एंकर बाइट क्या है ? 1 अंक

उत्तर: किसी घटना की सुचना देने और उसके दृश्य दिखने के साथ उससे जुड़े व्यक्तियों का कथन दिखने को एंकर बाइट कहते हैं।

6. उल्टा पिरामिड शैली एवं समाचार के छह ककारों को ध्यान में रखते हुए किसी खेल प्रतियोगिता का समाचार लगभग 80 - 100 शब्दों में लिखिए। 5 अंक

उत्तर:

नोएडा, प्रमुख सवाददाता

२३ जून २०२१ को भारत एवं इंग्लैंड के बीच एक घमासान क्रिकेट की प्रत्योगिता की योजना की गयी थी एंगलंद मे। दोनों ही देशों के बल्लेबाज़ और गेंदबाज़ ज़ोरों शोरों से तैयारी करके आ चुके थे।

इस महामारी और बारिश के बीच भी दर्शकों का जोश और उल्लास बना रहा। सभी दर्शक अपनी चाहने वाली टीम का हौसला बढ़ा रहे थे। कल की इस प्रत्योगिता में रोहित शर्मा कि बल्लेबाज़ी और जसप्रीत बुमराह की गेंबाज़ी ने चार चाँद लगा दिए। इंग्लैंड के टीम में सैम कुर्रान ने भी बहुत हु उम्दा प्रदर्शन किया।

भारत एवं इंग्लैंड की इस प्रत्योगिता में भारत ने अद्‌भुत प्रदर्शन के साथ जीत का झंडा लहराया। इसी के साथ रोहित शर्मा बने मन ऑफ़ दी मैच और जीते कई इनाम।

अथवा

ज्ञान का संसार - विद्यालय का पुस्तकालय विषय पर लगभग 80 - 100 शब्दों में एक फ़ीचर लिखिए।

उत्तर: शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जिस प्रकार मनुष्य को संयमित और संतुलित भोजन कोई आवश्यकता है उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य के लिए ज्ञानार्जन परमावश्यक है। मस्तिष्क को क्रियाशील और गतिशील रखने के लिए शुद्ध ज्ञान एवं नवीन विचारों की आवश्यकता होती है।पुस्तकालय वास्तव में ज्ञान का असीम भंडार है। विद्यालय में पुस्तकालय का बड़ा महत्व है। पुस्तकालय में ही बालक मानवीय ज्ञान तथा अनुभवों की निधि प्राप्त करता है या नवीन ज्ञान की खोज का केंद्र होता है। छात्र यहां आकर पाठ्य पुस्तकों के अलावा अन्य संगठित पुस्तकें पढ़कर अपने ज्ञान भंडार में वृद्धि करते हैं। वह यहां आकर विविध पुस्तकों के अध्ययन में रुचि जागृत करते हैं और साहित्य अध्ययन के शुभ अवसर प्राप्त करते हैं पुस्तकालय छात्रों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत करने में बड़े सहायक होते हैं। पुस्तक के बालकों के सामने ज्ञान तथा विचारों का एक भंडार प्रस्तुत करती है। जिससे उसके दृष्टिकोण का विकास होता है। पुस्तकालय बालकों के लिए मनोरंजन तमक पुस्तकों की व्यवस्था करता है। इससे वे अपने विश्राम के समय का सदुपयोग करना सीखते हैं। पुस्तकालय बालकों में मौन वाचन की आदत का विकास करता है।

अथवा

कहानी की रचना में कथानक का महत्त्व लगभग 80 - 100 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: “कथानक" और "कथा" दोनों ही शब्द संस्कृत "कथ" धातु से उत्पन्न हैं। कथानक कहानी का पहला और सर्वप्रथम तत्व है। संस्कृत साहित्यशास्त्र में "कथा' शब्द का प्रयोग

एक निश्चित काव्यरूप के अर्थ में किया जाता रहा है किंतु कथा शब्द का सामान्य अर्थ है- "वह जो कहा जाए'।कहानी में शुरुआत से अंत तक जो कहा जाता है उसे कथानक कहते हैं। कहानी-कथानक को " भाषा , स्वर के उतार–चढ़ाव , शारीरिक–गति , हाव–भाव आदि के उपयोग से श्रोताओं के लिए किसी कहानी की घटनाओं और चित्रों को सजीव बनाने की कला के रूप " में परिभाषित किया जा सकता है। कहानी में घटने वाली घटनाएं ही उसका कथानक होती है। इसी तीन भागो में विभाजित किआ जा सकता है - आरम्भ , मध्य और अंत।

खण्ड ग

7. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 - 40 शब्दों में लिखिए। 2X3=6 अंक

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास

पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास

जब वे दौड़ते हैं बेसुध

छतों को भी नरम बनाते हुए

दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए

जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं

डाल की तरह लचीले वेग से अकसर

छतों के ख़तरनाक किनारों तक -

उस समय गिरने से बचाता है उन्हें

सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत

पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं महज एक धागे के सहारे।

(क) कपास शब्द किसका प्रतीक है ? उसे जन्म से ही साथ लाना क्या संकेत कर रहा है ? 2 अंक

उत्तर: कपास शब्द कोमलता का प्रतीक है। कपास जन्म से लाना यह संकेत करता है की बच्चे शारीरिक एवं मानसिक प्रकार से निस्वार्थ, कोमल एवं निश्छल होते हैं।

(ख) छतों को भी नरम बनाने का क्या भाव है ? 2 अंक

उत्तर: जब बच्चे अपनी पैरों से छत पर अलग अलग दिशाओं में दौड़ते हैं उनके छोटे छोटे पैरों से वह छत को नरम बनाते हैं।

(ग) दिशाओं को मृदंगों की तरह बजाने से कवि का क्या आशय है ? 2 अंक

उत्तर: जब बच्चे अपनी पैरों से छत पर अलग अलग दिशाओं में दौड़ते हैं उनके पैरों की आवाज़ छत पर गूंजती हैं। इस प्रकार उनके पैर मृदंग की तरह बजते हैं।

अथवा

हो जाए न पथ में रात कहीं,

मंजिल भी तो है दूर नहीं

यह सोच थका दिन का पंथी भी

जल्दी-जल्दी चलता है !

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

बचे प्रत्याशा में होंगे,

नीड़ों से आँक रहे होंगे -

यह ध्यान परों में चिड़ियों के

भरता कितनी चंचलता है !

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

मुझसे मिलने को कौन विकल ?

मैं होऊँ किसके हित चंचल ?

यह प्रश्न शिथिल करता पद को,

भरता उर में विह्वलता है !

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

(क) पंथी क्या सोच रहा है और क्यों ? **2 अंक**

उत्तर: पंथी सोच रहा हैं की कही सफर तय करते करते रात न हो जाए। पंथी ऐसा सोचता हैं ताकि दिन ढल न जाए क्यूकी उसकी मंज़िल पास ही है परन्तु दिन जल्दी ढलता है।

(ख) चिड़िया चंचल क्यों हो रही है ? **2 अंक**

उत्तर: चिड़ियों के परों में चंचलता इसलिए आ जाती है, क्योंकि उन्हें अपने बच्चों से मिलने की आतुरता होती है। वे जल्दी से जल्दी अपने बच्चों को भोजन, स्नेह व सुरक्षा देना चाहती हैं।

(ग) कवि को किस बात की चिंता है और क्यों ? **2 अंक**

उत्तर: कवि सही हरिवंशराय बच्चन को इस बात की चिंता हैं कि उनकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं है जिससे कवि के कदम शिथिल पद रहे है और मन में व्याकुलता हो रही है।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 - 40 शब्दों में लिखिए: **2X2=4 अंक**

प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर।

आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना मँह बीर रस।।

(क) काव्यांश का भाव-सौंदर्य लिखिए। **2 अंक**

उत्तर: प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित 'लक्ष्मण-मूच्छ और राम का विलाप' प्रसंग से उद्धृत है। यह प्रसंग रामचरितमानस के लंका कांड से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं। इस प्रसंग में लक्ष्मण-मूच्छा पर राम के विलाप व हनुमान के वापस आने का वर्णन किया गया है।। भक्तों पर कृपा करने वाले भगवान ने मनुष्य की दशा दिखाई है। प्रभु का विलाप सुनकर वानरों के समूह व्याकुल हो गए। इतने में हनुमान जी आ गए। ऐसा लगा जैसे करुण रस में वीर रस प्रकट हो गया हो।

(ख) काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए। **2 अंक**

उत्तर: इस काव्यांश में कई अलंकारों का प्रयोग हुआ है। रूप से इसमें उपमा, अनुप्रास, अतिश्योक्ति, वीरता, रूपक, आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। इन अलंकारों के से काव्यांश और भी सुन्दर हुआ है। वह अधिक प्रभावी बन गई है।

अथवा

बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर

कि जैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

मल दी हो किसी ने

(क) काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। 2 अंक

उत्तर: प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने प्रातःकालीन सुंदरता को बड़े आकर्षक रूप में चित्रित किया है। कवि ने कोष्ठकों का प्रयोग किया है। कोष्ठक अतिरिक्त जानकारी प्रदान करते हैं; जैसे कविता में कोष्ठक में दी गई जानकारी (अभी गीला पड़ा है) से आसमान की नमी व ताजगी की जानकारी मिलती है।

(ख) काव्यांश की शिल्प संबंधी कोई दो विशेषताएँ लिखिए। 2 अंक

उत्तर: काव्यांश की शिल्प सम्बन्धी दो विशेषताएं यह हैं की कवि ने सरल भाषा के प्रयोग किया है और इसमें कवि ने सूर्य को बहुत ही विस्तार से संजय है।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं क्लो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 - 70 शब्दों में लिखिए 3X2=6 अंक

(क) कैमरे में बंद अपाहिज कविता कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती है, कैसे ? 2 अंक

उत्तर: 'रघुवीर सहाय' द्वारा रचित कविता "कैमरे में बंद अपाहिज" कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती है, क्योंकि इस कविता के माध्यम से कवि ने यह कहने का प्रयास किया है कि दूरदर्शन पर किसी अपाहिज व्यक्ति के जो साक्षात्कार लिए जाते हैं, उनका उद्देश्य केवल संवेदनशीलता का दिखावा करना है और यह साक्षात्कार दूरदर्शन के व्यवसायिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए दिखाए जाते हैं। किसी अपाहिज व्यक्ति के

साक्षात्कार में प्रश्नकर्ता अपाहिज के मन की पीड़ा को कुरेदता है, और उसकी विसंगति पर चर्चा करता है।

(ख) छोटा मेरा खेत" कविता में कवि के और किसान के कार्य में समानता किस प्रकार प्रदर्शित की गई है ? **2 अंक**

उत्तर: इस कविता में कवि ने खेती के रूप में कवि-कर्म के हर चरण को बाँधने की कोशिश की है। कवि ने कल्पना के माध्यम से रचना-कर्म को व्यक्त किया है। कवि ने खेती व कविता की तुलना सूक्ष्म ढंग से की है। खेत की फसल कट जाती है, परंतु वह हर वर्ष फिर उग आती है। कविता का रस भी चिरकाल तक आनंद देता है। यह सृजन-कर्म की शाश्वतता को दर्शाता है। किसान अपने खेत में बीज बोता है, वह बीज अंकुरित होकर पौधा बनता है तथा पकने पर उससे फल मिलता है जिससे लोगों की भूख मिटती है। इसी तरह कवि ने कागज को अपना खेत माना है। इस खेत में भावों की आँधी से कोई बीज बोया जाता है। फिर वह कल्पना के सहारे विकसित होता है।

(ग) 'सहर्ष स्वीकारा है! कविता में कवि ने जीवन की हर स्थिति को सहर्ष क्यों स्वीकार किया है ? **2 अंक**

उत्तर: गजानन माधव मुक्तिबोध द्वारा रचित कविता में कवि अपने जीवन के समस्त खट्टे-मीठे अनुभवों, कोमल-तीखी अनुभूतियों और सुख-दुख की स्थितियों को इसलिए स्वीकारा है क्योंकि वह अपने किसी भी क्षण को अपने प्रिय से न केवल जुड़ा हुआ अनुभव करता है, अपितु हर स्थिति को उसी की देन मानता है।

10. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए **2X3=6 अंक**

यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी "जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता' के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है और चूँकि जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है। श्रम-विभाजन निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में

अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा की एक और विशेषता यह है कि यह श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।

(क) लेखक किस बात को विडंबना मानता है और क्यों ? **2 अंक**

उत्तर: लेखक इस बात को विडम्बना मानता हैं की आज की इस युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। खक जातिवाद के पोषकों के तर्क को सही नहीं मानता। वह कहता है कि जाति-प्रथा केवल श्रम-विभाजन ही नहीं करती। यह श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

(ख) भारत की जाति-प्रथा विश्व से अलग कैसे है ? **2 अंक**

उत्तर: भारत की जाति-प्रथा विश्व से अलग हैं क्योंकि की जाति-प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन तो करती ही है, साथ ही वह इन वर्गों को एक-दूसरे से ऊँचा-नीचा भी घोषित करती है।

(ग) जातिवाद का समर्थन किन कुतर्कों द्वारा किया जाता है ? **2 अंक**

उत्तर: जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी कराती है। सभ्य समाज में श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन अस्वाभाविक है।जाति प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। इसमें मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा निजी क्षमता का विचार किए बिना किसी दूसरे के द्वारा उसके लिए पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। यह जन्म पर आधारित होता है।

अथवा

उस बल को नाम जो दो; पर निश्चय वह उस तल की वस्तु नहीं है जहाँ पर संसारी वैभव फलता-फूलता है। वह कुछ अपर जाति का तत्त्व है। लोग स्पिरिचुअल कहते हैं; आत्मिक, धार्मिक, नैतिक कहते हैं। मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों में अंतर देखूँ और प्रतिपादन करूँ। मुझे शब्द से सरोकार नहीं। मैं विद्वान नहीं कि शब्दों पर अटकूँ। लेकिन इतना तो है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। बल्कि यदि उसी बल को सच्चा बल मानकर बात की जाए तो कहना

होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। निर्बल ही धन की ओर झुकता है। वह अबलता है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है।

(क) गयद्यांश में वर्णित बल क्या है ? व्यक्ति कब निर्बल हो जाता है ?

उत्तर: गद्यांश के अनुसार बल कुछ अपर जाती का तत्व है। संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति निर्बल हो जाता है I

(ख) लेखक ने "अपर जाति का तत्त्व किसे कहा है और क्यों ?

उत्तर: लेखक ने अपर जाती का तत्व निश्चय को बोला है क्योंकी वह उस ताल की वस्तु नहीं है और जहाँ पर संसारी वैभव फलता फूलता है।

(ग) लेखक ने क्यों कहा है कि - वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है।'

उत्तर: लेखक की अनुसार मनुष्य चेतन है तथा धन जड़। मनुष्य धन की चाह में उसके वश में हो जाता है। इसी कारण जड़ की चेतन पर विजय हो जाती है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 4+4+2=10 अंक

(क) भक्तिन अपना नाम क्यों बदलना चाहती थी ? लेखिका ने इस संदर्भ में क्या कहा है ?(लगभग 80 से 100 शब्दों में)

उत्तर: 'लक्ष्मी' का जीवन दुःखों से भरा था। जब वह केवल 36 वर्ष की थी, तभी वह विधवा हो गई थी। पति की मृत्यु के उपरांत उसके ससुराल वाले उसकी संपत्ति हड़पना चाहते थे, इसलिए वे उसकी दूसरी शादी के लिए ज़ोर देने लगे, परंतु लक्ष्मी ने ऐसा करने से स्पष्ट इनकार कर दिया। उसने अपने बड़े दामाद को घरजमाई बनाकर रखा, परंतु वह भी शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। अपने घर में धन का अभाव रहने के कारण वह एक बार लगान भी समय पर न चुका पाई, जिसके कारण उसे धूप में खड़े रहने की सज़ा मिली। इस अपमान को सहन न कर सकने के कारण वह अपना गाँव छोड़कर शहर आ गई और लेखिका के यहाँ सेविका बन गई। उसकी वेशभूषा देखकर लेखिका ने उसका नाम

‘भक्तिन’ रख दिया। इस प्रकार, ‘लक्ष्मी’ के ‘भक्तिन’ बनने की प्रक्रिया यथार्थ में अत्यंत मर्मस्पर्शी है।

अथवा

हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी बहुत आवश्यक हो जाती है। शिरीष के फूल पाठ के आधार पर समझाइए।

उत्तर: परवर्ती कवि ये समझते रहे कि शिरीष के फूलों में सब कुछ कोमल है अर्थात् वह तो कोमलता का आगार हैं लेकिन विवेदी जी कहते हैं कि शिरीष के फूलों में कोमलता तो होती है लेकिन उनका व्यवहार (फल) बहुत कठोर होता है। अर्थात् वह हृदय से तो कोमल है किंतु व्यवहार से कठोर है। इसलिए हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार का कठोर होना अनिवार्य हो जाता है।

(ख) काले मेघा पानी दे पाठ में भारतीय समाज की किस दुविधा तथा आडंबर को व्यक्त किया गया है ? इस पर अपने विचार भी लिखिए। (लगभग 80 -100 शब्दों में)

उत्तर: काले मेघा पानी दे पाठ में लेखक ने लोक-मान्यताओं के पीछे छिपे उस तर्क को उभारा है, जिसके अनुसार ऐसी मान्यता है कि जब तक हम किसी को कुछ देंगे नहीं, तब तक उससे लेने का हकदार कैसे बन सकते हैं। उदाहरणतया, यदि हम इंद्र देवता को पानी नहीं देंगे तो वे हमें पानी क्यों देंगे। इंदर सेना पर बाल्टी भरकर पानी फेंकना ऐसी ही लोकमान्यता का प्रमाण है। हमारे जीवन के अनुभव से अंधविश्वास के पीछे छिपा तर्क यह है कि यदि काली बिल्ली रास्ता काट जाती है तो अंधविश्वासी लोग कहते हैं कि रुक जाओ, बाद में जाना पर मेरा तर्क यह है कि इसमें कोई सत्यता नहीं है। यह समय को बरबाद करने के अलावा कुछ नहीं है।

(ग) ज़मीन पर खींची गई रेखाएँ उनके अंतर्मम तक नहीं पहुँच पाई हैं, कैसे ? नमक पाठ के आधार पर लिखिए। (लगभग 80 - 100 शब्दों में)

उत्तर: ‘नमक’ कहानी भारत-पाक विभाजन के बाद सरहद के दोनों तरफ के विस्थापित पुनर्वासित जनों के दिलों को टटोलती एक मार्मिक कहानी है। दिलों को टटोलने की इस कोशिश में अपने-पराये, देस-परदेस की कई प्रचलित धारणाओं पर सवाल खड़े किए गए हैं।कस्टम अधिकारी नमक ले जाने की इजाजत देते हुए देहली को अपना वतन बताता है। इसी तरह भारतीय कस्टम अधिकारी सुनील दास गुप्ता का कहना है, ”मेरा वतन ढाका है। राष्ट्र-राज्यों की नयी सीमा-रेखाएँ खींची जा चुकी हैं और मजहबी आधार पर लोग इन रेखाओं के इधर-उधर अपनी जगहें मुकर्रर कर चुके हैं, इसके बावजूद जमीन पर खींची

गई रेखाएँ उनके अंतर्मन तक नहीं पहुँच पाई हैं।नमक जैसी छोटी-सी चीज का सफ़र पहचान के इस मार्मिक पहलू को परत-दर-परत उघाड़ देता है। यह पहलू जब तक सरहद के आर-पार जीवित है, तब तक यह उम्मीद की जा सकती है कि राजनीतिक सरहदें एक दिन बेमानी हो जाएँगी।

12. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 - 100 शब्दों में लिखिए :
4X3=12 अंक

(क) स्पष्ट कीजिए कि जूझ के कथानायक का जीवन संघर्ष अभावग्रस्त समाज में जी रहे व्यक्तियों के लिए प्रेरणास्रोत भी है। 3 अंक

उत्तर: आज के इस युग में जूझ की कथानायक से बहुत कुछ सिखने की आवश्यकता है जो जीवनभर स्वयं से और अपनी परिस्थितियों से जूझता रहता है। यह शीर्षक कथानायक के संघर्षशील वृत्ति का परिचय देता है। हमारे कथानायक में संघर्ष की भावना हैपरन्तु आज की पीढ़ी मेहनत एवं परिश्रम से ज़्यादा आधुनिक तंत्र पर निर्भर है। कथानायक संघर्ष करने के लिए मजबूर है लेकिन उसका यह संघर्ष ही उसे एक दिन पढ़ा-लिखा इंसान बना देता है। इस संघर्ष में भी उसने आत्मविश्वास बनाए रखा है अपितु आज की पीढ़ी बहुत ही जल्दी उदासी का शिकार बन जाती हैऔर अपघात करने की कोशिश करती है। यद्यपि परिस्थितियाँ उसके विरुद्ध होती हैं तथापि वह अपने आत्मविश्वास के बल इस प्रकार की परिस्थितियों से जूझने में सफल हो जाता है। वास्तव में कथानक की संघर्षशीलता ही उसकी चारित्रिक विशेषता है।

(ख) "अतीत में दबे पाँव" पाठ के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता के नगर स्थापत्य की विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए। 3 अंक

उत्तर: सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व ज्यादा था। वास्तुकला या नगर-नियोजन ही नहीं, धातु और पत्थर की। मूर्तियाँ, मृद्-भांडे, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश-विन्यास, आभूषण और सबसे ऊपर सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप सिंधु सभ्यता को तकनीक-सिद्ध से ज्यादा कला-सिद्ध जाहिर करता है। सिंधु घाटी सभ्यता में नदी, कुएँ, स्नानागार व बेजोड़ निकासी व्यवस्था के अनुसार लेखक इसे 'जल-संस्कृति' की संज्ञा देता है। मैं लेखक की बात से पूर्णत: सहमत हूँ। सिंधु-सभ्यता को जल-संस्कृति कहने के समर्थन में निम्नलिखित कारण हैं – यह सभ्यता नदी के किनारे बसी है। मुअनजो-दड़ो के निकट सिंधु नदी बहती है। यहाँ पीने के पानी के लिए लगभग सात सौ कुएँ मिले हैं। ये कुएँ पानी

की बहुतायत सिद्ध करते हैं। मकानों में अलग-अलग स्नानागार बने हुए हैं। मुहरों पर उत्कीर्ण पशु शेर, हाथी या गैडा जल-प्रदेशों में ही पाए जाते हैं। यह है सिंधु घाटी की विशेषताओं का उल्लेख।

(ग) "ऐन फ्रैंक की डायरी एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ होने के साथ-साथ भावनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति भी है।" टिप्पणी कीजिए। 3 अंक

उत्तर: ऐन फ्रैंक ने न केवल यहूदियों और नाजियों के बारे में लिखा बल्कि अपने बारे में भी लिखा। उसका निजी जीवन इस डायरी में प्रस्तुत हुआ है। ऐन को जीवन में कोई ऐसा मित्र नहीं मिला जो उसे समझ पाता। उसकी तकलीफों को जान पाती। उसकी शारीरिक जरूरतों को पूरा करता। पीटर का प्यार केवल दोस्ती तक रहा उसने भी कभी ऐन को समझने की जरूरत नहीं समझी या फिर वह ऐन की भावनाओं को समझ ही नहीं पाया। एक जवान लड़की अपनी इच्छाओं और अपेक्षाओं के साथ अकेली जीती रही। इसलिए उसने इस पीड़ा का वर्णन अपनी डायरी के कुछ पृष्ठों में किया है और कहा है कि काश ! कोई मेरी भावनाओं को जान पाता।

(घ) "जीवन के आधुनिक तौर तरीकों' के प्रति यशोधर पंत और उनकी पत्नी के दृष्टिकोण में क्या अंतर है ? सोदाहरण समझाइए। 3 अंक

उत्तर: 'सिल्वर वैडिंग' का प्रधान पात्र यशोधर बाबू है। वह रहता तो वर्तमान में हैं, परंतु जीता अतीत में है। वह अतीत को आदर्श मानता है। यशोधर को पुरानी जीवन शैली, विचार आदि अच्छे लगते हैं, वे उसका स्वप्न हैं। परंतु वर्तमान जीवन में वे अप्रासंगिक हो गए हैं। कहानी में यशोधर का परिवार नए ज़माने की सोच का है। वे प्रगति के नए आयाम छूना चाहते हैं। उनका रहन-सहन, जीने का तरीका, मूल्यबोध, संयुक्त परिवार के कटु अनुभव, सामूहिकता का अभाव आदि सब नए ज़माने की देन है। यशोधर बाबू की पत्नी अपने मूल संस्कारों से किसी भी तरह आधुनिक नहीं है, परंतु बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी ने उन्हें भी मॉडर्न बना डाला है। जिस समय उनकी शादी हुई थी यशोधर बाबू के साथ गाँव से आए ताऊजी और उनके दो विवाहित बेटे भी रहा करते थे।

(ङ) "अतीत में दबे पाँ३" पाठ के आधार पर विश्लेषण कीजिए कि 'हड़प्पा कालीन संस्कृति मुख्यत: कृषि प्रधान थी। 3 अंक

उत्तर: मुअनजोदड़ो और हड़प्पा प्राचीन भारत के ही नहीं, दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर माने जाते हैं। ये सिंधु घाटी सभ्यता के परवर्ती यानी परिपक्व दौर के शहर हैं। खुदाई में और शहर भी मिले हैं। अनजोदड़ो के बारे में धारणा है कि अपने दौर में वह

घाटी की सभ्यता का केंद्र रहा होगा। यानी एक तरह की राजधानी। माना जाता है यह शहर दो सौ हेक्टर क्षेत्र में फैला था। आबादी कोई पचासी हजार थी। जाहिर है, पाँच हजार साल पहले यह आज के 'महानगर की परिभाषा को भी लांघता होगा।

CBSE Class 12

Hindi

Previous Year Question Paper 2017

Series: GBM/1 **Code no. 2/1/1**

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 8 हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जायेगा। 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि क उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

हिन्दी (केन्द्रिक)

HINDI (CORE)

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतमअंक: 100**

खंड- 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: **15 Marks**

'आधुनिक भारतीय भाषाएँ' सुनकर आप इस भ्रम में न पड़ें कि ये सभी 'आज' की देन

हैं। ये सभी भाषाएँ अति प्राचीन हैं। अनेक तो सीधे संस्कृत या वैदिक भाषा से जुड़ती हैं। वे इस अर्थ में आधुनिक हैं कि समय के साथ चलकर अतीत से वर्तमान तक पहुँची हैं और जीवंत और विकासशील बनी हुई हैं। उनके आधुनिक होने का एक कारण यह भी है कि आधुनिक विचारों को वहन करने में वे कभी पीछे नहीं रहीं। इनका साहित्य समय की कसौटी पर खरा उतरा है और ये सभी आधुनिक भारत की प्राणवायु हैं।

किसी भी भाषा का पहला काम होता है दो व्यक्तियों या दो समूहों के बीच संपर्क स्थापित करने का माध्यम बनना। यह मानव समूहों के बीच सेतु का काम करती है। इसे चाहे प्रकृति की देन मानिए चाहे ईश्वर की, भाषा से बड़ी कोई देन नहीं है। विभिन्न क्षेत्रों में मानव की समस्त उपलब्धियाँ मूलतः भाषा की देन हैं।

अब जहाँ तक हिंदी का प्रश्न है, उसमें उपर्युक्त विशेषताएँ तो हैं ही, साथ ही सबसे निराली विशेषता है उसकी नमनीयता। इसमें स्वाभिमान है, अहंकार नहीं। हिंदी हर परिस्थिति में अपने आपको उपयोगी बनाए रखना जानती है। यह ज्ञान और शास्त्र की भाषा भी है और लोक की भी, उत्पादक की भी और उपभोक्ता की भी। इसीलिए यह स्वीकार्य भी है।

(क) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। **1 Mark**

उत्तर: गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक 'हिंदी भाषा का स्वरूप एवं विशेषताएँ' हो सकता है।

(ख) 'आधुनिक विशेषण से हम किस भ्रम में पड़ सकते हैं ? उसे "भ्रम" क्यों कहा गया है? **2 Marks**

उत्तर: 'आधुनिक' विशेषण से हम इस भ्रम में पड़ सकते हैं कि आधुनिक का संबंध केवल वर्तमान से है, इसीलिए अधिकांश लोगों को यह भ्रम उत्पन्न हो जाता है कि आधुनिक भाषाओं का संबंध आज की भाषा से है, जबकि ये भाषाएँ अति प्राचीन हैं।

(ग) आज की भारतीय भाषाएँ किस अर्थ में आधुनिक हैं ? दो कारणों का उल्लेख कीजिए। **2 Marks**

उत्तर: आज की भारतीय भाषाएँ इस अर्थ में आधुनिक हैं कि

i) भारतीय भाषाएँ की आधुनिक विचारों को वहन करने में हमेशा प्रमुख भूमिका में रही हैं।

ii) भारतीय भाषाएँ समय के साथ चलकर अतीत से वर्तमान तक पहुँची हैं और जीवंत और विकासशील बनी हुई हैं।

(घ) कोई भाषा किनके बीच पुल बनाने का काम करती है? कैसे? **2 Marks**

उत्तर: कोई भी भाषा मानव समूहों के बीच सेतु (पुल) बनाने का काम करती है। भाषा दो व्यक्तियों या दो समूहों के बीच संपर्क स्थापित करने को माध्यम है। एक व्यक्ति अपने विचारों को दूसरे व्यक्ति तक भाषा के माध्यम से पहुंचता है।

(ङ) हिंदी की निराली विशेषता क्या है? उसका आशय समझाइए। **2 Marks**

उत्तर: हिंदी की निराली विशेषता उसकी नमनीयता है। नमनीयता से तात्पर्य है कि हिंदी भाषा का स्तर अत्यंत व्यापक एवं विस्तृत होने के पश्चात् भी इसमें अहंकार की भावना नहीं है। यह स्वयं को हर परिस्थिति में उपयोगी बनाए रखना जानती है।

(च) हिंदी की स्वीकार्यता के दो कारण स्पष्ट कीजिए। **2 Marks**

उत्तर: हिंदी की स्वीकार्यता के दो कारण हैं -

(i) हिंदी ज्ञान और शास्त्र की भाषा ही नहीं बल्कि लोक की भाषा भी है। आज हिंदी भाषी की संख्या विश्व में बढ़ती जा रही है। हिंदी ज्ञान के छेत्र में भी काफी आगे निकल चुकी है।

(ii) हिंदी उत्पादक और उपभोक्ता की भाषा भी है। आज किसी फुटकर व्यापारी की दुकान पर रोज़मर्रा की वस्तु खरीदने के लिए जाया जाता है, तो वहाँ भी हिंदी भाषा का ही प्रयोग किया जाता है। अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग वहाँ उचित नहीं बैठता।

(छ) 'नमनीयता' से लेखक का क्या आशय है? **2 Marks**

उत्तर: नमनीयता' से लेखक को आशय यह है कि हिंदी आज जन-जन की भाषा है। देश से लेकर विदेश तक यह अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। यह ज्ञान, शास्त्र, बाज़ार आदि सभी क्षेत्रों में स्वीकार्यता अर्जित कर चुकी है; परंतु इसके बावजूद भी हिंदी में अहंकार की भावना उत्पन्न नहीं हो सकी। यह एक विनम्रता के साथ स्वीकृत भाषा है।

(ज) आशय स्पष्ट कीजिए : 'भाषा से बड़ी कोई देन नहीं है।' **2 Marks**

उत्तर: 'भाषा से बड़ी कोई देन नहीं है' से लेखक का आशय यह है कि भाषा अभिव्यक्ति का

माध्यम है। एक व्यक्ति इसी भाषा के माध्यम से दूसरे व्यक्ति तक अपने विचारों को पहुँचाता है। यदि भाषा न होती तो संसार का विकास संभव नहीं था। इसीलिए भाषा को चाहे प्रकृति की देन मानिए, चाहे ईश्वर की, भाषा से बड़ी कोई देन नहीं है।

2.निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: **1×5 = 5 Marks**

आज खोले वक्ष

उन्नत शीश, रक्तिम नेत्र

तुझको दे रहा हूँ, ले, चुनौती

गगनभेदी घोष में

दृढ़ बाहुदंडों को उठाए !

क्योंकि मैंने आज पाया है स्वयं का ज्ञान

क्योंकि मैं पहचान पाया हूँ कि मैं हूँ मुक्त, बंधनहीन

और तू है मात्र भ्रम, मन-जात, मिथ्या वंचना,

इसलिए इस ज्ञान के आलोक के पल में

मिल गया है आज मुझको सत्य का आभास

और ओ मेरी नियति !

में छोड़कर पूजा

-क्योंकि पूजा है पराजय का विनत स्वीकार -

बाँधकर मुट्ठी तुझे ललकारता हूँ,

सुन रही है तू ?

मैं खड़ा तुझको यहाँ ललकारता हूँ!

(क) कवि की चुनौती देने की मुद्रा कैसी है ?

उत्तर: कवि रौद्र रूप में चुनौती दे रहा है। उसने अपना छाती खोल दिया है, सिर उठा लिया है तथा क्रोध से आँखें रक्तनुमा हो चुकी हैं।

(ख) चुनौती किसे दी जा रही है ? उसे कवि क्या मानता है ?

उत्तर: कवि द्वारा स्वयं की नियति को चुनौती दी जा रही है। वह नियति को भ्रम, मिथ्या, वंचना आदि मानता है।

(ग) कवि को मिला ज्ञान और उसकी पहचान क्या है ?

उत्तर: कवि को आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई है तथा सत्य का आभास हुआ है। इसी कारण वह आज स्वयं को नियति के बंधन से स्वतंत्र महसूस कर रहा है।

(घ) कवि पूजा को क्या मानता है और क्यों ?

उत्तर: कवि पूजा को पराजय की स्वीकृति मानता है, क्योंकि हम कर्म की अपेक्षा पूजा-पाठ पर अधिक भरोसा करते हैं और धीरे-धीरे आशावादी बन जाते हैं।

(ङ) काव्यांश का केंद्रीय भाव लिखिए।

उत्तर: काव्यांश का केंद्रीय भाव यह है कि हमें नियति के भरोसे नहीं रहना चाहिए, बल्कि कर्म पर ज़्यादा ध्यान देना चाहिए। कर्म करने से ही फल मिलता है, जबकि नियति के भरोसे रहने वालों की पराजय होते हैं।

खंड- 'ख'

3.निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: **5 Marks**

(क) भारतीय संस्कृति

उत्तर: भारत पूरे विश्व में अपनी संस्कृति एवं प्रधानता के लिए जाना जाता है। भारतीय संस्कृति को विश्व की सबसे पर्चीन संस्कृतियों में से माना जाता है। विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है। भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व सभ्य संवाद, अच्छे शिष्टाचार, धार्मिक संस्कार, मूल्य और

मान्यताएं आदि हैं। भारत एक ऐसा देश है जहां विभिन्न धर्मों के लोग साथ रहते हैं। वे अपनी अपनी संस्कृति तथा परंपरा शांतिपूर्ण तरीके से पालन करतें हैं। यहां अलग अलग धर्मों के अलग अलग रीति रिवाज़ होने के बाद भी सब एकता के साथ, साथ रहते हैं। अनेकता में एकता ही भारतीय सस्कृती की मूल पहचान है। भारत के कुछ मुख्य धर्म हैं - हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई और जैन।

यहां अलग अलग धर्मो के लोग अपने अपने त्योहारों और रीति रिवाज़ों को अपनी अपनी तरह से मनातें हैं। पर यहां कुछ राष्ट्रीय उत्सवों को एकसाथ मनाया जाता है जैसे स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती आदि।

भारत एक ऐसा देख है जहां अलग - अलग हिस्सों में अलग - अलग भाषाएं बोली जाति हैं हालांकि भारत की राजभाषा हिंदी है।

भारत अपने विभिन्न सांस्कृतिक नृत्यों के लिए भी प्रसिद्ध है, जैसे कि - भरत नाट्यम, कथक कली, कुच्ची पुड़ी, आदि। यहां के कुछ छेत्रों के लोक नृत्य हैं: भाँगड़ा - पंजाब; गरबा - गुजरात; बिहू - असम, आदि।

(ख) महिला सशक्तीकरण

उत्तर: हमारे भारतीय समाज में नारी को बचपन से ही कुछ संस्कार दिए जाते है। और वो संस्कार उसे सहज कर रखना होता है। जैसे धीरे बोलों, किसी के सामने ज्यादा नहीं हसना, गंभीर बनो यानी समझदार बन कर रहना। उस बच्ची का बचपन न जाने किस अँधेरे कमरे में गुम हो जाता है। हमारा पुरूष प्रधान देश क्यु नहीं समझता कि नारी प्रकृति का अनमोल उपहार है। उसके मन में कुछ कोमल संवेदनाएँ होती है। जो उसे खुबसूरत बनाती है। वो एक ममता का रूप है और इस ममता रूपी नारी को हर रूप में हमेशा छल कपट ही मिला है। परन्तु आज की नारी इन सब बातो को छोड़कर काफी आगे निकल आई है।

आज नारी में आधुनिक बनने की होड़ लगी है। नारी के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है, क्षेत्र में आगे बड़ रही है, बदल रही है और ये परिवर्तन सभी को देखने को मिल रहा है। पहले नारी का जीवन घर की चार दीवारों में ही बीत जाता था। चूल्हा-चौका करके और संतानोत्पति तक ही उसका जीवन सिमित था। विशेष रूप से नारी का एक ही कर्त्तव्य था। घर संभालना, उसे घर की इज्जत मान कर घर में ही परदे के पीछे रखा जाता था। उसे माँ के रूप में ,पत्नी के रूप में, पुत्री के रूप में।

आज नारी का कदम घर से बाहर की और बड़ गया है। पहले नारी के वस्त्रो पर ध्यान दिया जाता था नारी केवल साड़ी ही पहन सकती थी। मतलब अपने आप को उसे पूरी तरह से ढक कर रखना नारी का कर्य था। आज की नारी बहुत आगे निकल गई है उसकी वेशभूषा काफी बदल गयी है, वो अब अपनी मनचाही वेशभूषा के लिए स्वतंत्र है। परन्तु ज़्याद लोग और नारी स्यम अपनी आधुनिक वेशभूषा को और स्वच्छंद विचरण को ही नारी का आधुनिक होना मान रहे है। परन्तु स्वतंत्रता का अपनाना आधुनिकता नहीं है। नारी को शक्ति का प्रतिक माना जाता रहा है। और उसने अदम्य साहस का परिचय भी दिया है।

इसके अतिरिक्त धर्य एवं त्याग का और नारी को पृथ्वी की संज्ञा दी गयी है। झांसी लक्ष्मीबाई और पन्ना धाय जैसी नारियों ने इतिहास में नारी शक्ति और त्याग को सिद्ध किया है। वास्तव में दमन का विरोध और प्रगतिशील नवीन विचारों का अपनाना ही नारी का आधुनिक होना है और ऐसा प्रत्येक युग में करती रही है। नारी ने अगर कुछ कहा या करा तो उसमें किसी न किसी रूप में ऊँगली उठा दी गयी।

आज भारतीय नारी चार दीवारी से निकल कर अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गयी है। शिक्षित होकर विभिन्न क्षेत्रों में वो अच्छा प्रदर्शन कर रही है। नारी को भोग्या मानने वाले पुरुष प्रधान समाज में नारी ने प्रमाणित कर दिया की वो भी इस पुरुष प्रधान देश में अपना लोहा रख सकती है। आज उसकी प्रतिभा और दृश्टिकोण पुरुष से पीछे नहीं है। साहित्य ,चिकित्सा ,विज्ञान , अनेक ऐसे क्षेत्र है। जिसमें नारी ने अपनी प्रतिभा प्रदर्शीत की है। केवल पुरुष का क्षेत्र मानने वाले पुलिस विभाग में मुस्तैदी से अपना कार्य कर रही है। और पुरुष से पीछे नहीं है। कल्पना चावला, बचेंद्री पाल ,ऐसी कई स्त्रियाँ है अगर जिनका नाम गिनने लगे तो शायद पूरी किताब पढ़ ले उनके बारे में या लिखने बैठे तो कॉपी के पन्ने भी कम पड़ जायेंगे आज नारी अंतरिक्ष में जाने के साथ ही हिमालय की दुर्गम चोटी पर भी चढ़ रही है। और ऐसा कोई क्षेत्र नहीं छोड़ रही है जहाँ वो अपनी विजय का झंडा ना फेरा रही हो।

नारी में विधमान उसकी प्रतिभा और प्रगति समाज के लिए आवश्यक है। परन्तु आधुनिकता के नाम पर नारी को समाज को दूषित करने का कोई अधिकार नहीं है। क्यूंकि नारी का दर्जा माँ, बेटी, और किसी की पत्नी और साथ ही माँ दुर्गा, सरस्वती के रूप में पूजी जाती है। इसलिए उसको भी इनका सम्मान रखते हुए आगे बढ़ना हे ना की रिश्तों को तोड़कर परीवार को अलग करके आधुनिकता को अपनाना है वैसे भी नारी का दर्जा समाज को सम्मान दिलाने के लिए है समाज को परिवार की तरह जोड़कर रखने के लिए है, ना की तोड़ने के लिए।

(ग) मेरा प्रिय लेखक

उत्तर: हिंदी साहित्य सर्वशेष्ठ लेखकों का भंडार है। मुझे रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाएं विशेष रूप से पसंद है। उनकी कहानियों और उपन्यास को पढ़कर मुझे भरपूर रस और प्रेरणा मिलती है।उनकी अनेक रचनाओं का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया जा चुका है। उनको गुरुदेव के नाम से भी जाना जाता है।उनकी काव्यरचना गीतांजलि के लिये उन्हे सन् 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार की प्राप्ति हुई। उनकी अधिकांश शिक्षा हर पे ही हुई थी ,वे वकालत करने इंगलैंड गए थे परंतु एक ही वर्ष में वे वापस भारत लौट आए और उन्होंने शांतिपूर्ण गृह के वातावरण में बंगला सीखी और कम समय में ही प्रसिद्धि प्राप्त कर ली।

बचपन से ही रवींद्रनाथ की विलक्षण प्रतिभा का आभास लोगों को होने लगा था। उन्होंने सिर्फ 8 साल की उम्र में पहली कविता लिखी और केवल 16 साल की उम्र में उनकी पहली लघुकथा प्रकाशित हुई थी।टैगोर दुनिया के संभवत: एकमात्र ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाओं को तीन देशों ने अपना राष्ट्रगान बनाया।

टैगोर ने बांग्ला भाषा में 'जन गण मन' लिखा था जो बाद में भारत का राष्ट्रगान बना ,इसके अलावा बांग्लादेश के राष्ट्रगान 'आमान सोनार बंगला' भी उन्हीं की कविता से ली गई. 'आमान सोनार बंगला' गीत 1905 में लिखा गया था, तीसरा देश श्रीलंका जिसके राष्ट्रगान में भी उनकी अमिट छाप दिखती है।

- हम होंगे कामयाब,हम होंगे कामयाब एक दिन

इनकी कविताएं प्रेरणा के स्त्रोत है , साथ ही उत्साह और हिम्मत भी प्रदान करती है , जैसे की दिए गए पंक्ति को ही देख लीजिए ,यह हमे कठिनायो से लड़ने का साहस देती है और परिश्रम करते रहने का महत्व सिखाती है , हौसला कायम रखने की अहम मिसाल देती है। रवींद्रनाथ टैगोर के अनमोल विचार जीने की नई राह दिखाते हैं जैसे की :-

- हम महानता के सबसे करीब तब होते हैं जब हम विनम्रता में महान होते हैं।

- मिटटी के बंधन से मुक्ति पेड़ के लिए आजादी नहीं है।

मुझे कविताओं लिखना और पढ़ना दोनो ही प्रिय है, और रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाओं से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

(घ) कश्मीर समस्या

उत्तर: भारत का सबसे उत्तरी राज्य जम्मू कश्मीर पाच हिस्सो मे बटा है जिसमे जम्मु , लघाख, कश्मीर घाटी, गल्लगीर और बटलीस्तान है। इनमे से गिलगाट और बटलीस्तान पालिस्तान के कब्जे मे है। जम्मू और लद्दाख को लेकर कोई विवाद नही है। जो भी विवाद है, कश्मीर घाटी को लेकर है। कश्मीर विवाद एक अन्तर्राष्ट्रीप विवाद है। जिसे हम कश्मीर समस्या के नाम से जानते हैं।

कश्मीर जो कभी स्वर्ग था, आज नरक से बदतर हो गया है वहाँ कोई नहीं जानता कि आतंकवादी की गोली कब उसका कलेजा चाक कर देगी या बम उसके चिथड़े उड़ा देगा। हालत सुधरने के दावे तो बराबर किए जाते हैं लेकिन हकीकत यही है। आम नागरिकों और सैनिकों की हत्या तो वहाँ आम बात हो गई है। कश्मीर में कुछ अलगावादी तत्व हैं जो पूरे कश्मीर को भारत से अलग करना चाहते हैं। उनका कहना है कि कश्मीर हमारा है। कट्टरपंथी लोग मजहब के नाम पर इसको हवा देते हैं और पाकिस्तानी सेना इनकी सहायता करती है और ये लोग भारत की सीमा में आकर तोड़-फोड़, आगजनी और हत्या करते हैं। इन लोगों के उत्पात के चलते आज कश्मीर के लाखों हिन्दू बेघर होकर, झुग्गी-झोपड़ियों में नर्कीय जिन्दगी बसर करते या फिर राहत शिविरों में किसी तरह जिन्दगी जी रहे हैं।सरकार ने धारा 370 को खत्म कर दिया है, इसके साथ ही धारा 35 – ए का भी समापन हो गया है | इसका अर्थ है, भारत का कोई भी नागरिक अब जम्मू – कश्मीर में बसने में समर्थ होगा, वहां जमीन या सम्पत्ति खरीद सकेगा, और भारत के अन्य सभी राज्यों की तरह यहां भी सम्पत्ति पर उत्तराधिकार के कानून लागू होंगे |दरअसल संकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठकर ही कश्मीर समस्या का समाधान हो सकता है और इसमें भारत और पाकिस्तान के राजनीतिक नेतत्व के साथ-साथ अन्य जन-प्रतिनिधियों, पत्रकारों, बुद्धि जीवियों, कलाकारों एवं गैर-सरकारी जन-संगठनों को इस दिशा में अपनी विशेष भूमिका अदा करने की आवश्यकता है।

4. सहकारी बैंक की एक शाखा अपने ग्राम में खोलने के लिए अनुरोध करते हुए जिला मुख्यालय में स्थित बैंक के प्रधान प्रबंधक को पत्र लिखिए। बैंक खोलने का औचित्य भी लिखिए। **5 Marks**

उत्तर: सेवा में,

प्रधान प्रबंधक, सरकारी बैंक

उत्तर पूर्वी जिला

बुराड़ी गाँव, दिल्ली

दिनांक: 24 मई 2020

विषय: अपने ग्राम में एक सहकारी बैंक की शाखा खोलने हेतु।

महोदय,

निवेदन है कि मैं जिला बुराड़ी गाँव, दिल्ली का निवासी हूँ। हमारे गाँव में सहकारी बैंक की एक भी शाखा उपलब्ध नहीं है, जिस कारण पूरे गाँव वासियों को बैंक संबंधी कार्यों में समस्या होती है। यहां कुछ निजी बैंक क्षेत्र में अवश्य खुले हुए हैं, परंतु उन बैंकों में खाता खुलवाने के लिए खाताधारक को ₹10,000 की राशि जमा करवानी अनिवार्य है। इतनी राशि जमा करा कर खाता खुलवाना हमारे गाँव वासियों के लिए एक समस्या बन गई है। गाँव से काफी दूरी पर एक सहकारी बैंक की शाखा अवश्य है, पर वहाँ तक जाने में काफी समय का दुरुपयोग हो जाता है। अतः महोदय मेरा निवेदन है कि हमारे गाँव में भी एक सहकारी बैंक की शाखा खोलने का कष्ट करें। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद!

अ.ब.स

अथवा

अपने क्षेत्र के सांसद को पत्र लिखकर अनुरोध कीजिए कि आपके ग्राम में एक पुस्तकालय की स्थापना अपनी सांसद निधि से करवाएँ। इसका औचित्य भी समझाइए

सेवा में,

सांसद महोदय,

बरैली,

उत्तर प्रदेश,

विषय: पुस्तकालय स्थापना हेतु पत्र।

महोदय,

मैं राहुल उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूं। मैं चाहता हूं कि आप मेरे क्षेत्र में पुस्तकालय की स्थापना करें। यहां पुस्तके बहुत ही मुश्किल से मिलती हैं और अगर मिलती भी है तो महंगी होती हैं। मेरी शिक्षा कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, मैं आपसे विनती करता हूं कि आप एक पुस्तकालय की स्थापना करे ताकि यहां रहने वाले युवा अपनी शिक्षा पूरी कर पाए।

मुझे आशा है कि आप मेरी इस विनती को स्वीकार करेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

राहुल।

5. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए: **1×5 = 5 Marks**

(क) संपादकीय का महत्त्व लिखिए।

उत्तर: संपादकीय का महत्व यह है कि एक अच्छा संपादकीय किसी विषय या मुद्दे पर संपादक द्वारा प्रस्तुत उसके विचारों की सजग एवं ईमानदार प्रस्तुति है। यह पाठक वर्ग को समसामयिकी मुद्दों से जोड़े रखता है और ज्ञान विस्तार में सहायक होता है।

(ख) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की लोकप्रियता के दो कारण लिखिए।

उत्तर: इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की लोकप्रियता के दो कारण हैं:

i) इसके माध्यम से हम जनसामान्य को मनोरंजन एवं ज्ञान उपलब्ध करा सकते हैं।

ii) इसके माध्यम से हम दूर-दराज में हो रही घटना को प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं और उस पर अपनी प्रतिक्रिया भी तुरंत दे सकते हैं।

(ग) समाचारों के स्रोत से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर: जिन स्रोतों के आधार पर सूचना लोगों तक पहुँचाई जाती है, उन्हें समाचारों के स्रोत कहा जाता है। समाचार पत्र विभिन्न न्यूज़ एजेंसी; जैसे-पी.टी.आई., यूनीवार्ता आदि से समाचार प्राप्त करते हैं।

(घ) स्टिंग ऑपरेशन के दो लाभ लिखिए।

उत्तर: स्टिंग ऑपरेशन के दो लाभ कुछ इस प्रकार हैं:

I. जब सत्य को सामने लाने का कोई उपाय नहीं बचता तब अंतिम रणनीति के रूप में स्टिग ऑपरेशन को प्रयुक्त किया जाता है।

II. भ्रष्टाचार जैसी व्यापक समस्या को सामने लाने में इसकी भूमिका स्पष्ट है। कई मंत्रियों को इस ऑपरेशन के कारण त्याग-पत्र देना पड़ा है।

(ङ) दसंपादन के सिद्धांतों में 'तथ्यपरकता' (एक्यूरेसी) का क्या आशय है ?

उत्तर: संपादन के सिद्धांतों में तथ्यपरकता उसका एक महत्त्वपूर्ण गुण है। तथ्यपरकता से तात्पर्य सत्यनिष्ठा से है अर्थात् संपादक को संपादकीय लेखन के समय किसी भी विषय को तथ्यों के साथ उजागर करना चाहिए।

6. 'स्वच्छ भारत अभियान' अथवा 'ज़रूरी है जल की बचत' विषय पर एक आलेख लिखिए। **5 Marks**

उत्तर:

'स्वच्छ भारत अभियान'

स्वच्छ भारत अभियान भारतीय सरकार द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को शुरू किया गया। सरकार की इस कोशिश की सराहना की जानी चाहिए। देश को स्वच्छ रखना हमारा नैतिक कर्तव्य है।

हम इस कर्तव्य का पालन नहीं करते थे।

हम केवल घर की सफाई कर कर घर के बाहर जो कचरा पड़ा रहता था उसको कभी साफ़ नहीं किया। हमे पूरे देश को अपना घर समझना चाहिए।

2 अक्टूबर 2014 को माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने अभियान की शुरुआत की गई। अभियान की शुरुआत गांधी जयंती के दिन की गई। गांधी जी का देश को स्वच्छ रखना हमेशा से सपना था परंतु लोगों ने स्वच्छता को कभी अपनी जिम्मेदारी नहीं मानी। इसी कारण इस अभियान की शुरुआत की गई।

इस अभियान का उद्देश्य जागरूकता पैदा करना था।

<u>ज़रूरी है जल की बचत</u>

कहा जाता है कि जल ही जीवन है। जल हमारे जीवन के लिए बहुत ज़रूरी है। जल के बिना मनुष्य का जीवन संभव नहीं है। जल मानव के जीवन में मूल आवश्यक है। यूँ तो पृथ्वी का 71% भाग जल से भरा है, परन्तु इनमें से अधिकतर हिस्से का पानी खारा है और पीने योग्य नहीं है। मनुष्य के लिए पृथ्वी पर जितना पेयजल विद्यमान है, उसमें से अधिकतर अब प्रदूषित हो चुका है, इसके कारण ही पेयजल की काफ़ी समस्या उत्पन्न हो गई है।

इस जल समस्या के कई कारण हैं। पृथ्वी पर जल के अनेक स्रोत हैं; जैसे- झील, नदियाँ, पोखर, झरने, भूमिगत जल, वर्षा आदि। पिछले कुछ वर्षों में सिंचाई एवं अन्य कार्यों के लिए भूमिगत जल के अधिक प्रयोग के कारण भूमिगत जल के स्तर में गिरावट आई है। औद्योगीकरण के कारण नदियों का जल भी प्रदूषित होता जा रहा है। इन्हीं कारणों से पेयजल की समस्या उत्पन्न हो गई है।

जल को समस्या के कारण ही आज जल की बचत करना बेहद ज़रूरी हो गया है। जल की समस्या को दूर करने के लिए जल के अनावश्यक इस्तेमाल से बचना होगा। जल के उपयोग को ज़रूरी कम करने एवं उसके संरक्षण के लिए जनसंख्या पर रोक भी आवश्यक है।

वृक्ष पर्यावरण में जल के संरक्षण में एवं वर्षा लाने में सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त वृक्ष तापमान की वृध्दि को रोकते हैं और वायुमंडल में नमी बनाए रखते हैं। अत: जल की समस्या के समाधान के लिए वृक्षों बहुत आवश्यक हैं और हमे वृक्ष की कटाई रोक कर वृक्षारोपण करने की आवश्यकता है। वृक्षारोपण से पर्यावरण का प्रदूषण भी कम किया जा सकता है।

7. "मुझे जन्म देने से पहले ही मत मारो माँ !" अथवा "जाति प्रथा : एक अभिशाप' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए। **5 Marks**

उत्तर:

मुझे जन्म देने से पहले मत मारो मां

भारत में आज भी जन्म लेने से पहले ही कन्या को कोख में मार दिया जाता हैं। उस नन्ही कन्या को पता भी नहीं होता उसके साथ क्या होने वाला है। क्योंकि उसको तो जन्म से पहले ही मार दिया जाता हैं।

आज भी भारत में कन्या भूण हत्या की जाती हैं। नन्ही–नन्ही बेटियों को मां की कोख में ही मार दिया जाता है यह बहुत दुखद बात है कि भारत जैसे देश में ऐसा किया जाता है भारत में स्त्री को देवी का रूप माना जाता है परंतु उसी देवी को जन्म लेने से पहले ही मार देना बहुत ही शर्मनाक बात है। लोगों को बेटा चाहिए होता है अल्ट्रासाउंड स्कैन जैसे लैंगिक परीक्षण जांच के जरिए जन्म लेने से पहले बच्चे का लिंग जानने की कोशिश की जाती है। लिंग पता चलने के पश्चात अगर वह बेटी होती है तो उसे मां की कोख में ही मारने की कोशिश की जाती है।

एक तरफ भारत में बेटी को देवी का दर्जा दिया जाता है और उसी बेटी की हत्या कर दी जाती है क्योंकि उन्हें बेटा चाहिए होता है।

भारतीय समाज प्राचीन और आदर्श संस्कृति का दावा करता है परंतु यह कैसी प्राचीन और आदर्श संस्कृति हैं जहां कन्या भ्रूण हत्या की जाती हैं।भारतीय समाज में महिलाएं गौरव का प्रतीक होती

<u>जाति प्रथा : एक अभिशाप</u>

कहा जाता है कि 'जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान!' कहने का तात्पर्य यह है कि हर एक व्यक्ति की पहचान उसके ज्ञान से होनी चाहिए, ना कि किसी अन्य आधार पर, किंतु जाति आधारित व्यवस्था ने आज एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से अलग बना दिया है। कुछ ऐसी कुप्रथाओं एवं कुरीतियों ने जन्म लिया, जो समाज द्वारा बनाई गई रेखाओं के कारण पनपीं और उनको ना मानना समाजों के इन तथाकथित कर्णधारों ने दंडनीय अपराध घोषित कर दिया। सामाजिक बहिष्कार का दंड-विधान और समाज से बहिष्कृत होने का भय किसी हिंदू को मुस्लिम से या किसी मुस्लिम को हिंदू से या फिर एक जाति के व्यक्ति को किसी अन्य जाति के व्यक्तियों से प्रेम या विवाह करने से रोकता है।

संभवतः मानव समाजों में स्तरीकरण का विकास वंशागत और सामाजिक दोनों कारणों से हुआ है। वंशागत स्तरीकरण जातिगत स्तरीकरण है और सामाजिक स्तरीकरण गैर-जातिगत स्तरीकरण वंशागत स्तरीकरण से दो भिन्न समाजों के विलय का बोध हो जाता है। जब एक जाति समूह दूसरे जातीय समूह या समूहों पर स्थायी रूप से न्यूनाधिक प्रबल हो जाता है, तो वंशागत स्तरीकरण निर्मित हो जाता है। भारत में हिंदू जाति व्यवस्था इसी प्रकार के स्तरीकरण का उदाहरण है।

अनेक सामाजिक अधिनियमों ने भी जाति व्यवस्था की स्थिरता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। स्वयं जाती व्यवस्था से उत्पन्न दोषों ने भी लोगों में इसकी उपयोगिता के बारे में संदेह उत्पन्न कर दिया है। जातिगत भेद भाव को दूर करके ही एक स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। इसलिए यह व्यवस्था की गई कि राज्य किसी भी नागरिक के प्रति वंश, जाती अथवा धर्म के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करेगा।

जाति प्रथा के संबंध में पंडित जवाहरलाल नेहरू की बातें आज भी प्रसिद्ध हैं- ”भारत में जाति-पाँति प्राचीनकाल में चाहे कितनी भी उपयोगी रही हों, पर आज सभी प्रकार की उन्नति के रास्ते में भारी बाधा और रुकावट बन गई है। आज इसे जड़ से उखाड़कर अपनी सामाजिक रचना को नया रूप देने की आवश्यकता है।"

खंड - 'ग'

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2×4 = 8 Marks

तिरती है समीर-सागर पर

अस्थिर सुख पर दुख की छाया

जग के दग्ध हृदय पर

निर्दय विप्लव की प्लावित माया

यह तेरी रण-तरी

भरी आकांक्षाओं से,

घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर

उर में पृथ्वी के, आशाओं से

नवजीवन की, ऊँचाकर सिर,

ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल !

(क) कवि ने निर्दय किसे कहा है और क्यों ?

उत्तर: कवि ने बादल को निर्दय कहा है, क्योंकि कवि को बादल ऐसे दुःख दग्ध संसार के वायुमंडल में मँडराते, उमड़ते-घुमड़ते हुए निर्दयी माया के समान दिखाई देते हैं। कवि का आशय यह है कि बादल दुःख, अभाव व शोषण से ग्रस्त संसार के ऊपर जल बरसाकर शोषण के विरुद्ध क्रांति का उद्घोषणा करने वाले क्रांतिदूत की भूमिका में हैं, जो संपूर्ण शोषक वर्ग का बड़ी निर्ममता से विनाश करेगा।

(ख) सोए हुए अंकुरों के जग जाने का कारण क्या है ? उनमें आशाओं का संचार कैसे हुआ ?

उत्तर: कवि के अनुसार बादल दुःख का नाश करने वाले वीर योद्धा की भाँति हैं, जिसके युद्ध वाद्य की गर्जना से पृथ्वी के भीतर सोए अंकुर अपनी निद्रा तोड़कर जागने को तत्पर हो गए हैं। वे नवजीवन प्राप्ति की आशा में सिर उठाकर बादल के बरसने की प्रतीक्षा करने लगे हैं।

(ग) बादल को 'ऐ विप्लव के बादल' क्यों कहा गया है ?

उत्तर: बादल को 'ए विप्लव के बादल' इसलिए कहा गया है, क्योंकि यहाँ बादल को क्रांतिकारी रूप में वर्णित किया गया है। कवि का उद्देश्य शोषण के विरुद्ध आह्वान करना है। इसीलिए बादल यहाँ केवल जल बरसाने वाले प्राकृतिक तत्त्व नहीं हैं, बल्कि वे संसार में व्याप्त अमानुषिक कृत्यों एवं अत्याचार आदि को अपने प्रलयंकारी रूप से नष्ट कर नवजीवन की चेतना प्रसारित करने के रूप में हैं।

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए :

तिरती है समीर-सागर पर

अस्थिर सुख पर दुख की छाया

उत्तर: प्रस्तुत काव्य पंक्तियों से आशय है कि बादल वायु रूपी सागर के ऊपर अस्थिर अर्थात् क्षणिक सुख पर दुःख की छाया के समान लहराते हुए मँडरा रहे हैं और संसार का हृदय दुख

की वजह से जला हुआ है।

अथवा

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास

पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास

जब वे दौड़ते हैं बेसुध

छतों को नरम बनाते हुए

दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए

छतों के खतरनाक किनारों तक

उस समय गिरने से बचाता है उन्हें

सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत

(क) काव्यांश में 'वे'/'उनके' सर्वनाम किनके लिए प्रयुक्त हुए हैं ? वे क्या विशेष कर रहे हैं ?

उत्तर: कव्यांश में 'वे'/'उनके' सर्वनाम बच्चों के के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

वे हर समय भागते-दौड़ते रहते हैं, सक्रिय रहते हैं, जीवंत रहते हैं। वे कठोर पत्थरों एवं सतहों वाली छतों को भी मुलायम ही समझते हैं। उनकी उमंग इतनी उत्कट, धुने इतनी तीव्र एवं सक्रियता इतनी। बलवती है कि सभी दिशाएँ उनकी सक्रियता की ताल से मृदंग की तरह बजती दिखाई देती हैं।

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए :

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास

उत्तर: कवि को बच्चों कपास जैसे ही हल्के, मुलायम एवं कोमल भावनाओ और लचीले शरीर वाले लगते हैं क्योंकि कपास के रेशे भी कोमल तथा लचीले होते हैं और इन्हीं समानता के कारण कवि ने बच्चों का संबंध कपास से करा है।

(ग) 'दौड़ते हैं बेसुध' – उनकी बेसुधी के दो उदाहरण लिखिए।

उत्तर: कवि ने बच्चों के 'बेसुध होकर दौड़ने के निम्नलिखित उदाहरण प्रस्तुत करे हैं:

बच्चे कठोर पत्थरों एवं सतहों वाली छतों को भी मुलायम ही समझते हैं तथा बेसुध होकर संपूर्ण पृथ्वी को अपने पैरों से दौड़कर नाप देना चाहते हैं। दूसरी ओर कवि कहता है कि बच्चे इतने उत्साहित होते हैं कि वे दिशाओं को अपनी बोलियों से मृदंग की भाँति झंकृत और कंपायमान कर देते हैं। कोमल एवं लचीला शरीर लिए हुए ये बच्चे जब दौड़ते हैं, तो कवि को उनका दौड़ना झूले के पेंग की भॉति प्रतीत होता है।

(घ) 'छतों को नरम' बनाना और "दिशाओं को मृदंग की तरह" बजाना का भाव लिखिए।

उत्तर: छतों को नरम बनने का भाव है कि बच्चे उत्सुकता से छतों पर ऐसे दौड़ते है कि जैसे छतें भी उनकी तरह नरम हो। दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का भाव है कि जब बच्चों के पैर छत पर पड़ते हैं तो वह पदचाप मृदंग के जैसे आवाज़ करते हैं।

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 2×3 = 6 Marks

ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा।

बिबिध जतन करि ताहि जगावा।।

जागा निसिचर देखिअ कैसा।

मानहुँ कालु देह धरि बैसा।

(क) काव्यांश का अलंकार सौंदर्य समझाइए।

उत्तर: प्रस्तुत काव्यांश में अंत्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है, जबकि 'मानहुँ कालु देह धरि बैसा' में उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग किया गया है।

(ख) काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: प्रस्तुत काव्यंश को भाषा की विशेषताएँ हैं: व्यक्ति

i) भाषा की सुंदर शब्दाभिव्यक्ति का प्रयास कर गया है।

ii) भाषा में चित्रत्मकता का गुण भी उपस्थित है।

(ग) काव्यांश किस छंद में लिखा गया है ? उसका लक्षण बताइए।

उत्तर: काव्यांश में 16 मात्राओं वाले चौपाई छंद में लिखा गया है। यह एक सम-मात्रिक छंद है, जो तुलसी जी की रचनाओं में बहुलता से देखने को मिलता है।

10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3+3 = 6 Marks

(क) कैसे कह सकते हैं कि 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता शारीरिक विकलांगता की चुनौती झेल रहे व्यक्ति का उपहास करती है ? दो उदाहरण कविता से दीजिए।

उत्तर: 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता वास्तव में मीडिया के माध्यम से लोगों की पीड़ा बेचने की स्थिति को दर्शाती है। तथाकथित संवेदनशील कार्यक्रमों का संचालन करने वाले स्वयं संवेदनहीन होते हैं। वे पीड़ित व्यक्ति से अर्थहीन एवं मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछते हैं, क्योंकि उनकी उद्देश्य केवल ऐसे प्रश्न करना है, जिससे पीड़ित की वेदना, आँसुओं के रास्ते छलक उठे और दर्शक उनके कार्यक्रम में रुचि लें। किसी भी तरह उनका टी.आर.पी. बढ़े और उन्हें इसका व्यावसायिक लाभ मिल सके। उनका एकमात्र उद्देश्य अपाहिज या पीड़ायुक्त व्यक्ति की वेदना को दूरदर्शन के माध्यम से बेचना होता है।

इन उदाहरणों के माध्यम से कहा जा सकता है कि यह कविता शारीरिक विकलांगता की चुनौती झेल रहे व्यक्ति का उपहास करती है।

(ख) सीधी बात भी कब टेढ़ी हो कर उलझती चली जाती है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: सीधी बात भी तब टेढ़ी होकर उलझती जाती है, जब बात को बेवजह घुमाकर, आडंबरपूर्ण शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है। इस कारण उसका प्रभाव खत्म हो जाता है। जिस प्रकार पेंच की चूड़ी मरने से, उसका यथास्थान निर्मित खाँचे के खत्म होने से कसाव नष्ट हो जाता है, वैसे ही भाषा के अनावश्यक विस्तार से बात का प्रभाव कम हो जाता है। मूल बात शब्दजाल में उलझ कर रह जाती है। फिर बात कील की तरह ठोंक भले ही दी जाए, उसका वैसा प्रभाव नहीं रह जाता। वह श्रोता या पाठक के हृदय तक नहीं पहुँच पाती। अतः बात को सरल भाषा और कम-से-कम शब्दों में सटीक ढंग से कहा जाना चाहिए, तभी वह प्रभावशाली रहती है।

(ग) फ़िराक की संकलित रुबाइयों में कवि ने जो वात्सल्य का चित्र उकेरा है उस पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर: फिराक गोरखपुरी ने अपनी रुबाइयों में उच्च कोटि का वात्सल्य चित्रण किया है, जिसमें एक माँ अपने प्रिय पुत्र को आँगन में लिए खड़ी है। उसे हाथों के झूले पर झुला रही है, बालक प्रसन्नता से किलकारियाँ मार रहा है। माँ बच्चे को नहलाकर तैयार करती है, घुटनों में दबाकर उसे कपड़े पहनाती है। तब बच्चा माँ का मुख निहारता है। दीवाली के त्योहार पर माँ चीनी-मिट्टी के खिलौने लाती है, दीये जलाती है। उसके घरौंदे पर दीया जलाते समय माँ के मुख पर गर्व और वात्सल्य की अनोखी चमक रहती है। माँ बच्चे को शीशे में चाँद दिखाकर बहलाती है। वास्तव में, फिराक की रुबाई में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखता है। उनकी सहज भाषा एवं प्रसंग सूरदास के वात्सल्य वर्णन की सादगी की याद दिलाते हैं।

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2×4 = 8 Marks

वह रूप का जादू है, पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है।जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है!

(क) किस जादू की चर्चा हो रही है ? उसे जादू क्यों कहा गया है ?

उत्तर: प्रस्तुत गद्यांश में बाज़ार के जादू की चर्चा हो रही है। बाज़ार को जादू इसलिए कहा गया है, क्योंकि उसमें रूप और आकर्षण का बोलबाला होता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को बाज़ार में उपस्थित सभी वस्तुएँ अनिवार्य लगती हैं। यही बाजार के जादू का असर है।

(ख) चुंबक और लोहे का उदाहरण क्यों दिया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: लेखक ने बाज़ार के आकर्षण की तुलना चुंबक से की है। जिस प्रकार चुंबक लोहे को अपनी ओर खींचता है, उसी प्रकार बाज़ार का जादू चढ़ने पर मनुष्य रूपी लोहा उसकी ओर आकर्षित होता है। उसे लगता है कि सभी वस्तुएँ खरीद ली जाएँ। उसे सभी वस्तुएँ आवश्यक तथा आराम बढ़ाने वाली लगने लगती हैं।

(ग) इस जादू के असर में मन की भूमिका क्या है?

उत्तर: लेखक ने बाज़ार के जादू को ऐसा बताया है कि लोगों के पास भले ही रुपए ना हो पर बाज़ार का आकर्षण उन्हें इस तरह उत्सुक कर देता है कि उनका मन बाज़ार से अनावश्यक चीजों भी खरीदने करने के लिए व्यग्र हो उठता है।

(घ) आपके विचार से इस जादू से छुटकारा पाने का उपाय क्या हो सकता है ?

उत्तर: जादू से छुटकारा पाने का उपाय यह है कि व्यक्ति को बाज़ार तभी जाना चाहिए, जब उसे अपनी आवश्यकता के बारे में पता हो, बिलकुल भगत जी की भाँति, क्योंकि अपनी आवश्यकता का ज्ञान होने पर ही हम बाज़ार को तथा बाज़ार हमें वास्तविक लाभ दे पाएगा।

12. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: **3×4 = 12 Marks**

(क) डॉ. आंबेडकर जाति प्रथा को श्रमविभाजन का स्वाभाविक विभाजन क्यों नहीं मानते ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: डॉ. आंबेडकर जाति प्रथा को श्रम विभाजन का स्वाभाविक विभाजन नहीं मानते हैं, और इसके पीछे निम्न तर्क दिए हैं:

(i) जाति-प्रथा का दूषित नियम यह है कि ये मनुष्य के प्रशिक्षण एवं उसकी व्यक्तिगत क्षमता पर विचार किए बिना किसी दूसरे के माध्यम से उसके लिए व्यवसाय निर्धारित कर दिया जाए।

(ii) जाति-प्रथा मनुष्य को आजीवन के लिए एक व्यवसाय में बाँध देती है। फिर चाहे वह व्यवसाय उसके लिए अनुपयुक्त या अपर्याप्त क्यों न हो? भले ही इससे उसके भूख से मरने की नौबत क्यों ना आ जाए।

(iii) जाति-प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ मजदूर विभाजन भी कराती है। सभ्य समाज में मजदूरों को अलग अलग वर्गों में विभाजन अस्वाभाविक है। इसे कभी भी नहीं माना जा सकता।

(ख) "पहलवान की ढोलक" कहानी में कहानीकार ने महामारी फैलने से पूर्व और उसके बाद गाँव के सूर्योदय

और सूर्यास्त में अंतर कैसे प्रदर्शित किया है ?

उत्तर: गाँव में फैली बीमारी ने अब महामारी का रूप ले लिया था। इसने इस तरह गाँव में

हाहाकार मचा दिया था कि सभी के चेहरे पर रुदन के अलावा अन्य कोई भी चिन्ह यदा-कदा ही दृष्टिगोचर होता था। सूर्य निकलने के साथ ही लोग काँपते-कराहते घरों से निकलकर अपने आत्मीयजनों तथा मित्रों को समय बलवान होना समझाकर ढाँढस बँधाते थे और कहते थे कि समय परिवर्तित होता रहता है, बुरा समय भी जल्दी समाप्त हो जाएगा। लोग सूर्य के अस्त होने के साथ ही अपनी-अपनी झोंपड़ियों में चले जाते और उनकी चूँ तक की आवाज़ भी नहीं आती। उनकी बोलने की शक्ति भी बिलकुल समाप्त हो जाती। केवल रुग्ण गाँववासियों के रोने-कराहने और बच्चों की माँ-माँ करने की आवाजें ही आतीं।

(ग) "माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं, पर त्याग का कहीं नामोनिशान नहीं है।' – 'काले मेघा पानी दे' कहानी की इस टिप्पणी पर आज के संदर्भ में टिप्पणी कीजिए।

उत्तर: वर्तमान समाज की स्थिति ऐसी हो चुकी है कि वह सिर्फ किसी वस्तु की माँग कर सकता है, परंतु जब त्याग की बात आती है तो वह कोसो दूर पीछे हट जाता है। यह मनुष्य की स्वार्थ प्रवृत्ति को व्यक्त करता है। शिक्षा, खेल, उद्योग-धंधे आदि भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में स्वार्थ सिद्धि हेतु मनुष्य कभी माता-पिता से तो कभी देश की व्यवस्था से माँग करता हुआ दिखाई देता है, परंतु जब हमारी ज़रूरत किसी बेसहारा को पड़ती है, तो हम उससे मुँह चुराकर भाग खड़े होते हैं। इन्हीं बातों को लेखक ने 'काले मेघा पानी दे' कहानी के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है।

(घ) भक्तिन महादेवी जी की समर्पित सेविका थी, फिर भी लेखिका ने क्यों कहा है कि भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा ?

उत्तर: भक्तिन अच्छी है, पर उसके दुर्गुणों को तीन तर्कों के आधार पर बताया गया है, जैसे— वह सत्यवादी हरिश्चंद्र नहीं है। वह रुपयों-पैसों को मटकी में रख देती है और पूछने पर बताती है कि उसने उन्हें सँभालकर रखा हुआ है। वह लेखिका को प्रसन्न रखने के लिए बात को इधर-उधर घुमाकर कहती है। इसे आप झूठ कह सकते हैं। भक्तिन सभी बातों और कामों को अपनी सुविधा के अनुसार ढालने में निपुण है, जो कई बार दूसरों को नापसंद होता है।

(ङ) जीवन के संघर्षों ने चार्ली चैप्लिन के व्यक्तित्व को कैसे संपन्न बनाया ? समझाइए।

उत्तर: लेखक ने चार्ली के जीवन के बारे में बहुत ही सुंदर ढंग से उदाहरण देते हुए बताया है कि चार्ली भीड़ का ही एक बच्चा है, जो इशारे से बताना जानता है कि राजा भी उतना ही नंगा है, जितना कि मैं हूँ। यह सुनकर भीड़ हँस देती है। वे स्वयं को भी हास्यास्पद बता देते हैं और

राजा क्रोधित भी नहीं हो पाते।

चार्ली ने जीवन के हर कदम पर संघर्षों में लड़ते हुए भी खुश रहना सीखा है। एक परित्यक्ता (तलाकशुदा) और दूसरे दर्जे की अभिनेत्री का बेटा था चार्ली, जिसने भयंकर गरीबी देखी, फिर माँ का पागल हो जाना देखा, फिर औद्योगिक क्रांति, पूँजीवाद और सामंतवाद से भरे घमंडी समाज की उपेक्षा तथा तिरस्कार सहे। इन सभी परिस्थितियों से चार्ली चैप्लिन को जीवन मूल्य प्राप्त हुए।

13. यशोधर अपने परिवार से किन जीवनमूल्यों की अपेक्षा रखते थे ? उनके मूल्य उन्हें 'समहाउ इंप्रोपर' क्यों लगते थे? स्पष्ट कीजिए। **5 Marks**

उत्तर: यशोधर बाबू पुराने रीति-रिवाज़ों को मानने वाले एक आदर्श व्यक्ति थे। आधुनिक युग का असर उन्होंने अपने ऊपर नहीं पड़ने दिया था। वे अपने ही सिद्धांतों पर चलना चाहते थे और अपने परिवार से भी इन्हीं जीवन-मूल्यों की आशा रखते थे। उनको इस बात की फिक्र नहीं थी कि नई पीढ़ी को मेरे जीवन मूल्य पसंद हैं या नहीं। उनके द्वारा जबरन नई पीढ़ी पर अपने सिद्धांत थोपना ही उनकी समस्या का कारण बना था। वे चाहते थे कि नई पीढ़ी मेरे सिद्धांतों और मेरे जीवन मूल्यों को अंगीकृत करे, परंतु नई पीढ़ी को यह बात जरा भी पसंद नहीं थी। आज नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के मध्य विघटन का प्रमुख कारण आधुनिकता बनाम परंपरा की अवधारणा है। यशोधर बाबू को नई पीढ़ी के क्रियाकलाप अनुचित लगते थे। वे 'समहाउ इप्रॉपर' का प्रयोग इसलिए करते थे, क्योंकि वे आजकल के नए विचारों के पक्ष में नहीं थे। वस्तुतः वे पुराने नियमों में कोई बदलाव नहीं चाहते। वे अपना तकिया कलाम 'समहाउ इंप्रॉपर' बोलकर नए युग का विरोध करना चाहते थे।

14. (क) सौंदलगेकर एक आदर्श अध्यापक क्यों प्रतीत होते हैं? 'जूझ' कहानी के आधार पर उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **5 Marks**

उत्तर: सौंदलगेकर मराठी भाषा के अध्यापक थे। वे मराठी भाषा को अत्यंत रुचि लेकर पढ़ाते थे। उनका पढ़ाने का तरीका विशिष्ट था। अध्यापन के कार्य में वे पूरी तरह रम जाते थे। उन्हें छंद तथा सुरों का विशिष्ट ज्ञान था। वे पहले कविता गाकर सुनाते, फिर गायन के साथ अभिनय करते। श्री सौंदलगेकर की अध्यापन शैली ने लेखक को अत्यधिक प्रभावित किया। अपने

शिक्षक की प्रतिभा से प्रेरणा ग्रहण कर रचनाकार ने कविता लिखने का प्रयास प्रारंभ किया। पढ़ाई के बाद खेतों पर काम करते हुए लेखक को काफी समय मिल जाता। इस समय का सदुपयोग करते हुए वह कविता लिखकर अपने अध्यापक को दिखाता, ताकि उसमें मौजूद कमियों को दूर किया जा सके। इस प्रकार लेखक के मन में कविता लिखने के प्रति रुचि जगाने में उनके अध्यापक सौंदलगेकर की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रही।

इन तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि सौंदलगेकर एक आदर्श अध्यापक प्रतीत होते हैं।

(ख) "डायरी के पन्ने" के आधार पर महिलाओं के प्रति ऐन फ्रेंक के दृष्टिकोण पर प्रकाश डालिए। **5 Marks**

उत्तर: ऐन ने समाज में स्त्रियों की दशा को बहुत ही दयनीय बताया है। वह ऐसा मानती है कि पुरुष स्त्रियों की शारीरिक अक्षमता को ढाल बनाकर उन्हें अपने से नीचे ही रखते हैं, पर उसे लगता है कि आमतौर पर औरतें युद्ध में लड़ने वाले वीरों से अधिक तकलीफें झेलती हैं। औरत ही हैं, जो मानव जाति की निरंतरता को बनाए रखने के लिए सिपाहियों से भी अधिक परिश्रम करती हैं। ऐन ने स्त्री जीवन को बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। वह स्त्री जीवन के अनुभव को अतुलनीय बताती है।

CBSE Class 12

Hindi

Previous Year Question Paper 2016

Series: ONS **Code no. 2/1**

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 8 हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर:पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जायेगा। 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि क उत्तर:पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

हिन्दी (केन्द्रिक)

HINDI (CORE)

निर्धारित समय :3 टे **अधिकतमअंक:100**

खण्ड-'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: **15 Marks**

संवाद में दोनों पक्ष बोलें यह आवश्यक नहीं। प्रायः एक व्यक्ति की संवाद में मौन भागीदारी अधिक लाभकर होती है। यह स्थिति संवादहीनता से भिन्न है। मन से हारे

दुखी व्यक्ति के लिए दूसरा पक्ष अच्छे वक्ता के रूप में नहीं अच्छे श्रोता के रूप में अधिक लाभकर होता है।

बोलने वाले के हावभाव और उसका सलीका, उसकी प्रकृति और सांस्कृतिक-सामाजिक पृष्ठभूमि को पल भर में बता देते हैं। संवाद से संबंध बेहतर भी होते हैं और अशिष्ट संवाद संबंध बिगाड़ने का कारण भी बनता है। बात करने से बड़े-बड़े मसले, अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ तक हल हो जाती हैं। पर संवाद की सबसे बड़ी शर्त है एक-दूसरे की बातें पूरे मनोयोग से, संपूर्ण धैर्य से सुनी जाएँ। श्रोता उन्हें कान से सुनें और मन से अनुभव करें तभी उनका लाभ है, तभी समस्याएँ सुलझने की संभावना बढ़ती है और कम-से-कम यह समझ में आता है कि अगले के मन की परतों के भीतर है क्या?

सच तो यह है कि सुनना एक कौशल है जिसमें हम प्रायः अकुशल होते हैं। दूसरे की बात काटने के लिए, उसे समाधान सुझाने के लिए हम उतावले होते हैं और यह उतावलापन संवाद की आत्मा तक हमें पहुँचने नहीं देता। हम तो बस अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं। तब दूसरे पक्ष को झुंझलाहट होती है। वह सोचता है व्यर्थ ही इसके सामने मुँह खोला। रहीम ने ठीक ही कहा था - "सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँट न लैहैं कोय।" ध्यान और धैर्य से सुनना पवित्र आध्यात्मिक कार्य है और संवाद की सफलता का मूल मंत्र है।

लोग तो पेड़-पौधों से, नदी-पर्वतों से, पशु-पक्षियों तक से संवाद करते हैं। राम ने इन सबसे पूछा था - 'क्या आपने सीता को देखा?' और उन्हें एक पक्षी ने ही पहली सूचना दी थी। इसलिए संवाद की अनंत संभावनाओं को समझा जाना चाहिए।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। **1 Mark**

उत्तर:

संवाद का महत्व।

संवाद की अनन्त संभावना।

संवाद - सफलता का मूल मंत्र।

संवाद कौशल।

(ख) 'संवादहीनता' से क्या तात्पर्य है? यह स्थिति मौन भागीदारी से कैसे भिन्न है?
2 Marks

उत्तर: परस्पर बोलचाल न होना/वार्तालाप का अभाव।

मौन भागीदार संवाद में चुपचाप शामिल होता है, संवाद को चुप रह कर सुनता है लेकिन संवादहीनता में संवाद स्थापित ही नहीं हो पाता।

(ग) भाव स्पष्ट कीजिए – "यह उतावलापन हमें संवाद की आत्मा तक नहीं पहुँचने देता।" **2 Marks**

उत्तर: संवाद की आत्मा - संवाद का मूल मंत्र या उद्देश्य।

बात को धैर्य पूर्वक सुने बिना, समझे बिना बोलने की उतावली/शीघ्रता संवाद की गंभीरता को नष्ट कर देती है।

(घ) दुखी व्यक्ति से संवाद में दूसरा पक्ष कब अधिक लाभकर होता है? क्यों? **2 Marks**

उत्तर: अच्छे श्रोता के रूप में।

वक्ता का मन हल्का होता है।

आत्मीयता प्रकट होती है।

(ङ) सुनना कौशल की कुछ विशेषताएँ लिखिए। **2 Marks**

उत्तर: धैर्यवान होना।

मन से जुड़ना।

दूसरों के अनुभवों का लाभ मिलना।

आत्मीयता।

(च) हम संवाद की आत्मा तक प्रायः क्यों नहीं पहुँच पाते? **2 Marks**

उत्तर:

- अधीरता।
- बीच में बात काटना।
- समाधान सुझाने का उतावलापन।

- सजगता का अभाव।

(छ) रहीम के कथन का आशय समझाइए। **2 Marks**

उत्तर:

- दुख-दर्द को सार्वजनिक करने का लाभ नहीं होता।
- दूसरे की समस्या सुन कर लोग हँसते हैं।
- दूसरे की परेशानी सुन कर मजाक बनाते हैं, उसे कम नहीं करते।

(ज) राम का उदाहरण क्यों दिया गया है? **2 Marks**

उत्तर: संवाद की अनन्त संभावनाओं को समझाने के लिए।

प्रकृति एवं पशु-पक्षियों से भी संवाद संभव।

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: **1×5=5 Marks**

सूख गई है। झील रसवंती
मिट्टी ही बची है नरम, साँवली, सहस्रों दुख-दरारवाली
अब वे दिन याद आते हैं
इस किनारे से उस किनारे तक अछोर पानी और हवा
पुराने महलों से बातें करता, ढलता
पश्चिम का वर्षा सूर्य
झील तट के कंकाल पेड़ों पर
पछतावा करती बैठी होंगी चिड़ियाँ
स्त्रियाँ खिन्नमन घाटों से लौट रही होंगी।
आगे देखने वाले भद्रजन झील की मिट्टी बेचने आएँगे

आएँगे उनके देशी-विदेशी परिजन

शोकाकुल झील-तट वासियों को धीरज देने।

सुना है यहाँ गांधी की प्रार्थना सभा होगी

आएँगी सुब्बालक्ष्मी मीरा का पद गाने-

'हरि तुम हरो जन की पीर।'

(क) रसवंती कौन है? क्यों सूख गई है?

उत्तर: झील।

जल के अभाव में।

(ख) पहले उसका सौंदर्य कैसा रहा होगा?

उत्तर: जल से भरी।

हरे-भरे, पेड़-पौधों वाले घाटों वाली।

पक्षियों के कलरव से गुंजित।

स्त्री पुरुषों के आवागमन से गुलजार।

(ग) पेड़ों को 'कंकाल' क्यों कहा? चिड़ियों को क्या पछतावा है?

उत्तर: पानी के अभाव में सूखे पेड़-पौधों के कारण।

हरे-भरे पेड़-पौधे न दिख पाने का।

(घ) भद्रजन कौन हैं? वे सूखी झील से भी कैसे लाभ कमा लेते हैं?

उत्तर: शहरी-नागरिक व्यापारी।

मिट्टी आदि संसाधनों को बेच कर धनार्जन।

(ङ) भाव स्पष्ट कीजिए: "स्त्रियाँ खिन्नमन घाटों से लौट रही होंगी।"

उत्तर: जल की कमी से जलाधारित दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति न हो पाने के कारण।स्त्रियाँ खिन्नमन घाटों से लौट रही होंगी।

खण्ड-'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए: **5 Marks**

(क) पुस्तकों का महत्त्व

पुस्तक हमारे लिए ज्ञान का एकमात्र साधन है। ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती। अगर हम ज्ञान प्राप्त करते जाते हैं तो वह कभी खराब नहीं जाता वह हमें जिंदगी के किसी न किसी मोड़ पर मदद करता ही है। पढ़ने से हमें अनुभव व सूचना ही प्राप्त होती है ज्ञान के रूप में।

आज के समय में पढ़ने की प्रवृत्ति घटती जा रही है। आजकल लोगों के पास समय कम होता है। प्रौद्योगिकी का इतना विकास होचुका हैं कि आजकल हम किताबो से पढ़ना कम पसंद करते हैं। आजकल लोग न्यूज़ को फोन से देखना पसंद करते हैं व बच्चे ऑनलाइन क्लास लेकर लैपटॉप व कंप्यूटर जैसे उपकरणों से अपने शिक्षाएं पूरी करते हैं। युवा आजकल इंटरनेट के सहारे अपनी बड़ी से बड़ी परीक्षा भी पास कर लेते हैं। पुस्तकें पढ़ने का तो जैसे जमाना ही चला गया।

इससे पुस्तकों के अस्तित्व की हानि हो रही है। पुस्तकों का अस्तित्व धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है। इससे मनुष्य के स्वास्थ्य को भी नुकसान हो रहा हैं।

पुस्तकों से हमेशा लाभ होता हैं। पुस्तकों को पढ़ने से हमेशा ज्ञान का विकास होता है। शिक्षण में विद्यार्थियों के आत्मसुधार व आत्मविकास पर बल देना चाहिए। ज्ञान प्राप्ति के लिए अच्छी पुस्तकों का चयन आवश्यक हैं। अध्ययन से जीवन में सफलता पाई जा सकती है।

(ख) प्रदूषण के दुष्परिणाम

प्रस्तावना

बचपन में हम जब भी गर्मी की छुट्टियों में अपने दादी-नानी के घर जाते थे, तो हर जगह हरियाली ही हरियाली फैली होती था| आजकल के बच्चों के लिए ऐसे दृश्य केवल किताबों तक ही सीमित रह गये हैं। ज़रा सोचिए ऐसा क्यों हुआ।

प्रदूषण का अर्थ

प्रदूषण, तत्वों या प्रदूषकों के वातावरण में मिश्रण को कहा जाता है। जब यह प्रदूषक हमारे प्राकृतिक संसाधनो में मिल जाते है। तो इसके कारण कई सारे नकरात्मक प्रभाव उत्पन्न होते है। इससे मनुष्यों के लिए छोटी बीमारियों से लेकर अस्तित्व संकट जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए पेड़ो की अन्धाधुंध कटाई की है। जिस कारण पर्यावरण असंतुलित हो गया है। प्रदूषण भी इस असंतुलन का मुख्य कारण है।

प्रदूषण के प्रकार

वातावरण में मुख्यतः चार प्रकार के प्रदूषण हैं -

जल प्रदूषण

घरों से निकलने वाला दूषित पानी बहकर नदियों में जाता है। इससे भूमिगत जल प्रदूषित होता है। जल प्रदूषण से डायरिया, पीलिया, टाइफाइड, हैजा आदि खतरनाक बीमारियाँ होती है।

वायु प्रदूषण

कारखानों की चिमनी और सड़को पर दौड़ते वाहनों से निकलते धुएँ में कार्बन मोनो ऑक्साइड, ग्रीन हाउस गैसें जैसै कार्बन डाई ऑक्साइड, मिथेन, क्लोरो-फ्लोरो कार्बन आदि खतरनाक गैसें निकलती हैं। इससे दमा, खसरा, टी.बी. डिप्थीरिया, इंफ्लूएंजा आदि रोग वायु प्रदूषण का ही कारण हैं।

ध्वनि प्रदूषण

मनुष्य के सुनने की क्षमता की भी एक सीमा होती है, उससे ऊपर की सारी ध्वनियां उसे बहरा बनाने के लिए काफी हैं।इनसे होने वाला प्रदूषण ध्वनि प्रदूषण कहलाता है। इससे पागलपन, चिड़चिड़ापन, बेचैनी, बहरापन आदि समस्याएं होती है।

मृदा प्रदूषण

खेती में अत्यधिक मात्रा में उर्वरकों और कीट-नाशकों के प्रयोग से मृदा प्रदूषण होता है। साथ ही सेहत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उपसंहार

अगर हमें अपनी आगामी पीढ़ी को एक साफ, सुरक्षित और जीवनदायिनी पर्यावरण देना है, तो इस दिशा में कठोर कदम उठाने होंगे। और प्रदूषण पर नियंत्रण पाना सिर्फ हमारे देश ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण पृथ्वी के लिए आवश्यक है। ताकि सम्पूर्ण पृथ्वी पर जीवन रह सके।

(ग) हमें चाहिए अच्छे शिक्षक

टीचर वह सूत्र होता है जिसके सहारे बच्चा आपने मुकाम तक पहुँचाते हैं। शिक्षक हमारे लिए भगवान का एक अदभुत आशीर्वाद हैं। वे वही हैं जो एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण करते हैं और दुनिया को एक बेहतर जगह बनाते हैं। एक शिक्षक हमें तलवार की तुलना में कलम का महत्व सिखाता है। वे समाज में बहुत सम्मानित हैं क्योंकि वे लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाते हैं। वे समाज के निर्माण खंड की तरह हैं जो लोगों को शिक्षित करते हैं और उन्हें बेहतर इंसान बनाते हैं। इसके अलावा, शिक्षकों का समाज और उनके छात्र के जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। वे माता-पिता के जीवन में भी बहुत महत्व रखते हैं क्योंकि माता-पिता अपने बच्चों के लिए शिक्षकों से बहुत उम्मीद करते हैं। हालांकि, हर पेशे की तरह, अच्छे और बुरे दोनों तरह के शिक्षक होते हैं। एक अच्छे शिक्षक में ऐसे गुण होते हैं जो एक बुरे शिक्षक में नहीं होते। हमें अच्छे शिक्षक पाने का पुरा हक हैं क्युंकि हमारा भविष्य पुरा उनपर ही निर्भर करता है। अच्छे शिक्षक अपने शिक्षा के लक्ष्यों के लिए पहले से तैयार होते हैं। वे अधिकतम उत्पादकता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिदिन अपनी कार्ययोजना तैयार करते हैं। शिक्षकों को हर चीज के बारे में बहुत अधिक ज्ञान होता है, विशेष रूप से जिस विषय में वे विशेषज्ञ होते हैं। एक अच्छा शिक्षक अपने ज्ञान का विस्तार करता है और अपने छात्रों को अच्छे उत्तर प्रदान करता रहता है। उसी तरह एक अच्छा शिक्षक एक दोस्त की तरह होता है जो हमारी हर परेशानी में हमारी मदद करता है। एक अच्छा शिक्षक अपनी व्यक्तिगत सीखने की प्रक्रिया बनाता है जो अद्वितीय है और मुख्यधारा नहीं है। इससे छात्र विषय को बेहतर तरीके से सीख पाते हैं। दूसरे शब्दों में कहे तो एक अच्छा शिक्षक यह सुनिश्चित करता है कि उनके छात्र कुशलता से सीख रहे हैं और अच्छे अंक प्राप्त कर रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एक अच्छा शिक्षक वह है जो न केवल हमारे शैक्षिक प्रदर्शन पर ही नहीं बल्कि हमारे समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करता है। तभी विद्यार्थी सही मायने में तरक्की कर सकता है। इस प्रकार, अच्छे शिक्षक अपने छात्र की समस्याओं को समझेंगे और उनसे सही ढंग से निपटने का प्रयास करेंगे। वे छात्र को ऐसा महसूस कराते हैं कि अगर वे घर पर या अपने दोस्तों के साथ बात नहीं कर सकते तो उनके पास हमेशा कोई न कोई होता है।

इन सबको गुणों का मिश्रण एक अच्छे शिक्षक में होता हैं और हमें ऐसे ही अच्छे शिक्षक की आवश्यकता हैं।

धन्यवाद

(घ) हिन्दी भारत की पहचान

हिंदी भाषा बहुत पुरानी है और संस्कृत के विकास की सीधी रेखा है। जैसे यह दुनिया की सबसे पुरानी धार्मिक और साहित्यिक परंपराओं में से एक है - ऐसी परंपराएं जिन्होंने अन्य धर्मों और कला के कार्यों को प्रभावित किया है, चाहे हम इसे महसूस करें या नहीं। इस प्रकार विश्व की संस्कृतियों के ऐतिहासिक विकास में हिंदी अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण है और न केवल सम्मान के योग्य है, बल्कि अध्ययन करने योग्य भी है। विश्व इतिहास या भाषाओं में रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति हिंदी के विषय पर थोड़ा गहन अध्ययन कर सकता है। हिंदू भाषा वो शब्दों का मध्यम हैं जिससे हम हमारे दिल में जो भी हैं बता सकते हैं। हिंदी केवल भाषा नहीं एक भाव हैं, जिससे अपनत्त्व का एहसास होता है। हमारी हिंदी सिनेमा को ही देख लीजिये जब भी हम उसे देखते है to लगता हैं, कि खुद के जीवन को देख रहे है। हिंदी के बारे में कुछ जानने से आपके अनुभव के लिए हजारों फिल्में तुरंत खुल जाती हैं - ऐसी फिल्में जिनका भारत और उसके बाहर जबरदस्त सांस्कृतिक प्रभाव रहा है। अंग्रेजी को केवल एक भाषा के रूप में स्वीकार करें। अंग्रेजी भारत की एकमात्र भाषा है। जब हम हिंदी को मातृभाषा का दर्जा देते हैं, तो यह भावना हमारे स्वभाव में प्रकट होनी चाहिए। हिंदी हमारी संप्रभुता है। भारत की उत्पत्ति। अतः कहा जा सकता है कि हिन्दी हृदय की भाषा है।

आज दुनिया के करीब 44 ऐसे देश हैं जहां हिंदी बोलने का चलन बढ़ता जा रहा है। सवाल यह है कि जब हिंदी की वैश्विक स्वीकार्यता बढ़ रही है। हिंदी भाषा हमारी जन्नि हैं, हमारी माँ हैं, इसलिए वह हमको और हम उनको समझते हैं।

4. कुछ टी.वी. चैनल वैज्ञानिक चिंतन या तर्क के स्थान पर अंधविश्वास फैलाने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं। इनके दुष्प्रभावों की चर्चा करते हुए किसी समाचार पत्र को पत्र लिखकर इस प्रवृत्ति को रोकने का अनुरोध कीजिए। 5 Marks

उत्तर: पत्र-लेखन:

सेवा में,

प्रधान संपादक महोदय,

दैनिक भास्कर,

नई दिल्ली,

विषय- अंधविश्वास को प्रोत्साहन देने वाले तर्कहीन कार्यक्रम के बारे में|

महोदय,

आपका चैनल मैं रोजाना देखती हूं। बीते कई दिनों से आपके चैनल पर एक कार्यक्रम आ रहा है जो मुझे तर्कहीन और आधाररहित लगता है। इस आधे घंटे के कार्यक्रम में सिर्फ अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाली जानकारियां दी जाती है। आपका चैनल लोकप्रिय चैनल है| लिहाजा इस कार्यक्रम के माध्यम से आप हजारों-लाखों लोगों को इस तरह से अंधविश्वास के प्रति प्रोत्साहित कर रहे है। मेरी आपसे गुजारिश है कि इस कार्यक्रम को तत्काल रूप से बंद किया जाए क्योंकि, इसका लोगों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

धन्यवाद ,

भवदीया

शिप्रा शर्मा

अथवा

आप किसी पर्यटक स्थल पर भ्रमण के लिए गए किंतु वहाँ की अस्वच्छता देखकर खिन्न हुए। इस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उक्त स्थल के पर्यटन अधिकारी को एक पत्र लिखिए और सुधार का अनुरोध कीजिए।

सेवा में,

पर्यटन अधिकारी,

दिल्ली,

विषय: पर्यटन स्थल पर अस्वच्छता के सुधार हेतु पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन किया है कि मैंने हिमायू का मकबरा का भ्रमण किया मुझे वहां अस्वच्छता देखने को मिली।वहां बहुत कूड़ा कचरा पड़ा था। जिससे स्वस्थ्य को भी हानि होती हैं। सफ़ाई रखना ज़रूरी है। पर्यटक स्थल पर विदेशी लोग भी भ्रमण करने के लिए आते हैं वह हमारे पर्यटक स्थल की ऐसी स्थिति देखेंगे तो देश के लिए यह गौरव की बात नहीं। पर्यटक स्थलों को स्वच्छ रखना जरूरी है। वहा साफ सफ़ाई जरूरी है।

मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि कृपया आप पर्यटक स्थल की साफ-सफाई करवाएं व हमेशा स्वच्छता रखें। मुझे आशा है कि आप इस समस्या को देखेंगे और सुधार करेंगे।

भवदीय

अंकुश

5. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए: **1×5=5 Marks**

(क) इलैक्ट्रौनिक माध्यम की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

- यथास्थिति का वर्णन।
- लाईव टेलीकास्ट की सुविधा।
- तुरन्त एवं रोचक प्रस्तुति।

सभी को सुलभता।

(ख) संपादक के दो दायित्वों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर:

- संपादकीय लेखन।
- समाचारों का संपादन।

(ग) संपादकीय का महत्व समझाइए।

उत्तर: संपादकीय का महत्व समसामयिक घटनाओं के विश्लेषण करना तथा जन-चेतना लाना।

(घ) रेडियो माध्यम की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: त्रुटि रहित शुद्ध भाषा।

सरल और स्पष्ट भाषा का प्रयोग।

(ङ) मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ क्यों कहा जाता है?

उत्तर: अन्य तीन स्तंभों पर नज़र।

जन सामान्य को जागरूक करना।

6. 'चुनाव प्रचार का एक दिन' अथवा ' भीड़ भरी बस के अनुभव' विषय पर एक फीचर का आलेख लिखिए। 5 Marks

उत्तर: चुनाव प्रचार का एक दिन मजदूरों की समस्या

हम चुनाव प्रचार में मज़दूरो की समस्या का प्रचार करेंगे।आज मजदूरों की समस्याओं में धीरे-धीरे बढ़ोतरी होते जा रही हैं। मजदूरों की समस्या भारत में भी बड़ी बनती जा रही हैं। जिस प्रकार पहले मजदूरों का शोषण किया जाता था उसी प्रकार आज भी मजदूरों का शोषण किया जा रहा है।मजदूरों से फैक्ट्रियों में पूरा काम चला लिया जाता है परंतु उन्हें मजदूरी दी जाती है। इसी कारण भारत में शिक्षा की कमी है। क्योंकि मजदूरों का कम दी जाती है इसी वजह से पैसे के अभाव के कारण वह अपने बच्चों को शिक्षित नहीं कर पाते।

मजदूरों के लिए न्यूनतम मजदूरी का कानून बनाया गया है परंतु इस कानून का पालन नहीं किया जाता और सरकार भी इस उल्लंघन पर ध्यान नहीं देती। हम सरकार में आने के पश्चात्

कानून उल्लंघन को रोकेंगे।

देश में आज भी बंधुआ मजदूरी प्रणाली अधिनियम का उल्लंघन होता है। लोग आज भी मजदूरों को बंधुआ मजदूर बना लेते हैं।

आज भी महिला मज़दूरों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। लैंगिक भेदभाव किया जाता है। महिलाओं को कम वेतन व पुरुषों को ज्यादा वेतन दिया जाता है। पुरुषों व महिलाओं में भेदभाव किया जाता है। महिलाओं से 10 से 12 घंटे काम कराया जाता है जो कि उचित नहीं है और उनको कम वेतन भी दिया जाता है।

कम वेतन दिए जाने के कारण वह अपने बच्चों को शिक्षित नहीं कर पाते और उन्हें शिक्षा देने के बजाय बाल मजदूरी में लगा देते हैं और उनका भविष्य बर्बाद हो जाता है। जिससे अर्थव्यवस्था पर भी असर पड़ता है क्योंकि देश के आने वाली युवा पीढ़ी बाल मज़दूरी का शिकार हो जाती हैं।

देश में बच्चों को शिक्षित करने की आवश्यकता है। हम शिक्षा पर जोर देंगे।

इन समस्याओं के लिए हम अधिनियम लागू करेंगे व इनके उल्लंघन करने वालों को सजा देंगे। महिलाओं को अधिक वेतन देने को कहा जाना चाहिए। लैंगिक भेदभाव पर रोक लगनी चाहिए।

यदि हम चुनाव जीत गए तो लैंगिक भेदभाव, मजदूरों का शोषण और बाल मजदूरी पर रोक लगाएंगे। न्यूनतम मजदूरी अधिनियम को लागू करेंगे। बच्चो की शिक्षा पर ज़ोर देंगे।

लेखन "भीड़ भरी बस के अनुभव"

'भीड़ भरी बस में यात्रा करना' अपने आप में एक अनुभव है। सोमवार की सुबह थी। मुझे अपने चाचा के यहाँ जाना था जो द्वारका में रहते हैं द्वारका में रहते हैं किसी जरूरी काम के लिए। यह स्थान मेरे निवास स्थान से काफी दूर है और ऑटो रिक्शा वाला मोटी रकम वसूलता। इसलिए, मैंने एक डीटीसी बस में सवार होने का फैसला किया। जैसे ही मैं बस स्टॉप पर पहुँचा, मैंने सड़क पर भारी भीड़ देखी। जब उन्होंने एक बस को आते देखा तो सभी ने धमाचौकड़ी मचाई। बसों में क्षमता से अधिक यात्रियों को बैठाया गया था, कुछ यात्री तो गेट पर लटक रहे थे।

निजी बसों ने हड़ताल की थी। इसलिए, भीड़ नियंत्रण से बाहर थी। जैसे ही मैं बस में चढ़ा, साथी यात्रियों ने मुझे धक्का दे दिया। बस में केवल 50 सीटें थीं लेकिन उसमें सौ से अधिक व्यक्ति यात्रा कर रहे थे। खड़े यात्रियों की संख्या किसी भी तरह से सीटों पर बैठने वालों से कम नहीं थी। सभी बुरी तरह से पसीने से तर-बतर थे, बच्चे अकारण रो रहे थे और महिलाएँ जोर-जोर से चिल्ला रही थीं। यात्रियों के बीच शोर-शराबा सुनाई देने लगा।

निकास द्वार पर पहुंचना आसान नहीं था। एक को कुछ तंग रस्सी से चलना पड़ता था जैसे कि वह एक सर्कस शो हो। मेरा पड़ाव नज़दीक आ रहा था और मैं खुद को दरवाजे की तरफ धकेलने लगा। दस मिनट तक संघर्ष करने के बाद, आखिरकार मैं निकास द्वार पर पहुँच गया और अंत में बस से नीचे उतर गया। यह वास्तव में मेरे पूरे जीवन की अविस्मरणीय यात्रा थी।

7. 'अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा' अथवा 'दलितों पर अत्याचार' विषय पर एक आलेख लिखिए। **5 Marks**

उत्तर:

अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा

वर्तमान समय में अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा को ज्यादा महत्व दिया जाता हैं। निजी स्कूलों में अंग्रेज़ी माध्यम से ही शिक्षा कराई जाती है और जो बच्चे हिंदी माध्यम से शिक्षा करते हैं उनको कमतर समझा जाता है।यदि जिन्हें अंग्रेजी नहीं आती लोग उन्हें अनपढ़ भी बोलने लगते हैं। जबकि दोनों ही भाषा अपनी अपनी जगह जरूरी है। हिंदी हमारी मातृभाषा है जिसे हमें उतना ही सम्मान देना चाहिए जितना पहले देते थे।अंग्रेज़ी को महत्व देना भी जरूरी है। आजकल सरकारी स्कूलों में भी अंग्रेजी माध्यम के लिए अलग से कक्षाएं बना दी है। लेकिन हमे हिंदी भाषा मातृभाषा को नहीं भूलना चाहिए। हिंदी भाषा को भी उसी नजरिए से देखना चाहिए जिस नजरिए से पहले देखते थे।

दलितों पर अत्याचार

दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ है- दलन किया हुआ। इसके तहत वह हर व्यक्ति आ जाता है जिसका शोषण-उत्पीडन हुआ है। रामचन्द्र वर्मा ने अपने शब्दकोश में दलित का अर्थ लिखा है, मसला हुआ, मर्दित, दबाया, रौंदा या कुचला हुआ, विनष्ट किया हुआ।पिछले छह-सात दशकों में 'दलित' पद का अर्थ काफी बदल गया है। आंदोलन के बाद यह शब्द हिंदू समाज व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर स्थित सैकड़ो वर्षों से अस्पृश्य समझी जाने वाली तमाम जातियों के लिए सामूहिक रूप से प्रयोग होता है। अब दलित पद अस्पृश्य समझी जाने वाली जातियों की आंदोलनधर्मिता का परिचायक बन गया है।

दलितों पर अत्याचार

दलित दूल्हे को ऊंची जाति (के लोगों द्वारा कथित तौर पर घोड़ी चढ़ने से रोका गया। यादवों ने घोड़े की लगाम खींच कर दूल्हे को नीचे गिराया तथा उसकी बुरी तरह से पिटाई की।

आधुनिक भारत व दलित अधिकार

आज दलितों को भारत में जो भी अधिकार मिले हैं उसकी पृष्ठभूमि इसी शासन की देन थी। भारत में दलितों की कानूनी लड़ाई लड़ने का जिम्मा सबसे सशक्त रूप में डॉ॰ अम्बेडकर ने उठाया। डॉ अम्बेडकर दलित समाज के प्रणेता हैं। बाबा साहब अम्बेडकर ने सबसे पहले देश में दलितों के लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों की पैरवी की साफ दौर भारतीय समाज के तात्कालिक स्वरूप का विरोध और समाज के सबसे पिछड़े और तिरस्कृत लोगों के अधिकारों की बात की। अम्बेडकर की प्रयासों का ही ये परिणाम है कि दलितों के अधिकारों को भारतीय संविधान में जगह दी गई। यहां तक कि संविधान के मौलिक अधिकारों के जरिए भी दलितों के अधिकारों की रक्षा करने की कोशिश की गई।

दलित समाज के प्रेरणास्रोत व्यक्ति

एक रुपये में जमींदार के, सोलह आदमी भरती ।

रोजाना भूखे मरते, मुझे कहे बिना ना सरती ॥

दादा का कर्जा पोते से, नहीं उतरने पाया ।

तीन रुपये में जमींदार के, सत्तर साल कमाया ॥

रवीन्द्र प्रभात ने अपने वहीं डॉ॰एन.सिंह ने अपनीं पुस्तक "दलित साहित्य के प्रतिमान " में हिन्दी दलित साहित्य के इतिहास कों बहुत ही विस्तार से लिखा है।"ठाकुर का कुँआ"प्रेमचन्द्र की एक प्रसिद्ध कहानी है,जिसका कथानक अस्पृश्यता पर केंद्रित है।कहानी की मुख्य पात्र गंगी अपने बीमार पति के लिए कुएँ का साफ पानी नहीं ला पाती है, क्योंकि उच्च जाति के लोग दलितों को अपने कुएँ से पानी नहीं लाने देतें हैं

खण्ड-'ग'

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2×4=8 Marks

तुम्हें भूल जाने की

दक्षिणधृवी अंधकार-अमावस्या

शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पालू मैं

झेलू मैं, उसी में नहा लें मैं

इसलिए कि तुम से ही परिवेष्टित आच्छादित

रहने का रमणीय उजेला अब

सहा नहीं जाता है।

(क) कवि के व्यक्तिगत संदर्भ में किसे 'अमावस्या' कहा गया है?

उत्तर: अपने प्रिय पात्र (तुम्हें) को भूल जाना।

(ख) 'अमावस्या' के लिए प्रयुक्त विशेषणों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: दक्षिण ध्रुवी, दीर्घकालीन अंधकार।

जिस प्रकार दक्षिण ध्रुव पर उजाला नहीं होता, वैसे ही कवि के हृदय में प्रिये के भूलने पर अंधकार।

(ग) 'रमणीय उजेला' क्या है और कवि उसके स्थान पर अंधकार क्यों चाह रहा है?

उत्तर: प्रिय पात्र का प्रेम और सामीप्य।

यह अति निकटता, प्यार का संबंध निरन्तर होने से वह ऊब गया है, उससे मुक्ति चाहता है।

प्रिया से वियुक्त हो कर ही कर्म पथ पर अग्रसर होने की आकांक्षा।

(घ) 'तुम से ही परिवेष्टित आच्छादित' - यहाँ 'तुम' कौन है? आप ऐसा क्यों मानते हैं?

उत्तर: ‘तुम’ कवि की प्रिया/प्रेरणा पात्र है।

क्योंकि कविता में स्नेह पात्र से कवि की निकटता।

अथवा

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था

ज़ोर ज़बरदस्ती से बात की चूड़ी भर गई

और वह भाषा में बेकार घूमने लगी!

हारकर मैंने उसे कील की तरह

उसी जगह ठोंक दिया।

ऊपर से ठीकठाक

पर अंदर से

न तो उसमें कसाव था

न ताकत !

(क) बात की चूड़ी मरने का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: बात का निरर्थक होना/प्रभावहीन होना।

मूल भाव एवं सौंदर्य नष्ट होना।

(ख) 'बात को कील की तरह ठोंकना' क्या है? ऐसा क्यों किया जाता है?

उत्तर: अप्रासंगिक, अनुपयुक्त बात बार-बार करते रहना।

प्रशंसा और वाहवाही पाने के लिए।

(ग) टिप्पणी कीजिए कि बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं।

उत्तर: बात की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा।

भाषा प्रस्तुति में स्पष्टता, सरलता एवं अर्थवत्ता आवश्यक।

(घ) भाषा में कसाव न हो तो क्या परिणाम होगा?

उत्तर: प्रभावहीन हो जाएगी।

अर्थहीन हो जाएगी।

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2×3=6 Marks

प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर।

आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ बीर रस।

(क) काव्यांश के छंद का नाम और भाषा की एक विशेषता लिखिए।

उत्तर: छंद - सोरठा

अवधी लोक भाषा होने के कारण सुबोधता।

अलंकारिकता।

(भाषा की कोई एक विशेषता)

(ख) वानरों की व्याकुलता का कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: लक्ष्मण की मूर्च्छा।

श्री राम का करुण विलाप।

हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लाने में देरी होना।

(ग) दूसरी पंक्ति में निहित अलंकार का नाम लिखकर उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: उत्प्रेक्षा अलंकार।

करुण रस में वीर रस की उपस्थिति।

सुन्दर कल्पना।

अथवा

कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,

तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।

हौलेहौले जाती मुझे बाँध निज माया से।

उसे कोई तनिक रोक रक्खो।

(क) मानवीकरण के सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर: साँझ तेजस्विनी श्वेत-नारी रूप में प्रस्तुत।

कजरारे बादलों का प्रतिबिम्ब मानवीय प्रतिच्छायाओं का प्रतिबिम्ब।

(ख) काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: कजरारे, साँझ, हौले-हौले जैसे सरल सुबोध शब्दों का प्रयोग।

प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली।

प्रतीकात्मकता।

(कोई अन्य उपयुक्त उत्तर भी अपेक्षित।)

(ग) काव्यांश का बिंब-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: आकाश में काले बादलों का छाया बिंब -दृश्य बिंब।

तैरती साँझ का सौन्दर्य - दृश्य बिंब।

10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3+3=6 Marks

(क) 'कवितावली' के आधार पर पुष्टि कीजिए कि तुलसी को अपने समय की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं की जानकारी थी।

उत्तर: तुलसीदास ने अपने युग की विषमताओं, गरीबी, बेरोजगारी इत्यादि का वर्णन किया है।

किसान, भिक्षुक, नौकर-चाकर, भाट, नट चोर इत्यादि सभी जीविका विहीन।

दरिद्रता और बेरोजगारी के कारण समाज में अशांति। पेट की आग बुझाने के लिए लोग अपने बच्चों को बेचने पर मजबूर।

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए - "मैं और, और जग और, कहाँ का नाता!"

उत्तर: पहले 'और' में कवि स्वयं को आम व्यक्ति से भिन्न बताता है।

दूसरे 'और' द्वारा वह अपना और विश्व का संबंध प्रतिपादित करता है।

तीसरे ‘और’ द्वारा कवि अपने स्वभाव से शेष संसार के स्वभाव की भिन्नता प्रकट करता है।

(ग) 'शमशेर की कविता गाँव की सुबह का जीवंत चित्रण है।' पुष्टि कीजिए।

उत्तर: राख से लीपा हुआ गीला चौका, काली सिल पर बिखरा लाल केसर।

नीला जल, गोरी युवती की मखमली देह आदि उपमाओं द्वारा गाँव के सूर्योदय के सौंदर्य का जीवंत चित्रण।

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2×4=8 Marks

भक्तिन और मेरे बीच सेवक-स्वामी संबंध है, यह कहना कठिन है; क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया जो स्वामी से चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे। भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जितना अपने घर में बारी-बारी से आने-जाने वाले अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलनेवाले गुलाब और आम को सेवक मानना। वे जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते हैं, जिसे सार्थकता देने के लिए ही हमें सुख-दुख देते हैं, उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए ही मेरे जीवन को घेरे हुए है।

(क) भक्तिन और लेखिका के पारस्परिक संबंधों को सेवक-स्वामी संबंध क्यों नहीं कहा जा सकता?

उत्तर: महादेवी चाह कर भी उसे नहीं निकाल पातीं, और निकाले जाने का आदेश पा कर भी भक्तिन नहीं जाती थी। दोनों के बीच भावनात्मक संबंध।

(ख) प्रकाश-अंधकार का उदाहरण क्यों दिया गया है? भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: प्रकाश और अंधकार जीवन का अभिन्न अंग।

प्रकाश अंधकार का संबंध स्वाभाविक है इसके बिना जीवन की कल्पना नहीं।

भक्तिन और महादेवी भी एक दूसरे के बिना अपने जीवन की कल्पना नहीं कर पातीं।

(ग) गद्यांश के आधार पर महादेवी और भक्तिन के स्वभाव की एक-एक विशेषता सोदाहरण लिखिए।

उत्तर: भक्तिन तर्कपटु है। प्रत्येक कार्य का औचित्य ठहरा देती है।

महादेवी जी अत्यंत उदार, मानवतावादी और सहिष्णु थीं।

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए - "भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए ही मेरे व्यक्तित्व को घेरे हुए है।"

उत्तर: प्रकाश अंधकार या गुलाब आम का सा भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व।

उसका व्यक्तित्व अपने वास्तविक रूप में महादेवी जी के जीवन को घेरे हुए।

अथवा

जब सफ़िया की बात खत्म हो गई तब उन्होंने पुड़िया को दोनों हाथों में उठाया, अच्छी तरह लपेटा और खुद सफ़िया के बैग में रख दिया। बैग सफ़िया को देते हुए बोले, "मुहब्बत तो कस्टम से इस तरह गुज़र जाती है कि कानून हैरान रह जाता है।" वह चलने लगी तो वे खड़े हो गए और कहने लगे, "जामा मस्जिद की सीढ़ियों को मेरा सलाम कहिएगा और उन खातून को यह नमक देते वक्त मेरी तरफ से कहिएगा कि लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा, तो बाकी सब रफ्ता-रफ़्ता ठीक हो जाएगा।"

(क) पुड़िया में ऐसा क्या था जो कहानी बन गया? संक्षेप में समझाइए।

उत्तर: सफिया द्वारा सिख बीबी से लाहौरी नमक लाने का वायदा।

लाहौर से नमक लाने या न लाने का द्वंद्व।

कस्टम अफसर द्वारा प्रेम और सम्मानपूर्वक नमक ले जाने की अनुमति।

(ख) आशय समझाइए - 'जामा मस्जिद की सीढ़ियों को मेरा सलाम कहिएगा।'

उत्तर: विभाजन के पश्चात भी जन्मभूमि से प्रत्येक व्यक्ति को लगाव होता है।

कस्टम अफसर चाहे पाकिस्तान में रहने लगे। नौकरी करने लगे किंतु दिल से वह

आज भी अपना वतन देहली को ही मानते हैं।

(ग) 'बाकी सब रफ़्ता - रफ्ता ठीक हो जाएगा' - पक्ष या विपक्ष में दो तर्क दीजिए।

उत्तर: समय बीतने के साथ सब घाव या बुरी स्मृतियाँ धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं-

पक्ष-

हाँ, वक्त के साथ-साथ भारत-पाकिस्तान की कटु स्मृतियाँ समाप्त हो जाएगी।

व्यक्ति परिस्थितियों से समझौता करके जीवन की नई शुरुआत करता है और कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखता।

(अन्य बिंदु भी स्वीकार्य।)

विपक्ष-

बेशक समय बीत जाता है लेकिन मन के घाव, चोटें, विस्थापन आदि का दर्द या किसी भी प्रकार के नुकसान की क्षति पूर्ति संभव नहीं होती।

समय के साथ-साथ कटुता, दर्द आदि भी बढ़ते जाते हैं और मौका पा कर आतंक, दंगों या किसी भी प्रकार की असामाजिक गतिविधियों के रूप में उभर जाते हैं।

(घ) नमक का लाना-ले जाना प्रतिबंधित होते हुए भी कस्टम अधिकारी ने अनुमति क्यों दे दी? तर्कसम्मत उत्तर दीजिए।

उत्तर: लेखिका की बात सुन कर कस्टम अधिकारी भावुक हो उठा।

उसके हृदय में देश प्रेम जाग उठा।

भावनाओं के समक्ष राजनीतिक निर्णय कमज़ोर पड़ जाते हैं।

12. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3×4=12 Marks

(क) पुत्र की चाह में परिवार के लोग ही कन्या को जन्म देने वाली माँ के दुश्मन हो जाते हैं। इस प्रवृत्ति पर 'भक्तिन' पाठ के आधार पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर:

कन्या जननी की उपेक्षा और तिरस्कार, पुत्रवती माता अपना अधिकार समझती है।

भक्तिन ने एक के बाद एक तीन पुत्रियों को जन्म दिया।

अतः सास और जेठानियाँ मुँह बिचका कर उसकी उपेक्षा करती हैं।

(ख) डॉ. आंबेडकर के आदर्श समाज की कल्पना में 'भ्रातृता' का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: आदर्श समाज में स्वतंत्रता और समता होनी चाहिए। यही भ्रातृता है।

समाज में सबको सम भाग प्राप्त हो।

किसी भी वांछित परिवर्तन का लाभ सभी को तुरंत मिलना चाहिए।

सभी को सामाजिक संघर्ष के साधन और अवसर सुलभ होने चाहिए।

भ्रातृता दूध-पानी के मिश्रण जैसी होनी चाहिए।

सभी लोगों में एक दूसरे के प्रति श्रद्धा, प्रेम और सम्मान का भाव होना चाहिए।

भ्रातृता द्वारा हर 'लोकतंत्र' की अवधारणा पूर्ण होगी।

सही अर्थों में लोकतंत्र की साधना भ्रातृता के पश्चात ही संभव।

(ग) "सर्वग्रासी काल की मार से बचते हुए वही दीर्घ जीवी हो सकता है जिसने अपने व्यवहार में जड़ता के स्थान पर निरंतर गतिशीलता बनाए रखी है" - 'शिरीष के फूल' के आधार पर प्रतिपादित कीजिए।

उत्तर: विपरीत परिस्थितियों में जो संघर्ष करता है, जीवन रस से परिपूर्ण होता है, हर स्थिति में जड़ता का, मायूसी का परित्याग करता है वही गतिशील होता है।

भौतिक मोह-माया से अनासक्त असंपृक्त रह कर जो जीवन-पथ पर अग्रसर होता हैं, वे कभी जड़ नहीं हो सकते, निरंतर प्रगतिशील ही होंगे, उर्ध्वमुखी होंगे।

मस्त, फक्कड़ और सरस शिरीष एवं गांधी जैसे लोग ही जड़ता का परित्याग कर गतिशील एवं जीवंत होते हैं।

(घ) 'नमक' कहानी में भारत-पाक की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच प्यार का नमक घुला है" टिप्पणी कीजिए।

उत्तर: एक ज़मीन, एक ज़बान, एक सी सूरतें और लिबास, एक सा अंदाज, गालियाँ भी एक सी होने के उपरांत भी भारत-पाक की जनता आरोपित भेदभावों को सहने के लिए विवश थी जबकि वास्तविकता यह थी कि मानचित्र पर बनावटी लकीर खींच देने से देश तो बँट गए किंतु भावनाएँ नहीं।

जनता पर थोपा गया विभाजन आरोपित तथा कृत्रिम है। प्यार किसी भी प्रकार का बंधन स्वीकार नहीं करता।

प्यार के सम्मुख कानून निष्प्रभावी होता है। भावनाएँ और प्यार राजीतिक निर्णयों को नकार देते हैं।

(ङ) 'निर्धन, साधनहीन और महामारीग्रस्त गाँव में पहलवान की ढोलक मरने वालों को हौसला-हिम्मत देती थी'-इस कथन के आलोक में गाँव की बेबसी का चित्रण कीजिए।

उत्तर: महामारी फैल जाने पर उससे निपटने की व्यवस्था का अभाव।

लोग मरने के लिए अभिशप्त। डॉक्टर, वैद्य, दवाओं आदि की कोई सहायता नहीं।

ऐसे में एकमात्र सहारा पहलवान की ढोलक मरघटी सन्नाटे को तोड़ कर मरते समय भी उनमें जीवन शक्ति का संचार करती है।

13. महिलाओं के अधिकारों और जीवनशैली के बारे में ऐन फ्रेंक के विचारों की समीक्षा जीवनमूल्यों के आधार पर कीजिए। **5 Marks**

उत्तर:

- बालक को जन्म देना या न देना महिलाओं का अधिकार।
- उनका सम्मान सैनिकों की भाँति होना चाहिए।
- उनके अधिकारों का हनन नहीं होना चाहिए।
- महिलाओं ने अपनी ही नादानी के कारण उपेक्षा, कष्ट एवं असम्मान को सहन किया है।
- शिक्षित समाज में स्त्रियों की स्थिति पुरुषों से अच्छी है।
- औरत ही मानव जाति की निरन्तरता बनाए रखती है।
- नारी त्याग एवं ममता की मूर्ति है।
- वह कर्मशील रह कर अपनी सन्तान के लिए सर्वस्व दाँव पर लगा देती है।

14. (क) यशोधर बाबू के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। **5 Marks**

उत्तर: सरल, सादगी पसन्द, सत्यवादी, सन्तुष्ट, ईमानदार।

कर्मठ, समय के पाबन्द, कार्यालय के अन्य साथियों से अच्छे सम्बन्ध।

परम्परावादी, पुराने जीवन-मूल्यों में विश्वास करने वाले, धार्मिक मनोवृत्ति वाले।

आधुनिक जीवन-शैली एवं परिवेश में समायोजित नहीं हो पाते।

आधुनिक चकाचौंध से अप्रभावित।

(ख) "यशोधर बाबू दो भिन्न कालखंडों में जी रहे हैं"- पक्ष या विपक्ष में सोदाहरण तर्क दीजिए। **5 Marks**

उत्तर: पक्ष-

ग्रामीण एवं नगरीय परिवेश की तुलना करते समय बहुधा वे द्वंद्वात्मक मनःस्थिति के होते हैं।

नए और पुराने के बीच संतुलन नहीं बिठा पाने का संघर्ष।

उनके संस्कार और आदर्श वर्तमान शैली से मेल नहीं खाते।

विपक्ष-

वे सिद्धांतवादी थे। सारा जीवन उन्हीं पर चलते रहे।

आधुनिक जीवन-शैली को अपने पर हावी नहीं होने देते।

उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला। समय के पाबंद रहें।

वे सादगी पसंद थे और जीवन भर उसका पालन भी किया।

पैसे को कभी महत्व नहीं दिया। ईमानदारी की कमाई से संतुष्ट रहे।भी ममता भरा भाव मिलना

CBSE Class 12

Hindi

Previous Year Question Paper 2015

Series: SSO/C **Code no. 2/1**

• कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 7 हैं।

• प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर लिखें।

• कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।

• कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।

• इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जायेगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि क उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

हिन्दी(केन्द्रिक)

HINDI (CORE)

निर्धारित समय :3 घंटे **अधिकतमअंक:100**

खण्ड-'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बड़ी कठिन समस्या है। झूठी बातों को सुनकर चुप हो रहना ही भले आदमी की चाल है। परन्तु इस स्वार्थ और लिप्सा के जगत में जिन लोगों ने करोड़ों के जीवन-मरण का

भार कंधे पर लिया है वे उपेक्षा भी नहीं कर सकते। ज़रा सी गफलत हुई कि सारे संसार में आपके विरुद्ध ज़हरीला वातावरण तैयार हो जाएगा। आधुनिक युग का यह एक बड़ा भारी अभिशाप है कि गलत बातें बड़ी तेजी से फैल जाती हैं। समाचारों के शीघ्र आदान-प्रदान के साधन इस युग में बड़े प्रबल हैं और धैर्य और शांति से मनुष्य की भलाई के सोचने के साधन अब भी बहुत दुर्बल हैं। सो, जहाँ हमें चुप होना चाहिए, वहाँ चुप रह जाना खतरनाक हो गया है। हमारा सारा साहित्य नीतिऔर सच्चाई का साहित्य है। भारतवर्ष की आत्मा कभी दंगा-फसाद और टटे की पसंद नहीं करती परन्तु इतनी तेजी से कूटनीति और मिथ्या का चक्र चलाया जा रहा है कि हम चुप नहीं बैठ सकते। अगर लाखों-करोड़ों की हत्या से बचना है तो हमें टंटे में पड़ना ही होगा। हम किसी को मारना नहीं चाहते पर कोई हम पर अन्याय से टूट पड़े तो हमें ज़रूर कुछ करना पड़ेगा। हमारे अंदर जो हया है और अन्याय करके पछताने की जो आदत है उसे कोई हमारी दुर्बलता समझे और हमें सारी दुनिया के सामने बदनाम करे यह हमसे नहीं सहा जाएगा। सहा जाना भी नहीं चाहिए। सो, हालत यह है कि हम सच्चाई और भद्रता पर दृढ़ रहते हैं और ओछे वाद-विवाद और दंगे-फसादों में नहीं पड़ते। राजनीति कोई अजपा-जाप तो है नहीं। यह स्वार्थों का संघर्ष है। करोड़ों मनुष्यों की इज्जत और जीवन-मरण का भार जिन्होंने उठाया है वे समाधि नहीं लगा सकते। उन्हें स्वार्थों के संघर्ष में पड़ना ही पड़ेगा। और फिर भी हमें स्वार्थी नहीं बनना है।

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1 Mark

उत्तर: स्वार्थ और संघर्ष।

(ख) लेखक ने किसे कठिन समस्या माना है और क्यों? 2 Marks

उत्तर: झूठी बातों को सुन कर भी कुछ नहीं कर पाना। क्योंकि कुछ भी कहने और विरोध करने पर सच बोलने वाले व्यक्ति के विरोध में वातावरण को तैयार करना।

(ग) आधुनिक युग का अभिशाप किसे माना गया है और क्यों? 2 Marks

उत्तर:

समाचार के तेज़ साधनों की सरलता।

शांति की कमी।

(घ) चुप रहना कब खतरनाक होता है, कैसे? **2 Marks**

उत्तर:

दंगा-फसाद को देख कर चुप रहना खतरनाक है।

जब हम अपनी जिम्मेदारियों को नहीं समझते।

(ङ) भारतवर्ष की कोई एक विशेषता गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। **2 Marks**

उत्तर:

- भारत वर्ष की आत्मा कभी किसी दंगा-फसाद और टंटे को पसंद नहीं करती।
- •अन्याय का विरोध, सच्चाई और भद्रता पर दृढ़ता।

(च) लेखक ने संघर्ष करना क्यों आवश्यक माना है? **2 Marks**

उत्तर: संघर्ष से बदलाव संभव। स्वार्थी व्यक्तियों से संघर्ष कर आम आदमी को हक दिलाना।

(छ) आशय स्पष्ट कीजिए: **2 Marks**

'राजनीति कोई अजपा-जाप तो है नहीं।'

उत्तर:

- ध्यानस्थ रहकर अपने आराध्य का नाम लेना।
- लगातार नाम (आराध्य, ब्रह्म) का जाप करना।

(ज) विग्रह कर समास का नाम लिखिए - जीवन-मरण **1 Mark**

उत्तर: जीवन और मरण - द्वंद्व समास।

(झ) मिश्र वाक्य में बदलिए- **1 Mark**

'झूठी बातों को सुनकर चुप रहना ही भले आदमी की चाल है।'

उत्तर: भले आदमी की यह चाल है कि झूठी बातों को सुनकर चुप रह जाए।

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 5 Marks

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख-दुख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है।
कब फूटा गिरि के अंतर से? किस अंचल से उतरा नीचे।
किस घाटी से बह कर आया समतल में अपने को खींचे।
निर्झर में गति है जीवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन एक सिर्फ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता,
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।
लहरें उठती हैं, गिरती हैं, नाविक तट पर पछताता है,
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।
निर्झर कहता है बढ़े चलो ! देखो मत पीछे मुड़ कर,
यौवन कहता है बढ़े चलो ! सोचो मत क्या होगा चल
कर।
चलना है केवल चलना है ! जीवन चलता ही रहता है,
रुक जाना है मर जाना है, निर्झर यह झर कर कहता है।

(क) जीवन की तुलना निर्झर से क्यों की गई है?

उत्तर: निर्झर की तरह सतत प्रवाहमान है।

(ख) जीवन और निर्झर में क्या समानता है?

उत्तर: मस्ती और गतिवान।

(ग) जीवन का उद्देश्य क्या होना चाहिए?

उत्तर: कठिनाइयों और संघर्षों के साथ अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना।

(घ) 'तब यौवन बढ़ता है आगे!' से क्या आशय है?

उत्तर: जिंदगी में सामर्थ्य व पुरुषार्थ ही आगे बढ़ता है।

(ङ) कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: • जीवन आगे बढ़ने का नाम।

• सुख-दुख जीवन की सौगात।

खण्ड-'ख'

3. नीचे लिखे विषय में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : 5 Marks

(क) हिन्दी हृदय की भाषा

हिंदी भाषा बहुत पुरानी है और संस्कृत के विकास की सीधी रेखा है। जैसे यह दुनिया की सबसे पुरानी धार्मिक और साहित्यिक परंपराओं में से एक है - ऐसी परंपराएं जिन्होंने अन्य धर्मों और कला के कार्यों को प्रभावित किया है, चाहे हम इसे महसूस करें या नहीं। इस प्रकार विश्व की संस्कृतियों के ऐतिहासिक विकास में हिंदी अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण है और न केवल सम्मान के योग्य है, बल्कि अध्ययन करने योग्य भी है। विश्व इतिहास या भाषाओं में रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति हिंदी के विषय पर थोड़ा गहन अध्ययन कर सकता है। हिंदू भाषा वो

शब्दों का मध्यम हैं जिससे हम हमारे दिल में जो भी हैं बता सकते हैं। हिंदी केवल भाषा नहीं एक भाव हैं, जिससे अपनत्त्व का एहसास होता है। हमारी हिंदी सिनेमा को ही देख लीजिये जब भी हम उसे देखते है to लगता हैं, कि खुद के जीवन को देख रहे है। हिंदी के बारे में कुछ जानने से आपके अनुभव के लिए हजारों फिल्में तुरंत खुल जाती हैं - ऐसी फिल्में जिनका भारत और उसके बाहर जबरदस्त सांस्कृतिक प्रभाव रहा है। अंग्रेजी को केवल एक भाषा के रूप में स्वीकार करें। अंग्रेजी भारत की एकमात्र भाषा है। जब हम हिंदी को मातृभाषा का दर्जा देते हैं, तो यह भावना हमारे स्वभाव में प्रकट होनी चाहिए। हिंदी हमारी संप्रभुता है। भारत की उत्पत्ति। अतः कहा जा सकता है कि हिन्दी हृदय की भाषा है।

आज दुनिया के करीब 44 ऐसे देश हैं जहां हिंदी बोलने का चलन बढ़ता जा रहा है। सवाल यह है कि जब हिंदी की वैश्विक स्वीकार्यता बढ़ रही है। हिंदी भाषा हमारी जन्नि हैं, हमारी माँ हैं, इसलिए वह हमको और हम उनको समझते हैं।

(ख) भारत युवाओं का देश

एक तरफ हमारा इतिहास ऐसे युवाओं के उदाहरणों से भरा पड़ा है, जिनका जिक्र मात्र से ही हर भारतीय गर्व से भर जाता है। जैसे पृथ्वीराज चौहान, स्वामी विवेकानंद, चंद्रशेखर आजाद के महान बलिदान, शहीद भगत सिंह, मंगल पांडे। हम अपना वर्तमान पिछली पीढ़ियों के उन युवाओं के लिए ऋणी हैं जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। दूसरी तरफ, मैरी कॉम, अभिनव बिंद्रा, विजेंद्र सिंह जैसे आज के चमकते सितारे भारत को ओलंपिक खेलों में गौरव वापस लाने वालों में से हैं। सचिन तेंदुलकर, कल्पना चावला, सुबीर चौधरी, सत्या नडेला, सभी ने दुनिया को अपना करिश्मा दिखाया है।हमारे भारत के प्राधन मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने एक बार कहा था, "यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने देश के युवाओं को कैसे देखते हैं। उन्हें सिर्फ नए जमाने का वोटर समझना बड़ी भूल है, वे नए जमाने की ताकत हैं! भारत की बड़ी आबादी के साथ इसका फायदा यह है कि यहां बड़ी संख्या में युवा आबादी है। 2020 तक, भारत में कामकाजी उम्र की आबादी में 47 मिलियन से अधिक लोगों की वृद्धि होने की उम्मीद है, यह संख्या चीन या अमेरिका से बहुत आगे है। अगर हम देश के 4 उनके पावरहाउस को सही दिशा में उपयोग कर सकते हैं, तो देश अनकही ऊंचाइयों तक पहुंच सकता है। युवा भारतीयों की रचनात्मक क्षमता, उनके उत्साह, उत्साह, ऊर्जा और सूचना प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और विज्ञान के क्षेत्र में बहुमुखी प्रतिभा पहले ही दुनिया के लिए चमत्कारिक साबित हो चुकी है।हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने एक बार कहा था: "प्रासंगिक

कौशल और ज्ञान के बिना युवा वास्तव में अर्थव्यवस्था को पटरी से उतार सकते हैं और देश के लिए और अधिक परेशानी पैदा कर सकते हैं"। युवा शक्ति देश की वह सबसे बड़ी शक्तियों में से एक है और यह केवल भारत के युवाओं के कारण है कि भारत धीरे-धीरे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ और सुपर देशों में से एक बन रहा है। हम यही कहना चाहते हैं कि,भारत एक बहुत ही युवा देश है। भारत की युवा शक्ति, इस युवा पीढ़ी का कौशल और इच्छा शक्ति देश को दुनिया में एक नई पहचान दिलाने में मदद करेगी।

(ग) सबका साथ सबका विकास

यह नारा लोगों के बीच बढ़ा जाना - पहचान हैं, क्युंकि यह नारा हमारे प्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने दिया हैं। जिसमें वे कहते है कि, "आज मैं सभी से अपील करता हूं कि हमें अल्पसंख्यकों पर उस धोखे को तोड़ना है। हमें उनका विश्वास हासिल करना है। हमें जाति, संप्रदाय और धर्म के आधार पर भेदभाव किए बिना कंधे से कंधा मिलाकर चलना है। हम 130 करोड़ लोगों के लिए हैं। ये हमारी प्राथमिकताएं और जिम्मेदारी होनी चाहिए। 'सबका साथ, सबका विकास और अब सबका विश्वास। यह हमारा मंत्र है। वे कहते हैं कि वे कोई कसर नहीं छोड़ेंगे देश को सुखमय बनाने में और वे भारत के सभी नागरिकों के लिए काम करेंगे, नए - नए नीतियों को लागू करेंगे जो देश के हित में होगा, जो सबका भला करेगा। "'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' एक ऐसा मंत्र है जो भारत के हर क्षेत्र के लिए विकास का मार्ग दिखाता है। मोदी जी कहते हैं कि, वे हम भारतवासियों को विश्वास दिलाते है कि नई सरकार हमारे सभी कार्यों को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी। वह हमारे सपने और उनसे जुड़ी उम्मीदों पर खड़ा उतरेंगे। स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहले कभी किसी राजनीतिक नेता ने समावेश के साथ एकता का इतना शानदार और परिपक्व संदेश नहीं दिया। उन्होंने इसके बारे में इसलिए सोचा क्युंकि आजकल कुछ मंत्री भ्रष्टाचार, घूस जैसे कार्यों में पाएँ जाते हैं, लोगों मतदान के समय मतो में घोटाले करते हैं। इन सबको बंद करने के लिए हमें एकजुट हों कर लड़ना होगा और इसको जड़ से ख़तम करना होगा।

(घ) भारतीय नारी

उत्तर: <u>भारतीय नारी</u>

प्रस्तावना- यदि मानव समाज को एक गाड़ी मान लिया जाये तो स्त्री-पुरुष उसके दो पहिये हैं। दोनों स्वस्थ और मजबूत होने आवश्यक हैं। दोनों में से यदि एक भी कमजोर हुआ तो गाड़ी-

गाड़ी न रहकर ईंधन हो जायेगी। 'चलती का नाम गाड़ी है। समाज का कर्तव्य है कि वह नारी और नर, समाज के इन दोनों पक्षों को सबल और उन्नत बनाने का प्रयत्न करे।

भारतीय नारी का अतीत-प्राचीन काल में भारत के ऋषि-मुनियों ने नारी के महत्त्व को भली-भांति समझा था। उस समय यहाँ नारी का सर्वांगीण विकास हुआ था। सीता जैसी साध्वी, सावित्री जैसी पतिव्रता, गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों ने इस देश की भूमि को अलंकृत किया था। इनका नाम लेते ही हमारा मस्तक गौरव से ऊँचा हो जाता है। उस समय यहाँ का आदर्श था-'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता। अर्थात जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं।

मध्यकाल में भारतीय नारी-समय परिवर्तित हुआ। हमारे समाज में अनेक कुप्रथा फैलनी शुरू हुईं और नारी का महत्त्व घटना शुरू हुआ। स्त्री देवी न रह कर विलास की सामग्री बनने लगी। उसके प्रति श्रद्धा घटती चली गयी। विदेशियों के आगमन ने उसमें और भी नमक- मिर्च लगाया। परिणाम यह हुआ कि नारी पुरुष की एक ऐसी बपौती बन गयी कि जिसको वह घर की चारदीवारी के अन्दर बन्द करके सुरक्षित रखने लगा। उसे न शिक्षा का अधिकार रहा, न बोलने का। पुरुष के किसी भी काम में दखल देना उसके लिए अपराध हो गया।

वह पुरुष की अतृप्त वासनाओं को तृप्त करने का साधन मात्र रह गयी। नारी जाति का इतना घोर पतन हुआ कि वह स्वयं अपने को भूल गयी। समाज में उसका भी कुछ महत्त्व है- इसका नारी को स्वयं भी ध्यान न रहा। उसके हृदय से विकास की भावना ही लुप्त हो गयी। पति की मनस्तृप्ति करने, उसकी उचित-अनुचित प्रत्येक इच्छा के सामने सिर झुकाने के लिए मानो विधाता ने उसकी सृष्टि की हो। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने नारी के उस स्वरूप का बड़ा ही स्वाभाविक वर्णन किया है-

“अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आँखों में पानी।"

नारी की वर्तमान स्थिति- बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ ही सामाजिक आन्दोलन भी आरम्भ हुआ। समाज में एक जागृति की लहर दौड़ी। राजा राममोहन राय तथा महर्षि दयानन्द के द्वारा समाज की कुप्रथाओं को समाप्त किया जाने लगा। नारी समाज की ओर विशेष ध्यान दिया गया। आगे चलकर महात्मा गांधी के नेतृत्व में सामाजिक क्रान्ति हुई। जनता ने नारी के महत्त्व को समझना शुरू किया तथा उसके बन्धन शिथिल होने

लगे। नारी ने पुन: शिक्षित होना सीखा। यहाँ तक कि राष्ट्रीय आन्दोलन में अनेक नारियों ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

सरोजिनी नायडू तथा विजयलक्ष्मी पण्डित जैसी मान्य महिलाओं ने आगे बढ़कर नारी समाज का पथ-प्रदर्शन किया। 1947 ई० में भारत स्वतन्त्र हुआ, तब से भारत में सभी क्षेत्रों में विकास कार्य प्रारम्भ हुआ। समाज के दोषों को दूर करने का भरसक प्रयत्न शुरू हुआ। नारी समाज में कुछ जागृति हुई। सबसे महत्त्वपूर्ण घटना यह हुई कि भारत के संविधान में नारी को पुरुषों के समान अधिकार दिये गये।

इस प्रकार की वैधानिक समानता नारी को सम्भवत: प्रथम बार मिली थी। हर्ष है कि शिक्षा, कला, विज्ञान तथा राजनीति आदि क्षेत्रों में आज नारी का प्रवेश है। अनुभव इस बात को बताता है कि नारी किसी भी दृष्टि से पुरुष से कम नहीं है। आज हम देखते हैं कि भारत के स्त्री समाज में तेजी से जागृति आ रही है।

उपसंहार- बिना नारी के विकास के यह समाज अधूरा है। जैसे पत्नी-पति की अर्धांगिनी है, ठीक इसी प्रकार नारी समाज का अर्द्धांग है। आधे अंग के अस्वस्थ तथा अविकसित रहने पर पूरा अंग ही रोगी और अविकसित रहता है। यदि मनुष्य शिव है तो नारी शक्ति है, यदि पुरुष विश्वासी है तो नारी श्रद्धामयी है, यदि पुरुष पौरुषमय है तो नारी लक्ष्मी है-किसी भी दृष्टि से वह पुरुष से कम नहीं है।

वह पुत्री के रूप में पोषणीय, पत्नी के रूप में अभिरमणीय तथा माता के रूप में पूजनीय है। उसमें संसार की अपूर्व शक्ति निहित है। प्रसन्न होने पर वह कमल के समान कोमल और क्रुद्ध होने पर साक्षात चण्डी भी है। वस्तुत: नारी अनेक शक्तियों से युक्त अनेकरूपा है, उसके कल्याण एवं विकास की कामना करना प्रत्येक भारतीय का पवित्र कर्तव्य है।

4. सार्वजनिक पद पर बने व्यक्तियों में व्याप्त भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कुछ उपाय सुझाते हुए किसी दैनिक पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए । 5 Marks

उत्तर:

सेवा में,

संपादक महोदय,

"द ट्रिब्यून"

मेरठ,

विषय : सार्वजनिक पद पर बने व्यक्तियों में व्याप्त भ्रष्टाचार को रोकने के सम्बन्ध में।

महोदय,

आज हमारे देश में भ्रष्टाचार सारी सीमाएं लांघ रहा है। प्रष्टाचार देश को घुन की तरह खाए जा रहा है। राष्ट्रीय चरित्र में कमी होने के कारण भ्रष्टाचार सब को निगलने को तैयार खड़ा है। देश में हरेक आदमी की दौड़ लगी हुई है-धन पाने की। अनैतिक ढंग से लोग अधिक से अधिक धन इकट्ठा कर रहे हैं।

भ्रष्टाचार जैसे पाप को रोकने के लिए कुछ भी करना चाहिए। कड़ा से कड़ा दण्ड भी देना चाहिए - यहां तक कि मृत्यु दण्ड भी। प्रष्टाचारी को समाज में कोई जगह नहीं मिलनी चाहिए। चौराहे में खड़े करके उसे कोड़े लगाए जाने चाहिए।

भ्रष्टाचार से पीड़ित देश कभी सुख नहीं पा सकता। इसलिए देश की पुलिस को भी इस दिशा में अधिक काम करना चाहिए। हालांकि पुलिस ने इस दिशा में कई सराहनीय कार्य किए हैं, कई स्कैंडलों का पता लगाया है लेकिन अभी भी इस संबंध में बहुत से आवश्यक कार्य करने जरुरी है। सरकार को इस संबंध में गंभीरता और कठोरता से निपटना चाहिए ताकि देश अनैतिक और भ्रष्टाचारी समाज द्रोहियों से बच सके और जनता को न्याय मिल सके।

आपका,

सुमेश खन्ना 31-B, माडल टाऊन,

मेरठ।

दिनांक-22 जुलाई 2012

अथवा

सड़कों पर होने वाली दुर्घटना से बचाव के लिए परिवहन विभाग के सचिव को पत्र लिखिए ।

सेवा में,

सचिव महोदय,

परिवहन विभाग,

दिल्ली,

विषय: बढ़ती सड़क दूरघटनाएं से बचाव हेतु पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपका ध्यान बढ़ती सड़क दूरघटनाओं की ओर आकर्षित कराना चाहता हूं। आए दिन किसी की मौत या सड़क दुर्घटना की ख़बर सुनाई देती हैं। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप सड़क नियम लागू करे ताकि वह उन नियमों को मानकर वाहन चलाएं और कम दूरघटनाएं हो। लोगो को वाहन चलाते वक्त मोबाइल फोन पर बात करने से रोका जाए उन्हें हेलमेट लगाने के लिए कहा जाएं। कड़े से कड़े कदम उठाए जाए।

मुझे आशा है कि आप मेरी इस विनती को स्वीकार करेंगे और हो रही दुर्घटना को रोकने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

राजीव

5. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए: 5 Marks

(क) संपादकीय विभाग के दो प्रमुख कार्यों को लिखिए।

उत्तर: •संपादन

• प्रकाशन।

(ख) भारत में मूक फिल्म बनाने का श्रेय किसको जाता है?

उत्तर: दादा साहेब फाल्के।

(ग) भारत में पहला छापाखाना कब और कहाँ खुला?

उत्तर: सन् 1556, गोवा में।

(घ) 'खोजपरक पत्रकारिता' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: जिन सूचनाओं और घटनाओं को छिपाने या दबाने का प्रयास किया जाता हे उसकी गहराई से छान बीन करके सामने लाना।

(ङ) पत्रकारिता में 'मुखड़ा' किसे कहते हैं?

उत्तर: मुख्य समाचार को।

6. 'मज़दूरों की समस्या' अथवा 'शहरों में पेयजल समस्या' विषय पर एक फीचर तैयार कीजिए । **5 Marks**

उत्तर:

मजदूरों की समस्या

आज मजदूरों की समस्याओं में धीरे-धीरे बढ़ोतरी होते जा रही हैं। मजदूरों की समस्या भारत में भी बड़ी बनती जा रही हैं। जिस प्रकार पहले मजदूरों का शोषण किया जाता था उसी प्रकार आज भी मजदूरों का शोषण किया जा रहा है।मजदूरों से फैक्ट्रियों में पूरा काम चला लिया जाता है परंतु उन्हें मजदूरी दी जाती है। इसी कारण भारत में शिक्षा की कमी है। क्योंकि मजदूरों का कम दी जाती है इसी वजह से पैसे के अभाव के कारण वह अपने बच्चों को शिक्षित नहीं कर पाते।

मजदूरों के लिए न्यूनतम मजदूरी का कानून बनाया गया है परंतु इस कानून का पालन नहीं किया जाता और सरकार भी इस उल्लंघन पर ध्यान नहीं देती।

देश में आज भी बंधुआ मजदूरी प्रणाली अधिनियम का उल्लंघन होता है। लोग आज भी मजदूरों को बंधुआ मजदूर बना लेते हैं।

आज भी महिला मज़दूरों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। लैंगिक भेदभाव किया जाता है। महिलाओं को कम वेतन व पुरुषों को ज्यादा वेतन दिया जाता है। पुरुषों व महिलाओं में भेदभाव किया जाता है। महिलाओं से 10 से 12 घंटे काम कराया जाता है जो कि उचित नहीं है और उनको कम वेतन भी दिया जाता है।

कम वेतन दिए जाने के कारण वह अपने बच्चों को शिक्षित नहीं कर पाते और उन्हें शिक्षा देने के बजाय बाल मजदूरी में लगा देते हैं और उनका भविष्य बर्बाद हो जाता है। जिससे अर्थव्यवस्था पर भी असर पड़ता है क्योंकि देश के आने वाली युवा पीढ़ी बाल मज़दूरी का शिकार हो जाती हैं।

इन समस्याओं पर सरकार को ध्यान देना चाहिए। इन समस्याओं के लिए सरकार को अधिनियम लागू करने चाहिए व इनके उल्लंघन करने वालों को सजा देनी चाहिए। महिलाओं को अधिक वेतन देने को कहा जाना चाहिए। लैंगिक भेदभाव पर रोक लगनी चाहिए।

<u>शहरों में पेयजल समस्या</u>

शहरों में पेयजल समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। शहरों का कंक्रीटीकरण होने के कारण कच्ची भूमि निरंतर कम होती जा रही है, जिससे बारिश का जो भी जल आदि होता है वह भूमि में नहीं समा पाता और भूमिगत जलस्तर गिरता जाता है।

जो शहर नदियों के किनारे बसे हैं, उन नदियों में औद्योगिक कारखानों द्वारा अपविष्ट प्रवाहित किये जाने के कारण नदियां प्रदूषित हो चली हैं और उनका जल भी पीने योग्य नहीं रह गया है। पानी के अन्य प्राकृतिक स्रोत जैसे कि झील, तालाब, नहर, भूमिगत जल आदि निरंतर सूखते जा रहे हैं, अथवा समाप्त हो चले हैं, पानी के संकट को बढ़ा रहे हैं।

भारत के गाँवों में रोजगार की कमी के कारण लोग शहरों की तरफ पलायन कर गए हैं और शहरों की आबादी निरंतर बढ़ रही है। आबादी के अनुपात में पेयजल के स्रोत और साधन नहीं

बढ़ रहे, जिससे पेयजल समस्या बढ़ती ही जा रही है। मुख्यतः शहरों की गरीब बस्तियों में पेयजल की समस्या विकराल रूप धारण कर लेती है।

इस समस्या के समाधान के लिए आवश्यक है कि एक विस्तृत योजना तैयार की जाए। लोगों में पानी को बचाने के प्रति जागरूकता पैदा की जाए। नदियों की स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाए। शहर में कंक्रीटीकरण की एक सीमा निर्धारित की जाये ताकि बाग-बगीचे, पार्क,खेत आदि के रूप में भूमि पर्याप्त उपलब्ध रहे जलस्तर नीचे न गिरे।

पानी के नये-नये स्रोत को खोजकर इस समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है।

7. 'भारत में तकनीकी विकास' अथवा 'सुनसान होते गाँव' विषय पर एक आलेख तैयार कीजिए। 5 Marks

'भारत में तकनीकी विकास'

भारत में आज वर्तमान में तकनीकी विकास को देखें तो यह बहुत आगे निकल चुका है। आधुनिक तकनीकी नए-नए आविष्कार करती हैं। भारतीय तकनीकी बहुत विकास कर चुकी है। आज जीवन में हर परेशानी का हल ढूंढने के लिए तकनीकी का इस्तेमाल करना पड़ता है।शिक्षा, चिकित्सा, ऊर्जा निर्माण तथा अन्य क्षेत्रों में विज्ञान के विकास से ही जीवन आसान हो पाया है। जीवन में कठिनाइयां कम हो गई है। चिकित्सा, शिक्षा, नौकरियां पर्यटन आदि में तकनीकी की भूमिका को देखा जा सकता है। किस प्रकार तकनीकी ने विकास किया है।तकनीकी ने राष्ट्र की सुरक्षा और विकास में बहुत सहायता की है। बॉर्डर पर लड़ने वाले सैनिको के लिए बनाए जाने वाले हथियार तकनीकी की ही देन है।तकनीक आज बहुत विकास कर चुकी है। तकनीक के बिना जीवन असंभव है। आज शिक्षा में तकनीक का प्रयोग किया जाता है। कोरोना काल में शिक्षा के लिए तकनीक का ही प्रयोग किया गया। शिक्षा के लिए कंप्यूटर, फोन व लैपटॉप आदि जैसे उपकरणों ने बहुत सहायता की है ।यह उपकरण तकनीकी की ही देन हैं।तकनीकी ने देश में बदलाव लाया है। ओद्योगीकरण में मशीनें तकनीकी की ही देन हैं।

पहले सभी काम बिना फोन के हो जाते थे लेकिन आज हर काम के लिए फोन की आवश्यकता होती है। शिक्षा के लिए भी फोन व लेपटॉप की आवश्यकता होती है। तकनीकी ने जीवन में अपना एक अहम स्थान बना लिया है। आज तकनिकी के बिना जीवन असंभ**व है।**

'सुनसान होते गाँव

भारत गाँवों का देश है। भारत की अधिकतम जनता गाँवों में निवास करती हैं। महात्मा गाँधी जी कहते थे कि वास्तविक भारत का दर्शन गाँवों में ही सम्भव है जहाँ भारत की आत्मा बसती है। गांव देश की उन्नति में अपना पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी कहते थे देश की समृद्धि का रास्ता गांवों के खेतों एवं खलिहानों से होकर गुजरता है। स्वतंत्र भारत की प्रथम जनगणना 1951 में ग्रामीण एवं शहरी आबादी का अनुपात 83 प्रतिशत एवं 17 प्रतिशत था।2001 की जनगणना में ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या का प्रतिशत 74 एवं 26 प्रतिशत हो गया। इन आंकड़ों के आधार पर भारतीय ग्रामीण लोगों का शहरों की ओर पलायन तेज़ी से बढ़ रहा है। गांव से शहरों की तरफ पलायन करने का सिलसिला नया नहीं है गांवों में कृषि भूमि के लगातार कम होने, आबादी बढ़ने और प्राकृतिक आपदाओं के कारण रोज़ी-रोटी की तलाश में ग्रामीण गांव से शहरों की तरफ मुंह कर रहे हैं गांव में बुनियादी सुविधाओं की कमी होने के कारण रोज़गार ,शिक्षा,स्वास्थ्य, बिजली, पानी ,सड़क ,आवास ,संचार स्वच्छता ,जैसी बुनियादी सुविधाएं शहरों की तुलना में कम है रोज़ी-रोटी की तलाश में ग्रामीणों को शहरों-कस्बों की तरफ रुख करना पड़ा। इन बुनियादी कमियों के साथ-साथ गांवों में भेदभावपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के चलते शोषण और उत्पीड़न से तंग आकर भी बहुत से लोग शहरों की तरफ पलायन कर लेते हैं।

गांवों को शहरों के समतुल्य बनाने के लिए उच्च या तकनीकी शिक्षा के संस्थान खोलना, स्थानीय

उत्पादों के मद्देनजर ग्रामीण अंचलों में छोटे उद्योगों को बढ़ावा देना, परिवहन सुविधा, सड़क, चिकित्सालय, शिक्षण संस्थाएं, विद्‌युत आपूर्ति, पेयजल सुविधा, रोज़गार तथा उचित न्याय व्यवस्था आदि की वयवस्था की जाय। खेती के पारंपरिक बीज खाद और दवाओं को उपलब्ध कराया जाए, जिनके चलते गांवों से युवाओं के पलायन को रोका जा सकता है, शिक्षा का अधिकार कानून के होने के बाद भी शिक्षा का स्तर पहले जैसा ही बना हुआ है। इस कानून के माध्यम से गांवों के स्कूलों की स्थिति, अध्यापकों की उपस्थिति और बच्चों के दाखिले में वृद्धि का लक्ष्य रखा गया है। शिक्षा से असमानता, शोषण, भ्रष्टाचार तथा भेदभाव में कमी होगी

जिसके फलस्वरूप ग्रामीण जीवन बेहतर बनेगा लोक कल्याण एवं ग्रामीण पलायन रोकने के लिए सरकार द्वारा योजनाएं लागू तो की जाती है लेकिन ये योजनाएं भ्रष्ट व्यक्तियों के हाथों में चली जाती है जिससे आम जनता को उसका लाभ नहीं मिल पाता।

गांव से शहर में पलायन होने से शहर के संसाधन

जल्दी समाप्त हो जाते हैं। जो समस्या पैदा कर

सकते है। शहर में आबादी के बढ़ते दबाव को

रोकने के लिए सरकार व प्रशासन को गांवों में

रोज़गार पैदा करने चाहिए जिससे गांवो से हो रहे शहरो के पलायन को रोका जा सके।

खण्ड-'ग'

8. प्रस्तुत काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 8 Marks

हो जाए न पथ में रात कहीं

मंजिल भी तो है दूर नहीं

यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है !

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

बच्चे प्रत्याशा में होंगे

नीड़ों से झाँक रहे होंगे

यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितना चंचलता है !

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

(क) पंछी क्या सोच रहा है और क्यों?

उत्तर:

- घर पहुंचने में देर न हो जाए। क्योंकि बच्चे राह देख रहे होंगे।
- उनसे मिलने की बेचैनी।

(ख) बच्चे नीड़ों से क्यों झाँकते होंगे?

उत्तर:

- अपने माता-पिता की प्रतीक्षा में।
- भोजन करने की आशा में।

(ग) कवि को किस बात की चिंता है और क्यों?

उत्तर: • रास्ते में कोई व्यवधान न हो जाए।

• समय का तेजी से बीतना।

(घ) चिड़ियाँ चंचल क्यों हो रही हैं?

उत्तर:

- अपने बच्चे को याद कर।
- अपने घोंसले में जल्दी से जल्दी पहुँचने की इच्छा के कारण।

अथवा

अट्टालिका नहीं है रे

आतंक भवन

सदा पंक पर ही होता

जल-विप्लव-प्लावन

क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से

सदा छलकता नीर

रोग-शोक में भी हँसता है

शैशव का सुकुमार शरीर।

(क) कवि आतंक भवन किसे मानता है और क्यों?

उत्तर:

धनी वर्ग को।

शोषण करने वाले को।

ऊँचे-ऊँचे घरों में रहने वाले लोगों को।

(ख) 'पंक' और 'जलज' का प्रतीकार्थ क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

पंक-कीचड़, शोषित वर्ग

जलज-कमल, शोषक वर्ग।

(ग) भाव स्पष्ट कीजिए-

'सदा पंक पर ही होता

जल-विप्लव-प्लावन।'

उत्तर:

सामाजिक परिवर्तन शोषित वर्ग द्वारा आंदोलन से होता है।

अत्याचार ,अन्याय तथा हिंसा का शिकार भी शोषित वर्ग ही होता है।

(घ) शैशव का क्या अर्थ है? इसका यहाँ किस संदर्भ में प्रयोग हुआ है?

उत्तर: शिशु।

कठिनाइयों में भी शिशु अनजान बनकर खुश रहता है।

शोषित वर्ग भी कठिनाइयों में मुस्कुराता है।

9. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 6 Marks

बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से

कि जैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

मल दी हो किसी ने

नील जल में या किसी की

गौर झिलमिल देह

जैसे हिल रही हो।

(क) 'उत्प्रेक्षा अलंकार' के दो उदाहरण चुनकर लिखिए।

उत्तर:

लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो।

गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो।

(ख) कविता के भाषिक सौन्दर्य पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर:

सूर्योदय से पहले के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण।

गतिशील शब्द-चित्र।

(ग) काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

सूर्योदय होने के दृश्य का वर्णन।

सूर्य ऐसे निकल रहा है जैसे किसी ने काली सिल को केसर से धो दिया है। या किसी ने काली सिल पर लाल खडिया मल दी हो।

नीले आसमान से सुरज ऐसे उदित हो रहा है जैसे कोई गौर वर्णीय महिला नीले जल से बाहर आ रही हो।

अथवा

सबसे तेज बौछारें गई भादो गया

सवेरा हुआ

खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा

शरद आया पुलों को पार करते हुए

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए

घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से

चमकीले इशारों से बुलाते हुए

पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुण्ड को।

(क) शरद ऋतु के आगमन की उपमा किससे दी गई है और क्यों?

उत्तर: खरगोश की आँखों से, चमकीली साईकिल से

ये दोनों अपनी सुंदरता से किसी को भी आकर्षित कर लेते हैं।

(ख) 'शरद आया पुलों को पार करते हुए' - पंक्ति में कौन सा अलंकार है? प्रयुक्त अलंकार का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: मानवीकरण।

शरद ऋतु डाकिये के समान साइकिल पर सवार घंटी बजाते हुए पुलों को पार करते हुए उत्साह के साथ आ रही है।

(ग) काव्यांश में प्रयुक्त बिम्ब का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: बिंबों के माध्यम से सौंदर्य व अनुभूति का सहज चयन।

चित्र-बिंब।

ध्वनि-बिंब।

गतिशील बिंब।

10. नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(क) कविता और बच्चे को 'कविता के बहाने' समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं? **3 Marks**

उत्तर: कविता में कल्पना द्वारा उड़ने की सीमा नहीं होती है वैसे ही बच्चों की कल्पना की भी कोई सीमा नही होती। दोनों कल्पना द्वारा कहीं भी किसी समय जा सकते हैं।

(ख) 'परदे पर वक्त की कीमत है' - कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नज़रिया किस रूप में रखा है? **3 Marks**

उत्तर:

- संवेदनशील रह कर मनुष्य का वस्तु के रूप में प्रयोग का विरोध।

- बाजार का मुनाफ़े से मतलब लाभ कमाना।
- बाजार के पास संवेदना नहीं।

(ग) 'नभ में पाँती-बँधे बगुलों की पाँखें' - कवि की आँखों को चुराकर लिए जा रही है - कथन को स्पष्ट कीजिए। **3 Marks**

उत्तर:

- प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण।
- पंछी और पर्यावरण की खूबसूरती की अनुभूति की अभिव्यक्ति।
- कवि की भावनाओं का सुंदरता में विलय।

11. नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: **2×4=8 Marks**

उस बल को नाम जो दो, पर वह निश्चय उस तल की वस्तु नहीं है जहाँ पर संसारी वैभव फलता-फूलता है। वह कुछ अपर जाति का तत्व है। लोग स्पिरिचुअल कहते हैं; आत्मिक धार्मिक, नैतिक कहते हैं; मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों में अंतर देखें और प्रतिपादन करूं। मुझे शब्द से सरोकार नहीं। मैं विद्वान नहीं कि शब्दों पर अटकूँ। लेकिन इतना तो है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। बल्कि यदि उस बल को सच्चा बल मानकर बात की जाए, तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रभावित होती है। निर्बल ही धन की ओर झुकता है। वह अबलता है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है।

(क) 'अपर जाति का तत्व' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर:

- अभिजात वर्ग को।
- संसार का वैभव, वस्तु प्राप्त कर भी अतृप्ति।

- संचय की तृष्णा।

(ख) लेखक ने अबलता किसे माना है?

उत्तर:

- संचय की तृष्णा।
- वैभव की चाह।
- धन की ओर झुकाव।
- संतोष न होना-अबलता।

(ग) 'निर्बल ही धन की ओर झुकता है।' - आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: जिस मनुष्य में आत्मिक शक्ति की कमी होती है, वह निर्बल है और वही संतोष के अभाव में पैसे की ओर झुकता है।

(घ) 'बटोर रखने की स्पृहा' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

- लालची और अतृप्त होना।
- सब कुछ प्राप्त करने की चाह।
- आवश्यकता से अधिक प्राप्त करने की इच्छा।

अथवा

पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावत: ईष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना-उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख

लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय, लछिमन अब आई' की अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गई। पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था।

(क) विमाता ने भक्तिन को उसके पिता की मृत्यु का समाचार देर से क्यों भेजा?

उत्तर:

- विमाता भक्तिन से ईर्ष्या करती थी।
- उसे भय था कि उसका पति उसकी संपत्ति में से भक्तिन को कुछ भी नहीं देगा।

(ख) भक्तिन के प्रति सास का अप्रत्याशित अनुग्रह क्या था?

उत्तर:

- पिता के देहांत की सूचना छिपा कर मायके भेजना।
- पहना-ओढ़ा कर तैयार कर उत्साह से भेजना।

(ग) उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए' - आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

सास द्वारा मायके भेजने पर उत्साहित, खुशी, पिता की मृत्यु की सूचना नहीं।

गाँव पहुँचते ही लोगों के द्वारा सहानुभूति की ध्वनि सुन कर दुखी होना, उत्साह ठंडा हो जाना।

(घ) "पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था।' - पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

पिता की मृत्यु हो गई थी।

विमाता की सहानुभूति न मिली।

आदर-सत्कार मायके में न मिलना।

भक्तिन को उलाहना मिलना।

12. नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(क) भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं - पठित पाठ के आधार पर कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। **3 Marks**

उत्तर:

भक्तिन गुण-अवगुण से अछूती नहीं।

सरल स्वभाव, मेहनती, दृढ़ता।

धन को ऐसे संजोती कि ऐसी विशेषता दुर्लभ।

लेखिका के लिए झूठ बोलने से परहेज़ नहीं, देहातिन की तरह रहना इत्यादि।

(ख) 'बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है - 'बाज़ार दर्शन' के आधार पर आशय स्पष्ट कीजिए। **3 Marks**

उत्तर:

बाजार उसके लिए सार्थक जो क्या खरीदना है, वह जानता है।

खरीदने वालों की चाहत से ही बाजार की उपयोगिता पर्चेजिंग पावर वाले बाजार के महत्व का सत्यानाश कर, उसे विनाशक बना देते हैं।

(ग) 'काले मेघा पानी दे पाठ लोक-विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का चित्रण है - कैसे? **3 Marks**

उत्तर:

भारतीय समाज में लोक विश्वास व्याप्त।

लोक-विश्वास तथा विज्ञान के बीच द्वंद्व।

विज्ञान द्वारा सुख-सुविधा की चाहत, विज्ञान के सिद्धांतों को आत्मसात नहीं करना।

सांस्कृतिक एवं पारंपरिक मूल्यों की अवहेलना।

लेखक विज्ञान के साथ जबकि जीजी लोक-विश्वास के साथ।

(घ) लुट्टन सिंह पहलवान की कीर्ति दूर-दूर तक कैसे फैल गई? 3 Marks

उत्तर:

श्याम नगर दंगल में जब चाँद सिंह को पछाड़ा।

राजा साहेब द्वारा पुरस्कार तथा राज-दरबार का पहलवान घोषित।

चारों तरफ चर्चा।

(ङ) लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा जैसे उद्गार किस सामाजिक यथार्थ का संकेत करते हैं? 3 Marks

उत्तर:

विस्थापन का दर्द जीवन भर चलता है।

राजनीतिक रेखाओं को भावनाएँ स्वीकार नहीं करतीं।

यथार्थ परिस्थितिवश आरोपित।

पुरानी जगहों से लगाव।

13. 'जूझ' कहानी में निहित जीवन मूल्यों की सोदाहरण चर्चा कीजिए। 5 Marks

उत्तर: 'जूझ' का अर्थ है-संघर्ष। इसमें कथा नायक आनंद ने पाठशाला जाने के लिए संघर्ष किया। यह एक किशोर के देखे और भोगे हुए गाँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ व परिवेश को

विश्वसनीय ढंग से व्यक्त करता है। इसके अतिरिक्त, आनंद की माँ भी अपने स्तर पर संघर्ष करती है। लेखक के संघर्ष में उसकी माँ, देसाई सरकार, मराठी व गणित के अध्यापक ने सहयोग दिया। अत: यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है। इस कहानी के कथानायक में संघर्ष की प्रवृत्ति है। उसका पिता उसको पाठशाला जाने से मना कर देता है। इसके बावजूद, कथा नायक माँ को पक्ष में करके देसाई सरकार की सहायता लेता है। वह दादा व देसाई सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखता है तथा अपने ऊपर लगे आरोपों का उत्तर देता है। आगे बढ़ने के लिए वह हर तरहर की कठिन शर्तों को मानता है। पाठशाला में भी वह नए माहौल में ढलने, कविता रचने आदि के लिए संघर्ष करता है। इस प्रकार यह शीर्षक कथा-नायक की केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है।

14. नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(क) 'जूझ का कथानायक किशोर छात्रों के लिए एक आदर्श प्रेरणास्रोत है - कहानी के आधार पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए। **5 Marks**

उत्तर: 'जूझ' शीर्षक मेंकथा नायक की संघर्षमयी प्रवृत्ति का बोध होता है। दादा द्वारा पाठशाला से रोक लेने के बाद वह चुप नहीं बैठता। दादा व देसाई सरकार के सामने जिस दृढ़ता से अपनी बात को रखता है और दादा को आश्वस्त करता है और अपने ऊपर लगे आरोपों का जवाब देता है, उससे नायक की जुझारू प्रवृत्ति का बोध होता है। पाठशाला की विपरीत परिस्थितियों का मुकाबला करने में भी उसे जूझना पड़ता है। लग्न व परिश्रम के कारण मानीटर के बराबर सम्मान पाने लगा तथा स्वयं कविता लिखने लगा। यह नायक की जूझ का ही परिणाम है जो अवश्य ही नौजवानों के लिए प्रेरणादायक है।

(ख) औरतों को बहादुर सिपाहियों से ज्यादा संघर्ष करने वाली क्यों बताया गया है? 'डायरी के पन्ने पाठ के आधार पर लिखिए। **5 Marks**

उत्तर: ऐन ने 'मौत के खिलाफ मनुष्य' नाम की किताब में पढ़ा था कि आमतौर पर युद्ध में लड़ने वाले वीर को जितनी तकलीफ, पीड़ा, बीमारी और यंत्रणा से गुजरना पड़ता है, उससे कहीं अधिक तकलीफें औरतें बच्चे को जन्म देते झेलती हैं और इन सारी तकलीफों से गुजरने के बाद उसे पुरस्कार क्या मिलता है? जब बच्चा जनने के बाद उसका शरीर अपना आकर्षण खो देता है तो उसे एक तरफ धकिया दिया जाता है, उसके बच्चे उसे छोड़ देते हैं और उसका

सौंदर्य उससे विदा ले लेता है। औरत ही तो है जो मानव जाति की निरंतरता को बनाए रखने के लिए इतनी तकलीफों से गुजरती है और संघर्ष करती है, बहुत अधिक मज़बूत और बहादुर सिपाहियों से भी ज्यादा मेहनत करके खटती है। वह जितना संघर्ष करती है, उतना तो बड़ी-बड़ी डींगें हाँकने वाले ये सारे सिपाही मिलकर भी नहीं करते।

(ग) यशोधर बाबू में नये और पुराने का द्वंद्व है - उदाहरण देकर प्रतिपादित कीजिए।

5 Marks

उत्तर: यशोधर बाबू के बारे में हमारी यही धारणा बनती है कि यशोधर बाबू में एक तरह का द्वंद्व है जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता है पर पुराना छोड़ता नहीं, इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है। यद्यपि वे सिद्धांतवादी हैं तथापि व्यावहारिक पक्ष भी उन्हें अच्छी तरह मालूम है। लेकिन सिद्धांत और व्यवहार के इस द्वंद्व में यशोधर बाबू कुछ भी निर्णय लेने में असमर्थ हैं। उन्हें कई बार तो पत्नी और बच्चों का व्यवहार अच्छा लगता है तो कभी अपने सिद्धांत। इस द्वंद्व के साथ जीने के लिए मजबूर हैं। उनका दफ्तरी जीवन जहाँ सिद्धांतवादी है वहीं पारिवारिक जीवन व्यवहारवादी। दोनों में सामंजस्य बिठा पाना उनके लिए लगभग असंभव है। इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है।